# अथसम्यक्ज्ञानदीपकाप्रारंभः

सम्यक्ज्ञानदीपका



दृष्टांत जैसे दीपक ज्योतीके प्रकासमें कोई इच्छा प्रमाण पाप अपराध काम कुशील वा दान पूजा व्रतशीलादिक करो अर्थात् जेता संसार और संसारहीसें तन्मयि येह संसारका शुभाशुभ काम क्रिया कर्म और इनसर्वका फलहैसो दीपकज्योतिकूं बी लागने नाही अर दीपकज्योतिसें दीपज्योतीका प्रकास तन्मयिहै ताकूंबी जन्म मरणादिक पाप पुन्य संसार लागते नाही· तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान मयि परम ब्रह्म परमातमा सदाकाल जागती ज्योति है सो न मरती नजनमती न छोटी न मोटी· ननास्ति न अस्ति नइहां नउहां नउसकूं पापलागे नउसकूं पुन्य लागे· न वाज्योती बोलती न चलती नहलती संसार उसज्योतिके भीतर बाहिर अरु मध्य नही· बहुरि तैसेंहि सोज्योति है· सोवी संसारके भीतर बाहिर मध्य नाही· जैसें लवण खंडजल नीरमें गल जातेहै तैसे किसीकूं जन्म मरणादिक संसारसें दुःखसे अलग होणेकी इच्छा हो य वा सदाकाल जागती जोति सें मिलणेकी इच्छा होय सो प्रथम सतगुरु आज्ञा प्रमाण इस सम्यक्ज्ञान दीपिका नाम की पुस्तगहै ताकूं आदिसे अंतपर्यंत पढो मनन करो·

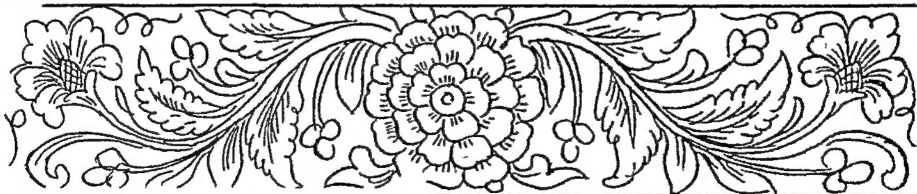
# प्रस्तावना

इस पुस्तगमे प्रथम येह प्रस्तावना तदनंतर इस पुस्तगकी भूमिका प
श्चात् पुस्तग प्रारंभ तदनंतर चित्रद्वार पुनः चित्र हस्तांगुलीचक्र निर्वि
कल्प शुक्लध्यानका सूचक पश्चात् ज्ञानावर्णीकर्मचित्र तदनंतर दर्श
णावर्णीचित्र पश्चात् वेदनी बहुरि मोहनी तदनंतर आयु बहुरि नाम
अर गोत्र पश्चात् अंतरायकर्म तदनंतर दृष्टांत समाधान ताहीमे ये
कप्रश्न आत्मा कैसाहै कैसे पाइये इसीके ऊपर दृष्टांत संग्रह तदनंतर
दृष्टांत चित्र· पश्चात् आकिंचन भावना बहुरि भेदज्ञान करिके ग्रंथये
ह समाप्तकीयाहै इसग्रंथमे केवल स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानानुभव सू
चक शब्द बिवर्णहै कोह दृष्टांतमे तर्क करेगो के सूर्यमे प्रकाश कहां
सै आये ताकूं स्वसम्यक् ज्ञानानुभव इस ग्रंथ को सार ताको लाभ नहीं हो

यगो जैसे जैन वैस्नु शिवादिक मतवाले परस्पर लडते है वैर बिरोध क
रतेहै मतपक्षमै मग्नहुये मोह ममता माया मानकूं नो छोडते नाहीं॰
तैसे इस पुस्तगमै वैर बिरोधको बचन नाहीं परंतु जिस अवस्थामै स्व
सम्यकूज्ञानसूतोहै ताअवस्थामे तन मन धन बचनादिकसै तन्मयीये
ह जगत संसार जागतोहै वहुरि जिस अवस्थामै येह जगत संसार सू
तोहै ताअवस्थामै स्वसम्यकूज्ञान जागतोहै येह बिरोधतो अनादि अ-
चलहै सो तो हमसै तुमसै इससैं उससै नमिटे नमिटैगा नमिटाया
स्तगजैन वैस्नु आदिक सर्वहीके पढणेजोग्यहै किसी वैस्नूकों इस
पढणेसैं भ्रांति होवेके येह पुस्तग जैनोक्तहै ताकूं कहताहूं के इस पुस्त-
गकी भूमिकाके प्रथमारंभमे जो मंत्र नमस्कारहै ताकूं पदिकारिके भ्रांतिसै
भिन्न होणा स्वभाव सूचक जैन वैस्नुआदिक आचार्यके रचे हुये संस्कृत
अबंध गाथाबंध ग्रंथ बहुतहै परंतु येहबी येक छोटीसी अपूर्व वस्तु है जैसे

गुडखायेसे मिष्टानुभव होताहै तैसे इस पुस्तगकूं आद्य अंत पूर्णपठणेसैं पूर्णानुभव होवैगा बिनदेखे बिनसमजे वस्तुकूं औरसे और समजताहैसो मूर्खहै जिसकूं परमातमाकोनाम प्रियहै उसकूं येह ग्रंथ जरूर प्रिय होवैगो इसग्रंथकोसार ऐसो लेणो केसम्यक् ज्ञानमयी गुणीका गुणसें सर्वथा प्रकार भिन्नहै सोही औगुणताकूं त्यजकरिकै स्वभावज्ञान गुण ग्रहण करणा पश्चात् गुणकूं बी छोडकरिकै गुणी कूं ग्रहण करणा तदनंतर गुणगुणीका भेद कल्पनासे सर्वथा प्रकार भिन्न होयकरि आपका आपमे आपमयी स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयी स्वभाव वस्तुसें सूर्यप्रकाशवत् मिलकरिकै रहणा येही औगुण त्यजणेका स्वभावगुणसे तन्मयी रहणेका इसग्रंथमे कह्याहै १ जैसै दीपकज्योतिका प्रकाशमे कोहू पापकरो और कोहू पुन्यकरो तिस पापपुन्यका फल स्वर्ग नरकादि कबी तिस दीपकज्योतिकूं लगते नाहीं अर पाप पुन्य बी लागते नाही तैसेही

इस सम्यक् ज्ञानदीपका पुस्तकके पढणे वाचणे वा उपदेस देणेके-
द्वारा किसीकूं आपका आपमैं आपमांयि स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानानु-
भवकी अचल परमावगादता होवैगी तिसकूं पाप पुन्य जन्म मरणसं
सारका स्पर्श न पहूचै उस्कूं कुछबी शुभाशुभ नलागै येह निश्चय
है॥२॥ इतिप्रस्तावना॰



ॐतत्सत्परमब्रह्मपरमात्मनेनमः॥ ॥अथसम्यक्ज्ञानदीपकाकी भूमिकाप्रारंभः॥ ॥भूमिका हम तुम येह वह येह ४

ताके प्रथम निश्चयंकोईहै सोही मूल अखंडित अविनाशी अचल स्व स्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तू भूमिकाहै जैसे लक्षयोजन प्रमाण येह वलियाकार जंबूद्वीपकी भूमिकाहै।

कामे कोईयेक अणुरेणु वा राई डालदे तब अल्पदृष्टिवानकूं येह भाष होवैके इस जंबुद्वीप भूमिमे नहीजाणवामे आवे के वाहा येक अणु रेणु राई किदर कहांपडीहै तैसेही येह ३४३ तीनसें तेतालीस राजू प्र माण तीनलोक पुरुषाकारहै सो बहुरि अलोकाकाशहै सो कैसोहै काकाशजाकेभीतरयेह तीनलोक ब्रह्मांडहै परंतु ऐसा अनंत ब्रह्मांड औरभी होयतो जिस अलोकाकाशमे अणुरेणुवत् होयके समाय वै ऐसायेह लोकालोक वा अनंत ब्रह्मांड तिस स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य

सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु भूमिकामै येक अणरेणु वत् नहीजाणै
किदर कहां पडे है वास्ते निश्चय समजो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्
ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु है सो निश्चय भूमिका है जैसे सूर्यका प्रकास पृ
थ्वीकेऊपर तन्मयीवत् सर्वत्र प्रसरण होरह्याहै तामै येक अणरेणु न
हीजाणै किदर कहां पडे है तैसे ही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
नमयि सूर्यका प्रकासमे येह लोकालोक अणुरेणवत् नहीं जाणै किद
र कहां पडे है सोही त्रैलोकसार ग्रंथमे श्रीमत् नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती
कहीहै छीयालीस ४६ चालीस ४० और ३४ चोतीस २८ अठाईस २२
बाईस १६ सोला १० दश १९ उन्नीस साढेबत्तलाई ३७॥ साढेसैतीस
१६॥ साढेसोले २६॥ साढेसोले भणी आगेदो दो हीन १४॥ । १२॥ अंत
११ ग्यारे राजूगणी इम ७ साननर्क ८ जुगल ऊपर २६ सो लेथानमे
३४३ तेतालीसतीनसै धनाकारकीत्यो ज्ञानमे १ अब

ज्ञनमिन्नीहो श्रवणकरो जैसैयेह लोकालोकहै सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य-
सम्यग्ज्ञानमाये भूमिकामेहै परंतु सम्यक्ज्ञानमयि भूमिकासे तन्मयीना
हो तैसैही मे तूं येह वह येह ४ चारवो तन्मयीनाहीं वास्ते अणहोणोसो-
मैक्षुल्लक ब्रह्मचारी धर्मदास वणि कारिके येह पुस्तग सम्यक्ज्ञानदीपका
इस नामकी वणाईहै इसपुस्तगमै भूमिकासहित द्वादशस्थलभेदहै तामै
प्रथमतो मिथ्याभ्रमजाल संसारसे सर्वथाप्रकार भिन्न होणेके अर्थ येह
भूमिका येकाग्रहमनलगाय कारिके पढो १ बहुरिपश्चात् चित्रद्वार देखो-
अर ताका बिवर्णपढो द्वारहीकूं आपना स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
नमयि स्वभाव बस्तु मानि समजो मतिमान् मतिकहो २ बहुरितीजास्वस्व
रूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यबस्तु स्वभावमेजैसाहै तै
साहै स्वभावमै तर्कको वासंकल्पविकल्पको अभावहै ताहीके प्रकाशमे ति
सहीकूं परस्पर विरुद्ध चित्र हस्तांगुली सूचकहै मानैहै कहतेहै सो सम्यक्

है तोबी नीचगोत्र उंचगोत्रसे तन्मायि होय नही कर्ताहै १० एकादशम-
स्थल अंतरायकर्म ताकाद्रष्टांत जैसे राजा भंडारीकूं कहीके इसकूं सह
स्त्र रुपियादे परंतु भंडारी नहींदेताहै तैसेही स्वभावद्रष्टीरहितजीवइ-
च्छातो कर्ताहैके मै दान देऊ लाभलेऊ भोगभोगू उपभोगभोगू पराक्रमक
र्मे बलवीर्य प्रगट करूं इत्यादिक इच्छातो कर्ताहै परंतु अंतरायकर्म इ-
च्छानुसार पूर्णता नही होणे देताहै ऐसा अंतरायविघ्न श्रीसतगुरूके चर
णकी सरण होणेसे मिटेगा ११ द्वादशस्थल मै यह हैके किसी कूं गुरूप
देशात् स्वस्वरूपको स्वानुभव हुये पश्चात् बी यह भ्रांति होतीहैके मै अजर
अमर अविनासी अचलज्ञानज्योति नहीं अथवाहूं तो कैसेहूं मेरा अर स-
दाकालजागतीजोति ज्ञानमयि सिद्ध परमेष्ठीकाये कपणाकैसेहै तथा
सापुन्यसुभकार्य करणेसे मेरा अर परमातमाका अचलमेल
मै मरताहूं जन्मताहूं दुःखी रोगी सोगी लोभी क्रोधी कामीहूं अरज्ञानम-

यि परमात्मा तो न मरता न जनमता न रोगी न सोगी न लोभी न मोही न क्रोधी
न कामी फेर उनका मेरा मेल कैसा कैसे है कैसे होवैगा इत्यादिके भ्रांति
द्वारा कोई जीव आपकूं नित्य सिद्ध परमेष्टी ज्ञानमयिसे भिन्न समजता है मा
नता है कहता है ताकी येकता तन्मयि ताकी सिद्धिके अवगाढताके दृढता
के अर्थ अनेक दृष्टांत द्वारा समाधान देउंगा सोही कोई मुमुक्षु इस सम्य
क्ज्ञानदीपका पुस्तगकूं आदिसें अंतपर्यंत भले भावसे पढकरिके आप
का स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूकूं प्रथमतो अशु
भ जो पाप अपराध हिंसा चोरी काम क्रोध लोभ मोह कषायादिकसे सर्वथा
प्रकार भिन्न समज करिके पश्चात् दान पूजा व्रत शील जप तप ध्यानादिक
शुभकर्म क्रिया है ताकूं बी सुवर्णश्रृंकलावत् बंध दुःखको कारण समज
करिके आपका आपसे आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञा
न स्वभाव वस्तूकूं दान पूजादिक शुभकर्म क्रियासे सर्वथा प्रकार भिन्न स

मजकरिके पश्चात् शब्दसेंबी आपकूं भिन्नसमज करिकै आगै अनिर्व-
चनय आपका आपमै आपमयि जैसाका तैसा निरंतर जैसाहै तैसासो
कासोही आदि अंत पूरण स्वभावसंयुक्त रहणा बहुरि ऊपर हमलि-
खीहैके शभ अशभ शुद्ध येह तीनहै इस तीनूकी विस्तीर्णता पूर्णता·
प्रथम मिथ्यात्वगुणस्थानसै लेकरिके अंतका चतुर्दशगुणस्थानजो
जोग केवली ताहां पर्यंत समजणा आगै स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य
कज्ञानमयि स्वभावमै येह शुभअशुभ बहुरि शुद्धादिक संकल्प विकल्प
तर्क वितर्क विधि निषेध कदापि नसंभवे अर्थात् स्वभावमे तर्कको अभा
वहै· हे मुमुक्ष जीवमंडलीहो चेतनरो तुम कहांसे आयेहो कहांजावो·
गे कहां तुमहो क्याहो कैसाहो कोणतुमाराहै किसका तुमहो बहुरि ये
ह शभाशभ शुद्धयेह तीनसै तुमारा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
नमयि स्वभाव वस्तुकूं येक तन्मयि मतिसमजो मतिमानू मतिकहो येह

अशुभादिक तीनू सम्यक्ज्ञान स्वभावमे त्याजहीहै जिस भूमिमे यह लो
कालोक अणुरेणुवत् नहीजाणे किदर कहां पडेहै चलाचल रहित ऐसी
भूमिकासे सर्वथाप्रकार भिन्नतुमारा तुमसेसदाकाल तन्मायिस्वस्वरूप
स्वानुभवगम्यसम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु स्वरूप समजो मनके द्वारा-
मानू जैसेदीपककूं देखणेसे दीपककीनिश्चयता अवगाढता अचल-
ताहोतीहै तैसेही इस सम्यक्ज्ञान दीपका के पढणे वाचणेसे जरूर
निश्चय ब्रह्मज्ञानकी मातकी प्राप्ति होवेगी तथासम्यक्त्वकी मातकी प्रा
प्ति निश्चयता अवगाढता अचलता होवेगी देखो श्रवणकरो जैनाचार्य
जैनग्रंथमे कहीहैके सम्यक्त्वबिना जपतपनेम व्रत शील दान पूजादि
क शुभकर्म शुभभावादिक वृथा तुषखंडनतहै बहुरि वेदमेबी कही
हैके ब्रह्मजानाति ब्राह्मणा अर्थात् ब्रह्मकूंतोजाणतेनाही अरसंध्या
तर्पण गायत्रीमंत्रादिक का पढणा आदि साधु सन्यासी भेषधारणाप

यंत वृथाहै सर्वसारकोसार सदा कालज्ञानमाथि जागती ज्योतिका लाभ की जिसकूं इच्छा होय तथा जन्म मरणादिक बज्रदुःखसें सर्वथा प्रकार भिन्न होणेकी जिसकूं इच्छा होय सो प्रथम गुरु आज्ञा लेकरिके इसपु स्तगकूं आदिसें अंतपर्यंत पढो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानम स्वभाव वस्तुकी प्राप्तकी प्राप्तिके अर्थ हमइस पुस्तगमें अशुभ शुभ शुद्ध येह तीन का निषेध लिख्याहै सोतो पुद्गल द्रव्य धर्मद्रव्य अधर्म द्रव्य आकाशद्रव्य कालद्रव्य येह पांच द्रव्यसें तन्माथि आस्ति समजणा बहुरि कोई अशुभसें येकता आपका स्वरूप ज्ञानकी मानताहै समजताहै कहताहै सोबी मिथ्यादृष्टी बहुरि अशुभकूं खोटा बुरा समज करिकेजपतपव्रत शील दानपूजादिक शुभसें आपका स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञान स्वभावकी येकता समजताहै मानताहै कहताहै सोबी मिथ्यादृष्टी है बहुरि शुभअशुभदोहु कूं अर अपणा स्वभाव सम्यक्ज्ञानकूं येकतन्म

यिसमजताहै सोबीमिथ्याद्रष्टिहै बहुरि किसी कूंयेह बिचारभावहैके शुभाशुभसे भिन्नमैशुद्ध हूं ऐसी बिकल्पसे आपकास्वस्वरूप स्वानुभवग म्यसम्यक्ज्ञानमयिस्वभावकूंयेक तन्मयि समजताहै मानताहै कहताहै सोबीस्वभाव पूर्णदृष्टिरहित समजणा स्वभावसम्यक्ज्ञान दृष्टियानको ई पंडित होगो सोतोइस पुस्तगकी अशुद्धता पुनरुक्तिदोष कदाचित् कोई प्रकारबी ग्रहण नहि करेगा बहुरि न्याय व्याकर्ण तर्क छंद कोसअ लंकारादि शब्दशास्त्रसे अपणा स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञान स्वभावकूं अग्नि उष्ण तावत् एकतन्मयि समजताहै मानताहै कहताहै ऐसा पंडि तजरूर इसग्रंथकी अशुद्धता पुनरुक्तिदोष ग्रहण करेगा बहुरि ज्यो स्वयंसिद्ध परमातमा अष्टकरम तथाद्रव्यकर्म भावकर्मनोकर्मरहित अखंड अविनाशि अचलसे सूर्य प्रकाशवत् एकतन्मयि वस्तुहै उसीव स्तुका लाभ वा मातकी प्राप्ति होयेजोगथी सो हमकूंहुई॥ ॥दूहा

होणीथीसोहोगई अबहोणैकीनाहि॥ धर्मदासक्षुल्लककहै इ-
सीजगतके मांहि॥१॥ अर्थात् जैसैदीपकसैदीपकचेतता आयाहै
तैसैही गुरुउपदेशद्वारा ज्ञानहोता आयाहै एबातो अनादिहै सद्भू
त व्यवहारमे ज्योकोऊ गुरुकेबचन द्वारा स्वस्वरूपस्वानुभवगम्य सम्यक
ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुकी प्रापकी प्राप्तिहुये पश्चात् ऐसा अपूर्व
को लोपकरिके गुरुको नाम प्रसिद्ध नही कर्ताहै गुरुकी कीर्ति बडाई
जस गुणानुवाद नही कर्ताहै सो म्हापातगी पापी अपराधि मिथ्याद्र
ष्टि हत्यारोहै अर्थात् गुरुपदको कदाचित कोई प्रकारबी गुप्तरख-
णा श्रेष्ठनही सोही मैकेद्वारा मै सत्य कहताहूं मेरा सरीरको नाम क्षुल्ल
क ब्रह्मचारी धर्मदासहै वर्तमानकालमें सोहीमे कहताहूं श्रवण क-
रो मालवादेश मुकाम झालरापाटणमे नग्न दिगंबर श्रीमत् सिद्धसेण-
मुनिनामेंकूं दीक्षा सीक्षा ब्रत नेम व्यवहार भेषका दाता गुरुहै बहुरि ब-

राडदेश मुकाम कारंजा पट्टाधीश श्रीमत् देवेंद्र कीर्तिजी भट्टारकजी का
उपदेश द्वारा मेरे कूं स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव व-
स्तु की प्राप्तकी प्राप्ति देणेवाले श्रीसतगुरु देवेंद्रकीर्तिजी है वास्ते मै मु
कूं बंध मोक्ष सै सर्वथा प्रकार बर्जित सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव बस्तु हूं
सो ही स्वभाव वस्तु शब्द बचन द्वारा श्री मत् देवेंद्र कीर्ति तत्पट्टे रत्नकीर्ति
जी के मैं भेट अर्पण कर चूक्यो हूं बहुरि खानदेश मुकाम पारोला मै सेठ
नानासहा तत्पुत्र पीतांबर दासजी आदि बहुतसे स्त्री पुरुष कूं अर आ-
रा पटणा छपरा बाढ फलटण झालरापाटण बऱ्हानपुर आदि बहुतसे
सहर ग्रामोंमै बहुतसे स्त्री पुरुषां कूं स्वभाव सम्यक् ज्ञान को उपदेश दे
चुक्यो हूं ऊपर लिखे हुये सर्व व्यवहार गर्भित समजणा बहुरि सर्व जीव रा
शि जिस स्वभाव से तन्मयि है उसही स्वभावता की स्वभावना सर्व ही जी-
वराशि कूं होहू ऐसी मेरा अंतःकरणमै इच्छा हुई है तिस इच्छा का समा

धानके अर्थ येह पुस्तग बणाईहै बणाय करिके पांचसै पुस्तग येह छपाईहै ५०० पांचसै पुस्तग प्रसूत होणेकी सहायताके अर्थ रूपीया येकसो १०० तो जिल्हा आराबाद मुकाम आरामे मखनलालजीकी कोठीमे बाबू बिमलदासजीकी विधवा सोकीसोही अर हमारी चेली द्रोपतीदेवीहै विशेष खर्चाके अर्थ ज्योज्यो मेरा वचनोपदेश द्वारा स्वस्वरूप·

स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु होणेजोग होचुके ते सदा काल अखंड अविनासी चिरंजीव रहो इति सम्यक्ज्ञान दीपका की· प्रथम भूमिका समाप्तः ॥१॥ ॥ ॥प्रश्न॥ ॥जिनेंद्र कोणहै ॥उत्तर॥ ॥ज्ञानभानुजिनेंद्रहै प्रश्न जिनेंद्रकी पूजा करणाके नाही करणा उत्तर पूजाकरणा परंतु सम्यक्ज्ञान वस्तु है सोही जिनेंद्र है ज्ञान वस्तुकूं कोई जिनेंद्र मानताहै समजताहै कहताहै सो मिथ्याद्रष्टी· है प्रश्न ज्ञानकोणहै उत्तर तनमनधन वचनकूं बहारे तनमनधन

बचनकाजेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मकूं अनादहीसें सहज स्वभा
वहीसे जाणनाहे सोही ज्ञानहे प्रश्न मंदिरमे पद्मासण षड्गासण धा
तु पाषाणकी मूर्तिहे सास्त्र बहुरि जलचंदनादिक अष्टद्रव्य मंदिर आदि
येह सर्व ज्ञानहे के अज्ञानहे उत्तर मंदिर प्रतिमादिक अज्ञानहे इनस
र्वकूं केवल जाणनाहे सोही ज्ञानहे प्रश्न केवलज्ञानहे सो शुभाशुभ
दान पूजा क्रिया कर्म कर्ताहे के नाही कर्ताहे उत्तर केवल ज्ञानहे सो किंचि
तमात्रबी शुभाशुभ दान पूजा क्रिया कर्म नही कर्ताहे केवल जाणताही
हे प्रश्न तोयेह शुभाशुभ कोण कर्ताहे निश्चय नयात् जिसका जोही
कर्ताहे व्यवहार नयात् शुभाशुभ कर्मसे अतर् स्वरूप आतन्मायि होय
करिके ज्ञान कर्ताहे १ क्या करूं कहतां लाजसरम उपजतीहे तथापिक
हताहूं जैसे सूर्यसें कदापि प्रकास नभिन्न हुवो नहोवेगो नभिन्नहे तेसे
जिससें देखणा जाणना कदापि भिन्ननाही नभिन्न होवेगा नभिन्नहे ऐ

सा केवल ज्ञानमायि परमातमासे येक नेत्र कटि मकारामात्र वा समय कालमात्र वी कोई जीव भिन्न रहता है सोजीव संसारी मिथ्याद्रष्टी पात जैसे सूर्यसे अंधकार अलग है तदवत् ज्ञानस्वरूपि जिनेंद्रसे आ अलग समज करिके फेर धातु पाषाणकी देवमूर्तिका दर्शण पूजादि क कर्ता है सो मूर्ख मिथ्याद्रष्टी है बहुरि जैसे सूर्यसे प्रकास तन्मायि है तैसे ज्ञानस्वरूपी जिनेंद्रसें गुरूपदेशात् तन्मायि होय करिके फेर धातु पाषाण की मूर्तिका दर्शण पूजादिक कर्ता है सो सम्यक्द्रष्टी धन्यवाद योग है १ हे मेरा मंत्रीहो दानपूजा व्रत शील जप तपनेमादिक शुभकर्म क्रिया भाव करो बहुरि अशुभ जो पाप अपराध झूठ चोरी काम कुशील वी करो अर्थात् शुभाशुभ काम कर्म क्रिया इच्छा प्रमाण भलाई करो परंतु समज करिके करो लौकीक वचन प्रसिद्ध है क्याके देखो जी तुम समज करिके काम कार्य कर्ता तो नुकसाण बिगाड किसवास्ते होता बिना समजसे ये

है काम कार्य तुम कीया इस वास्ते नुकसाण हुवा बिनासमज तुम पूर्व अनंतबेर प्रतक्ष समोसरणमे केवली भगवानकी मोतीके अक्षत रत्नदीप कल्पवृक्ष पुष्पादिकसै पूजा करी बहुरि प्रतक्ष दिव्यध्वनी श्रवण करी बहुरि मुनीव्रतशील अनंतबेर धारण कीये अर काम क्रोध लोभादिक बी अनंतकालसे करते चले आये सो सर्व शुभाशुभ बिनसमजसे करते चले आयेहो देखो बिनसमजसैं कंठमे मोतीकी मालाहै अर भंडारमेखोजताहै बिनसमजसैही कस्तूर्यो मृग कस्तूरीकूं खोजताहै बिनसमज सैही आपहीकी छायाकूं भूत मानताहै बिन समजसैही नदीकाजल कूं शीघ्रवेगसैं वहना देख करिके आपहीकूं वहता मानताहै बिनसमज सैही काखमे छोकरा पुत्र अर गांव देसमे खोजताहै बिनसमजसैं हीसं सारी मिथ्याती बिषयभोग काम कुशीलको छोडते नाही अर दान पूजा व्रतशीलादिक छोड करिके आपकूं ज्ञानी मानतेहै कहतेहै .

ॐनमः ॥ ॥अथसम्यक्ज्ञानदीपका प्रारंभः॥ ॥
स्वरूपस्वानुभवसूचक श्लोक॥ ॥महावीरंनमस्कृत्य केवलज्ञान-
भास्करं॥ सम्यक्ज्ञानदीपस्य मया किंचित् प्रकाश्यते ॥१॥ ॥स्कं
दरिछंद॥ ॥अथअनादिअनंतजिनेश्वरम् सरससुंदरबोधमयि
परं॥परम मंगलदायकहैसही नमतहूंइसकारणसुभमही॥१॥ ॥
अथबचनिका॥ ॥मूलबस्तुदोयहै ज्ञान अज्ञान तामैजैसे सूर्यमै
प्रकाशगुणहै तैसे जिसबस्तुमे देखणेजाणनेका गुण स्वभावहीसेहै
सो बस्तुतो केवल ज्ञानहै बहुरि जिस बस्तुमे स्वभावहीसे देखणेजा
णनेका गुण नाहीं सोही अज्ञान बस्तुहै येह तन मनधन बचन शब्दा
दिक अज्ञानसे ऐसा मिलेहै जैसे काजलसे कलंक मिलरह्यो है बहुरि
जैसे केवलि ज्ञानमे देखणेजाणनेका गुणहै तैसे शब्दमे कहणे का-
गुणहै बहुरि ज्ञानवस्तु आपापरकू देखतहै जाणतहै सो

पकूंतो आपसे आप तन्मयि हो करिके जाणतहै बहुरि ज्ञानसै सर्वथा प्रकार भिन्नवस्तुहै ताकूं ज्ञानजाणताहै परंतु जड अज्ञान मयि वस्तु से तनमयि होकरिके नहीं जाणतहै बहुरि कहणेका गुण अज्ञान मयि शब्दहै तामैहै सोशब्द स्वपरकी वार्ता कहताहै परंतु स्वपरकूं जा णतानाहीं स्वसैतो तन्मयि हो करिके कहताहै बहुरि परसे अतन्मयि हो करिके कहताहै स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुहै ताका अर शब्दादिक अज्ञानवस्तुहै ताका परस्पर सूर्य अंधका रकासा अंतरभेद मूलहीसेहै तोवी शब्दहै सो परमात्मा ज्ञानमयि की वार्ता कहताहै॥ ॥अथप्रश्न॥ ॥शब्द अज्ञान वस्तुहै सो स म्यक् ज्ञानमयि परमात्माकूं जाणत नाहीं फेर सम्यक् ज्ञान मयि परमा त्माकी वार्ता कैसै कहताहै अथउत्तर जैसै कोई चंद्र दर्शणकोले भी किसीगुरू संगनसैनम्रता पूर्वक बूझी के चंद्र कहाहै तब गुरु कही

के वोचंद्रमा मेरी अंगुलीकेऊपर इहांबिचार करो शब्दांगुलीके अरचंद्र
के जेता अंतर भेदहै तेताहीभेद सम्यक् ज्ञानमयि परमात्माके अर शब्द
के समजणा इसप्रकार कहणेकागुणतो शब्दमैंहै वहुरि जाणवाका
गुण केवल ज्ञानमैंहै इति जैसैजिस नगरमै अज्ञानीराजाहै ताकेऊ
पर केवलज्ञानी राजा होसक्ताहै बहुरि जिस नगरमै केवल ज्ञानी रा
जाहै ताकेऊपर कोईबी अधिष्टाताराजाहोणा नसंभवै अब है केव
ल ज्ञान स्वरूपी सूर्य तूं मूलस्वभावहीसै जैसाको तैसो जैसो है तैसो
सोको सोहीहै तूं केवल ज्ञान मयि सूर्यहीहै तुं नस्कणताही श्रवण
करि तेरे करम भरम पुद्गलका बिकार काला पीला लाल धौला हरया
अनेक पाप पुन्यरूपी बादल बीजली आदि आड़ा आवैजावै तोबी·
तूं तेरे कूं केवल ज्ञान मयि सूर्यही समजमान तूं तेरे कूं केवल ज्ञान मयिसू
र्य नसमजेगा नमानैगा तो तेरे कूं तेराही घात करणे का पाप लागैगो आ

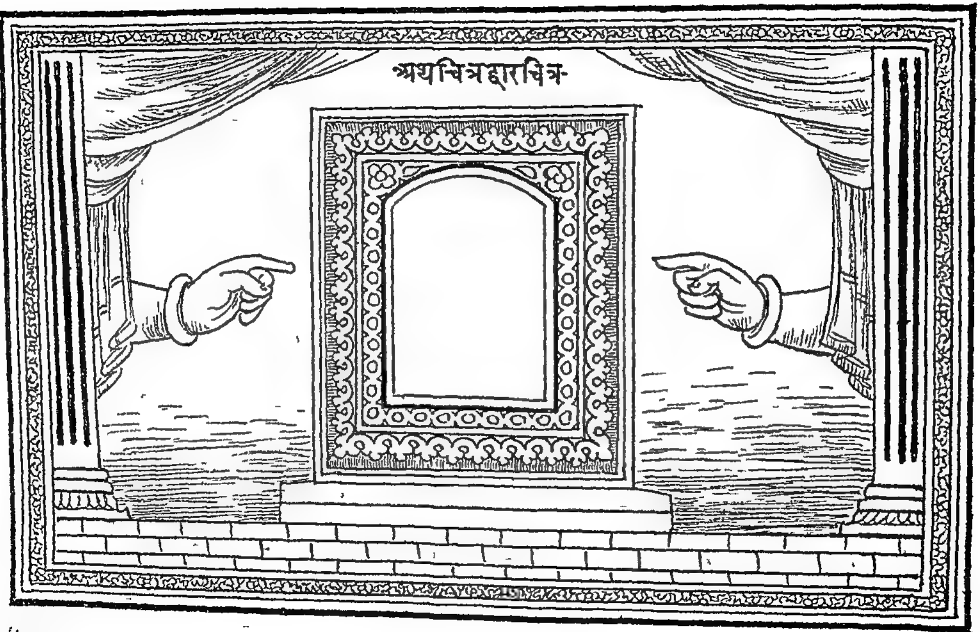
पघाती महापापी॥ ॥इतिश्रोताकृ वचन॥ ॥अथप्रश्न॥ ॥ हां हूं हूं
मैकेवलज्ञानमयि सूर्यतो निश्चयहूं परंतु मैतनमनधन वचनादिकसेंऐ
साभिन्नहूं जैसा अंधारासै सूर्यभिन्नहै तैसा फेरमै मेरेकूं केवल ज्ञानम
यि सूर्यकोण द्वारा होकरिकैसमजूं मानूं सोकहो अथउत्तर नस्कण
नाही अवणकरि आत्मख्याती ग्रंथमै कुंदकुंदाचार्य ग्रंथके प्रथमारंभ
मैही कहीहै जीवद्वार अजीवद्वार आस्रवद्वार संबरद्वार निर्जराद्वार
बंधद्वार मोक्षद्वार पापद्वार पुन्यद्वार सर्वविशुद्धीद्वार कर्त्ताद्वार कर्मद्वा
र येह द्वादशद्वारा तूं तेरेकूं निश्चय समज तथा हम तुम येह वह येह ४
च्यार द्वारा द्वार० होय करिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज या तन मन वचन
धनादिकके द्वारा तूं तेरेकूं निश्चय समज तथा पुद्गलतो आकार अरध
र्मोधर्म आकाशकालहै सोनीराकार वास्तै आकार नीराकारके द्वारा हो.
करिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज है और नही येह दोय द्वारा होकरिकै तूं ते

रेकूं निश्चय समज निश्चय व्यवहारके द्वारा होकरिके तूं तेरेकूं निश्चय
समज वा नाम स्थापना द्रव्य भाव येह ४ च्यारके द्वारा होकरिके तूं
रेकूं निश्चय समज तथा जन्म मरण सुख दुःख शुभाशुभ विचारके
द्वारा होकरिके तूं तेरेकूं निश्चय समज तथा संकल्प विकल्प
यके द्वारा होकरिके तूं तेरेकूं निश्चय समज २ वेद पुराण शास्त्र सूत्र
सिद्धांतके द्वारा होकरिके तूं तेरेकूं निश्चय समज तथा द्रव्य कर्म भाव
कर्म नो कर्म नो द्वारा होकरिके तूं तेरेकूं निश्चय समज पूर्वोक्त
विशेष समज गुरुके वचन द्वारा तूं तेरेकूं निश्चय समज और श्रवण करि
जैसे सूर्य प्रकाश येक मायहे तैसे पूर्वोक्त द्वारकूं और तूं तेरेकूं येक
समजेगो मानेगो तो आपघाती महापापी मिथ्यादृष्टी होवेगो और
ज्योकोई द्वारहीकूं अपणा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्व
भाव समजेगो मानेगो वो आपघाती महापापी मिथ्यादृष्टी हो रहेगो

जैसे येक बडे भारी नगरके अनेक द्वार सुंदर है इच्छा आवे कोई द्वारमैहो करिके सहरमे प्रवेश करो प्रवेश करणे वालो नगरमे पूगजावेगो विचार करणा सहरके भीतर महल मंदिर मकान है ताके द्वार सहस्त्र लक्षादि है अर सहरमे प्रवेश करणे वाला का शरीरमे दश द्वार तो प्रसिद्ध ही है विशेष रोमरोम प्रति छिद्र है वास्ते सहरमे प्रवेश करणे वाले के शरीर ही मैं लक्ष कोटादि द्वार है वास्ते पूर्वोक्त विचार द्वारा आदि अनंत संसार अपार संसारके द्वारा होकरिके अपणा आपमे आपमायि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान माधि स्वभाव वस्तु कूं अर पूर्वोक्त द्वारकूं अग्निउष्णतावत् सूर्य प्रकाशवत् येक मति समजो मति मानूं जैसे राज द्वार ऐसा कहणेसै येह भाव भाष होता है के जिस द्वारके भीतर होकरिके राजा आते है जाते है परंतु ऐसै न समजणा के राजा है सो ही द्वार है अर द्वार है सो ही राजा है केवल कहणे मात्र राज द्वार है अर्थात् द्वार है सो द्वार ही है अर राजा

हैसो राजाहीहै ऐसैही सर्वद्वार द्वारप्रति समज लेएगा जिसकाजोही द्वार·
है क्यूंकेसूर्यके देखणेसे सूर्यकी खबर होतीहै तैसैही जिसकूं
जिसहीकी खबर होतीहै येसर्व श्रणहोएगीसो युगती स्वस्वरूप स्वानु·
भवगम्य सम्यक्ज्ञान मयि स्वभाव वस्तुकी प्रातकी प्राप्ति के अर्थहम क·
रिहै औरबी स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाववस्तुसूचक
" तुमइस द्वारमे होकरिके आवोजावो अथवा असुकाद्वार·
" आवोजावो मोक्षद्वार जीवद्वार अजीवद्वार ध्यानद्वार इत्यादि·
होकरिके आवोजावो यदिनहि आवो नहीजावो तो तुम तुमारास्व·
स्वानुभवगम्यसम्यक्ज्ञानमयि स्वभावमे जैसाका तैसा जैसाहो तै
होसोही रहो हेसूर्य तूं तेरा प्रकाशगुण स्वभावकूं त्यागकरि
मध्यरात्रीका अंधारावत मति होएगा नहोएगा तैसैही
तेरागुण स्वभावसे निरंतर सदोदयहै सोको सोही

कदाचित् कोई प्रकारबी तूं तन मन धन बचन शब्दादिक वा पुद्गल धर्मा धर्माकाश कालादिक धन मतिहोएगा नहोएगा १ इतिचित्रद्वार विवर्णं युक्तिसंपूर्णं दोहू हस्तांगुली चित्रद्वारा परस्पर उपदेस रूप सूचहे ता को अनुभव ऐसैलेणा येहयेक द्वाराहै तामै येक कहताहै इसद्वारमै होकरिकै तुम इदरकी तरफ जावोगा तबतो तुमकूं जीव चेतन ज्ञानका लाभ होगा दूसरा कहताहै इस द्वारमै होकरिकै तुम इदरकी तरफजावोगातो तुमकूं अजीव अचेतन अज्ञान जडका लाभहोवैगा यदितुमहमारे कहणेसेजीवाजीव ज्ञानाज्ञानका लक्ष लक्षणजात्यादिक परस्पराभिन्नाभिन्न समज करिकै दुविधा हैततांकी विकल्पत्याग करिकै दोहू तरफ नहीजावोगेतो तुम तुमारा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयिस्वभावमै स्वभावहीसै जैसा का तैसा जेसाहै सोकासोही जहांके तहां चलाचलरहित रहोगे १


अथचित्रद्वारचित्र

ॐनमः॥ ॥अथवस्तुस्वभावविवर्णचित्रसहितलिख्यते॥ ॥ कौं
॥ ॥सम्यक्ज्ञानस्वभावमे लीनभयेजिनराज धर्मदासक्षुल्लककरें
नतीनिसिदिनसाज॥१॥ ॥अथवचनिका॥ ॥ मूलवस्तु २
एकज्ञान दूसरो अज्ञान बहुरि अज्ञान वस्तु पांचहै ५ पुद्गल धर्म अध
र्म आकाश काल येहपांच द्रव्यहै तामै पुद्गलतो मूर्ति आकारहै बाकी
४ च्यार द्रव्य अमूर्ति निराकारहै इनमै ज्ञानगुण नाही जीवभी
निराकारहै परंतु जैसे सूर्यमे प्रकाशगुणहै तैसे जीवमे ज्ञानगुणहै या
स्तेजीव वस्तु उत्तमहै परंतु जोजीव गुरुपदेशात् अपणा आपमे आप
मयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमायि स्वभाव वस्तू जाणगये
सोतोउत्तमहै पूज्यहै मान्यहै धन्यवादयोगहै बहुरि जैसे बकरी मंडलं
मैजन्मसमयसैही परवसात् सिंह रहताहै आपकूं सिंह स्वरूप नसमज
ताहै नमानताहै तैसैही जोजीव अनादि कर्म वसात् संसार कारागारमे

है सो अपणा आपमै आपमयि सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावगुण कूं तो जाणते नाहै मानते नाही अर अनादि कर्मबसात् आपकूं ऐसा मानत है के येह जन्म मरण नाम अनाम आकार निराकार तन मन धन बचन बिचार बुद्धि संकल्प विकल्प राग द्वेष मोह काम कर्म क्रोध मान माया लोभ पुन्यादिक है सोही मै हूं अर्थात् स्वरूप ज्ञान रहित है सो जीव तो है परंतु अशुद्ध संसारी जीव है अब येक दोय संख्या असंख्या एकांत एक अनेक द्वैताद्वैत आदिकसै सर्वथा प्रकार भिन्न एक स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु चलाचल रहित है बिसेष स्वानुभव आगै चित्र द्वारा लेणा साधारण अबी लेणा सर्व वस्तु पने स्वभावमै मग्न है कोई वस्तु बी अपणा स्वभाव गुणकूं उल्लंघन करिके परस्वभाव गुणकूं उल्लंघन करिके परस्वभाव गुण ग्रहण करते नाही वस्तु अपणा गुण स्वभाव छोडदे तो वस्तुका अभाव होय वस्तुका

वहोतेसंते आत्मा परमात्मा अरसंसार मोक्षादिक का अभाव होवैगासं
सार मोक्षादिकका अभाव होते संते सून्यदोष आवैगा वास्ते वस्तु कोइहै
सर्वही वस्तु अपणे अपणे स्वभावमे जैसीहै तैसीहै तैसेही स्वस्वरूपी स्वा
नुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि वस्तुबी स्वभावमे जैसीहै तैसीहै सोहैहीहै
स्वभावमे तर्कको अभावहै तथापी अनादिकालसे स्वस्वरूप स्वानुभव-
गम्य सम्यक्ज्ञान मयी वस्तुसे सर्वथा प्रकार भिन्नयेक अज्ञान मयि वस्तु
है तामे कहणेका बिचार चिंतवन संकल्प बिकल्प आदि बहुत गुणहै सोही
वाजडमयि अज्ञान वस्तु अनेक प्रकारसे स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
नमयि स्वभाव वस्तूकूं मानैहै कहैहै सो सम्यक्ज्ञान स्वभावमे संभवे नाहीं
ताते मिथ्याहै जैसी मानैहै कहैहै तैसी वस्तू वाहै नही क्यूंके वस्तु अपणा
स्वभावमे जैसीहै तैसीहै सोहैहीहै वाजड अज्ञान मयि वस्तुहैसो सम्यक्
ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूंकूं इसप्रकार मानैहै कहैहै सोही कहियेहै वास्त-

स्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु तो आपणी आ
आपहीके स्वभावमें है सो तो जहांकी तहां जैसाकी तैसी जैसीहै तै
। सोकी सोहीहै सोहै जिसकूं कोइतो निराकार मानैहै कहैहै अर उ·
सी वस्तुकूं कोई आकार मानैहै कहैहै अर्थात् उसी वस्तुकूं कोई कैसे·
मानैहै कोई कैसे मानैहै अब देखो चिन्हस्त परस्पर सम्यक्ज्ञान स्वभा
व वस्तुकूं आंगुलीसे सूचैहै पूर्ववासी कहताहै मानताहै के या सम्यक्
ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु पश्चिम कूंहै पश्चिमवासी कहताहै मानताहै के·
या सम्यक्ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु पश्चिमकूं नही किंतु या वस्तु पूर्वकूंहै द·
क्षणवासी कहताहै मानताहै के या सम्यक्ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु पूर्वकूं
नही अर पश्चिमकूं नही या सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु तो उत्तर कूंहै उ·
त्तर वासी कहताहै के या सम्यक्ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु तो पूर्व पश्चिम उ·
त्तर कूंबी नही किंतु या सम्यक्ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु दक्षिण कूंहै ऐसेही

अग्नीकोणवासी उसबस्तूकौं वायूकौणमै मानताहै वायूकौणवासीउ
स बस्तू कूं अग्नीकौणमैमानताहै नैऋत कोण वासी उस बस्तू कूं ईशान
कोणमै मानताहै ईशान कौंणवासी उस बस्तूकूं नैऋत कोणमे मान-
ताहै ऐसैही निश्चयालंबी व्यवहारकूं निषेधैहै व्यवहारालंबीनीश्चय-
कूं निषेधैहै ॥ ॥सवैया॥ ॥एककहूंतो अनेकहिदीषत एकअनेक-
नहीकछुऐसो॥आदिकहूंतो अंतही आवत आदिक्र अंतक्र मध्यक्र के
सो॥गुप्त कहूंतोअगुप्तहै कहां गुप्तअगुप्तउभयोनाहिऐसो जोहिकहूं सो-
हैनहिसंदर हैनोसहीपणजैसोकोतैसो॥१॥ ॥अथवचनिका॥ ॥
उससम्यक्ज्ञानमयी स्वभाववस्तुकूं कोई कैसे मानतहै कोई कैसे मानत
हे परंतु मानूं भलाई वस्तुयेह मानतेहै जैसीहै नही भावार्थ वस्तअ-
पणास्वभावमेजैसीहै तैसीहै सोहै वस्तका स्वभावमे तर्कको अभाव
है॥ ॥चौपाई॥ ॥ज्ञेयाकारब्रह्ममलमानै नासकरणकोउद्यमठानै॥

वस्तुस्वभाव मिटैनहिं क्यूंही तातैंखेद करैसठ यूंही ॥दोहा॥ वस्तुविचा-
रतध्यावतै मनपावैविश्राम॥ रसस्वादनसुखऊपजे अनुभवताकोनाम
॥२॥ अनुभवचिंतामणिरतन अनुभवहैरसकूप अनुभवमारगमोक्ष
को अनुभवमोक्षस्वरूप॥३॥ ॥अथवचनिका॥ ॥अर्थात् येह
जेतीनयन्याय एकांत अनेकांत निश्चय व्यवहार स्याद्वाद प्रमाणन-
क्षेपादिकयेहजेताहै तेताही वादाविवादहै बहुरिजेता वादावि-
वादहै तेताही मिथ्यात्वहै जेता मिथ्यात्वहै तेताही संसारहै वास्ते॥
चौपाई॥ ॥सतगुरुकहैसहजकाधंधा येहवादविवादकरैसोअंधा
॥१॥ ॥ओरस्फुणोनाटिकसमयसारग्रंथोक्त॥ सवैया ३१ सा॥ ॥
असंख्यात लोकपरमाणजोमिथ्यातभावतेहीव्यवहारभावकेवल-
तहै॥ जिनकेमिथ्यातगयोसम्यकदरशभयो तेनियतलीन व्यवहारसे
कतहै॥ ॥पुनरोक्तं॥ ॥निश्चयव्यवहारमैजगतभरमायोहै॥ ॥

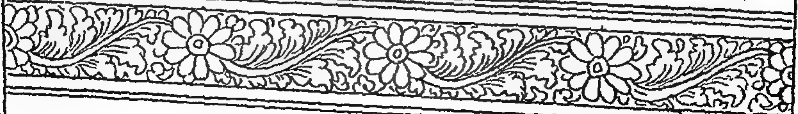
भावार्थ॥ ॥ यास्वस्वरूप सम्यक् स्वानुभवगम्य ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु
नोस्वभावहीसे जैसीहै तैसीहै देखो चित्र हस्तांगुली सूचहै पूर्वपक्षी-
जिस वस्तुकूं पश्चिम तरफ मानैहै तैसैही पश्चिमपक्षी उसी वस्तुकूं पूर्वकी
तरफ मानैहै वस्तुतो नपूर्वकूं नपश्चिमकूं वृथाही पूर्वपक्षी पश्चिम पक्षी
परस्पर विरोध सूच है- क्यूंके वस्तु स्वस्वभावमें स्वभावहीसे जैसीकी
तैसी जहांकी तहां चलाचलरहितहै इस स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य
क् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुकी जिसकूं पूर्ण अनुभव लेणो होय सो प्रथ-
म आपकूं मैंकेद्वारा वा गुरुपदेसात् ऐसो कल्प लेणो ऐसो आपकूं मा-
नलेणो के स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि सूर्य स्वभाव वस्त
अपणी आपमें आप स्वभावहीसे जैसीहै तैसीहै जिस स्वभावमयि व
स्तमे नर्कको अभाव मूलहीसैहै सोही मैंहूं ऐसे अपणे आपकूं मैंकेद्वा
रा वा गुरुके वचनद्वारा कल्पलेणो वादपीछे चित्र हस्तांगुलीमौनसहित

येकांतस्थानमें बैठकरीकें देखवोंही करो देखने देखने देखणारहैगा ना
चणेमें मजा नाहीं नृत्यनाचदेखणेमें बडा मजाहे॥ ॥दोहा॥ ॥सम्य
कृज्ञानस्वभावसें सदाभिन्नअज्ञान॥ धर्मदासक्षुल्लककहे प्रेमचंद्र
मान॥१॥ चित्रांगुलिकूं देखके मनमें करोविचार॥ धर्मदासक्षुल्लक
पावोगाभवपार॥२॥ जैसासूर्यका प्रकास पृथ्वीजलाग्नि आदि कर्ता
कर्म क्रियाके तथाशुभाशुभ वस्तूकेऊपरहे तैसेंही चित्रहस्तांगुलीके
ऊपर स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यकृज्ञानमयि स्वभाव सूर्यका ज्ञानगु
ण प्रकाशहे परंतु चित्रहस्तांगुलिसे अर चित्र हस्तांगुलीका भाव क्रि
याकर्म आदिजेता कुछ शुभाशुभ व्यवहारहे तासे ज्ञानगुण ननन्मयि
हे नहोवेगा नहुयेथे बहुरिज्ञानगुण अर जिसगुणीका ज्ञानगुणहे सो
वी चित्रहस्तांगुलीसे बहुरि चित्रहस्तांगुलीका भाव क्रिया कर्म आदि
जेता कुछ शुभाशुभ व्यवहारहे तासे ननन्मयि हुये नहोवेगा नहे वि-

शेष ओर समजणा रूणो जैसै येक मोटो-चोडो लंबो स्वच्छ स्वभावम
यि दर्पण ताके सन्मुख अनेक प्रकारका काला पीला लाल हरित रूपे
दादिक रंगका वांका टेडा लंबा-चोडा गोल तिरच्छा आदि आकारहे ता
की प्रतिछाया प्रतिबिंब उस स्वच्छ दर्पणमे तन्मयिवत दीखतहे तैसैही
स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञानमयि स्वच्छ स्वभाव दर्पणमै येह
मनुष्य देव तिर्यंच नारकीका वा स्त्रीपुरुष नपूंसकका वा तनमन धन व
चन तथा लोकालोक आदिकका शुभाशुभ जेता व्यवहारहै ताकी प्र
तिच्छाया प्रतिबिंब उस स्वस्वरूप स्वानु भव गम्य सम्यक ज्ञानमयि स्व
च्छ स्वभाव दर्पणमे तन्मयिवत दीखतहै मानुकील राखेहै मानु चित्रका
र लिख राखेहे मानु काहु शिल्पकार टांचीसे कोर राखेहै भावार्थ स्व-
स्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञानमयि स्वच्छ स्वभावमयि दर्पण हैसो
वी स्वभावहीसै स्वभावमे जैसाहै तैसाहै बहुरि तनमन धन बचनादिक

अर इस तन मन धन वचनादिक का शुभाशुभ व्यवहार बहुरि ताकी-
प्रतिच्छाया प्रतिबिंब स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान माथि स्वच्छ
स्वभाव दर्पणमे तन्मथिवत् दीखतहै सोबी अज्ञान माथि स्वभावहीसे-
स्वभावमे जैसाहै तैसाहै पूर्वोक्त स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान
माथि स्वच्छ स्वभाव दर्पणको साक्षात् स्वानुभवकी प्राप्तकी प्राप्ति सत्गु
रु काउपदेशबिना तथा काल लब्धि पावक हुये बिना स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञा
नको लाभ नहीहोय शृणो जैसे सूर्यमे प्रकाश तन्मथिहै तैसे जिस वस्तु
मे ज्ञानगुण तन्मथिहै उसी वस्तुकूं मुनी ऋषी आचार्य गणधरादिक
जीव कहतेहै सो निश्चय दृष्टीमे जीवराशी जीव माथिहै शृणो ।
ष्टिमे जीवराशीके परस्पर जातिभेद नही स्वभावभेद नही लक्ष लक्षण-
को भेदनहीं नामभेद नहीं स्वरूपभेद नही अर्थात् गुणगुणी अभेद
वास्तै जीवराशीके परस्पर गुणगुणी भेदनाहीं यादिस्यात्

दहैसो परमयीहीहै येह अनादि सिद्धांत वार्ता बचनहैसो शब्दसे तन्मयी है अब हे मतवालेहोतथाहेजैन मतवालेहो हेवैश्नुमत वालेहो शिवमतवाले बौद्धमतवाले आदि षट्मतवालेहो जन्मांध षट् हस्तीको जथावत् स्वरूप नजानकरिके परस्पर बिबाद बिरोध करते करते मरगये तैसे हे षट् मतवाले हो षट्जन्मांधवत् परस्पर बिनसमजे बिबाद वैर विरोध मति करो शास्त्र इत्यं गुरुवाक्यं तृतीयंचात्मनिश्चयं अर्थात् शास्त्रमें लिखी होय ताकी सोही गुरुमुखसे बाणी खरती होय बहुरि सोही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञान प्रथित भावमें अचल प्रमाणमें आवैउसीकू हेमत वालेमित्रोहो समजो दोहा समजोसमजोसमजमें समजोनिश्चयसार॥ धर्मदाससुगुरुककहे तबपावोभवपार॥१॥ इति०



स्वस्वरूपस्वानुभ
वगम्य साप्यकज्ञानमयि-
स्वभावसूर्यवस्तुस्वभावमेंजे
साहैतैसाहेस्वभावमेंतर्कको
अभावमूलहोसैंहैं इससूर्यका
प्रकाससर्वचित्रहस्तांगुली
केऊपरहै॥

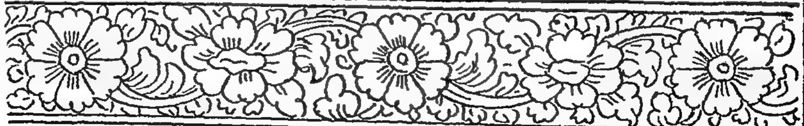
अथ स्वस्वरूपस्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभावसूर्य वस्तु है तासैं तन्मयि होय करिकै ताका स्वानुभव ऐसैं लेणा एक नयकैतो दुष्ट कहिये द्वेषीहै बहुरि दूसरी नयके दुष्ट नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहूनयके दोय पक्षपातहै १ एकनयके कर्ताहै दूसरी नयके कर्ता नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहूनयके दोय पक्षपातहै १ एक नयके भोक्ताहै दूसरी नयके भोक्ता नाहीहै ऐसै येह चैतन्य विषै दोहू नयके दोय पक्षपातहै १ एकनयकेजीवहै दूसरी नयके जीव नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहूनयके दोय पक्षपातहै १ एकनयके सूक्ष्महै दूसरीनयके सूक्ष्म नाहीहै ऐसै येह चैतन्य विषै दोहू नयके दोय पक्षपातहै १ एकनयके हेतुहै दूसरी नयके हेतु नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहूनयके दोयपक्षपातहै १ एकनयके कार्यहै दूसरी नयके कार्य नाही १ एकनयकेभावहै दूसरीनयकेअभावहै ऐसै येह चैतन्य विषै दोहुनयके दोउ पक्षपातहै १ एकनय

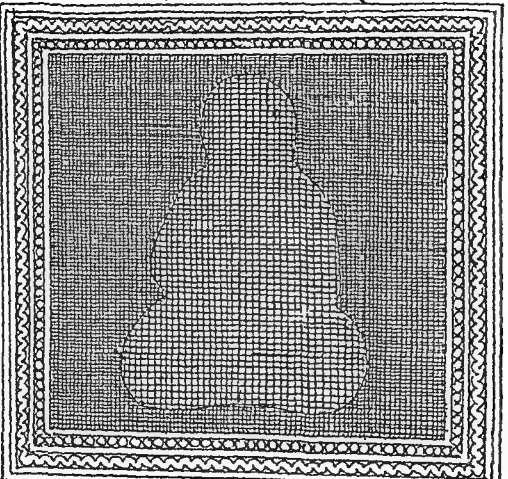
केयेकहे दूसरी नयके अनेकहे ऐसे येह चैतन्यविषे दोहूनयके दोयपक्ष
पातहे १ एकनयके सांतकहिये अंतसहितहे दूसरी नयके अंत नाहीहे
ऐसे येह चैतन्यविषे दोहू नयके दोय पक्षपातहे १ एकनयके नित्यहे दू
सरी नयके अनित्यहे ऐसे येह चैतन्यविषे दोहूनयके दोय पक्षपातहे १
एकनयके वाच्य कहिये वचनकरि कहनेमे आवैहे दूसरी नयके वचन-
नाहीहे ऐसे येह चैतन्यविषे दोहू नयके दोय पक्षपातहे १ एक-
नयके नानारूपहे दूसरी नयके नानारूप नाहीहे ऐसेयेह चैतन्यविषे दो
हूनयके दोय पक्षपातहे १ एकनयके चेतकहिये जाननेजोग्यहै दूसरी
नयके चिंतवने योग्य नहीहे ऐसेयेह चैतन्यविषे दोहूनयके दोय पक्षपा
१ एकनयके दृश्यकहिये देखनेयोग्यहे दूसरी नयके देखनमे नाहीं
आवैहे ऐसेयेह चैतन्यविषे दोहूनयके दोयपक्षपातहे १ एकनयके वे-
कहिये वेदने योग्यहे दूसरी नयके वेदनेमे नही आवैहे ऐसे येह चै-

तन्यविषै दोयनयके दोयपक्षपातहै १ एक नयके भाव कहिये वर्तमानप्र
त्यक्षहै दूसरी नयके नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोयनयके दोयपक्षपात
है १ ऐसै चैतन्यविषै येह सर्व पक्षपातहै बहुरि तत्ववेदी हीहै सो स्वस्वरू
प स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव सूर्य वस्तुकूं यथार्थ स्वानुभव क
रनेवालाहै ताके चिन्मात्र भावहै सो चिन्मात्रहीहै पक्षपातसे सूर्यप्रकाश
वत् येक तन्मयि नहै नहोवैगा नहुयेथे अर्थात् जैसै सूर्यसैं अंधकार भिन्न
है तैसै स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यहै सो विधिनि
षेध अस्ति नास्ति राग द्वेष वैरबिरोध पक्षपात द्वैताद्वैतसे वा संकल्प विक-
ल्पसे भिन्नहै १ जैसै सूर्यका प्रकासमे येक लघुहै तो दूसरो स्थूलहै येक मू
र्खहै तो दूसरा पंडितहै येक भोगीहै तो दूसरो जोगीहै येक लेताहै तो दूसरा
देताहै येक मरताहै तो दूसरो जनमताहै येक भलोहै तो दूसरो बुरोहै येक मो
नीहै तो दूसरो बक्ताहै येक अंधोहै तो दूसरो देखताहै येक पापीहै तो दूसरो

पुन्यवानहै येकउत्तमहै तो दूसरोनीचहै येक कर्ताहै तो दूसरो अकर्ताहै
येकचलताहै तो दूसरो अचलहै येक क्रोधीहै तो दूसरो क्षमावानवीहै ये
क धर्मीहै तो दूसरो अधर्मीहै कोई किसीसे नगीचहै तो कोई किसीसे भि
न्नहै कोई बंध्योहै दूसरो मुक्तहै खूलोहै कोई उलटोहै तो दूसरो
लटोहै इत्यादिकजैसे येह सूर्यका प्रकासमे सर्वहै तैसेही स्वस्वरूप स्वा·
नुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यमे पूर्वोक्त पक्षपातका बिबाद
अर्थात् पूर्वोक्त पक्षपातहैसो पक्षपातसे अग्निउष्णतावत् येकत
बहुरिजैसे सूर्यसे अंधकार भिन्नहै तैसे पूर्वोक्त पक्षपात है सोस्व
ज्ञानमयि सूर्यसे भिन्नहै प्रथम गुरूपदेसात् सर्वचित्र हस्तांगुली
के बिचमेहै सो अचल बणिकरिके बाद पश्चात् परस्पर चित्र हस्तांगुलीसू
चहै कहहै मानैहै सो समजणा समजणेके द्वारा अपणा आपमे आप·
मायि स्वसम्यक् ज्ञानमे संभवो सोतो स्वसम्यक् ज्ञानानुभवसे तन्मायि शेष न

संभवे सो अनन्यथि स्वस्वभावमे संभवै सो अपणीहै स्वस्वभावमैनसंभवे
सो अपणी कदाचित कोई प्रकारथीनहै नहोवैगी नहुईथी अब अवगादता
अर्थ चेतकरो पीतांबर दासजी आदिजेना मुमुक्ष मेरा प्यारा मेरा वचनो
पदेस द्वारा स्वस्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानानुभव प्रासकी प्राप्ती लेणेजोगले
चुकेहोनो इससम्यक् ज्ञानदीपका पुस्तगकूं आदिसे अंत पर्यंत् दोय म-
हिनामे येकवेर पढलीया करो यावत् देहादिक भाष तावत्काल पर्यंत येह
मेरा लिषणा सद्भूत व्यवहार गर्भित समजणा १ ॥श्री॥ ॥श्री॥




अथज्ञानावर्णीकर्मचित्र· ३

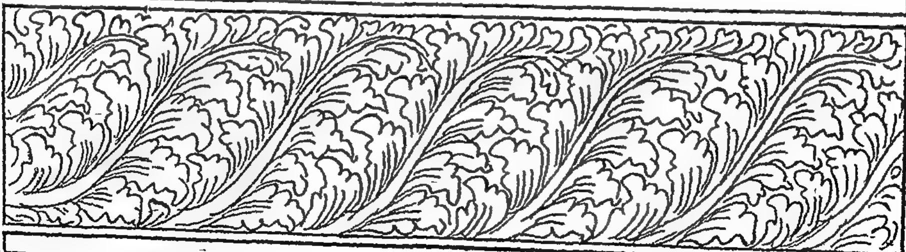
| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | मति | १ | ज्ञान |
| २ | श्रुति | २ | ज्ञान |
| ३ | अवधि | ३ | ज्ञान |
| ४ | मनपर्य | ४ | ज्ञान |
| ५ | केवल | ५ | ज्ञान |
| ६ | कुमति | ६ | ज्ञान |
| ७ | कुश्रुति | ७ | ज्ञान |
| ८ | कुअवधि | ८ | ज्ञान |

॥ अथज्ञानावर्णिकर्मविवर्णमाह॥ ॥दोहा॥ ज्ञानावर्णिघातके हुवोज्ञानकोज्ञान॥ धर्मदास क्षल्लककहे जिनआगमपरमान॥१॥ अथव चनिका॥ ॥जैसैदेवमूर्तिके आडो मुलमलके वस्त्रको पटलहोय तबदूसराकूं देवमूर्तिस्पष्टदी खैनाहीं तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानके येकपटवत् कर्महे सो आडोआजावे तब निरंतर दृष्टीरहितकूं अंतरज्ञान दीखे नाही अथवा जैसे सूर्यके आडो वा दल आज्यावै तब दूजाकूं सूर्यस्पष्टदीखैनाहीं तदवतही केवलज्ञानम यि सूर्यकेपटलवत्त कर्म आज्यावे तबज्ञानरहितकूं दीखवतानाही जैसे सूर्यके आडा पटवत् अनेक बादल आज्यावे तोबी सूर्यहैसो सूर्यहोहे यदि बादलरहित सूर्य होयतोबी सूर्यहैसो सूर्यही है सूर्यके आडाबाद

रुआज्यावै तब सूर्यकूं सूर्य ही नमानताहै नसमजताहै न
सोबी मिथ्याती बहुरि सूर्यके आडा बादल आज्यावै तब कोई बादल-
हीकूं सूर्य समजताहै मानताहै कहताहै सोबी मिथ्याती
आडोपट अर सूर्यके आडाबादल येह दोय दृष्टांतके द्वारा
एा बहुरि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुके प-
टवत् येक कर्महै ज्ञानरहितहै सो आडो आज्यावै तोबी सम्यक्ज्ञान स्व
भावमयि वस्तु है सोकी सोहीहै सो है बहुरि जड अज्ञान मयि पटवत् क
र्महै जिससै रहितहोय सोबी वो स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञान
मयि स्वभाव वस्तू जैसाकी तैसी स्वभावमैंहै अर्थात् जैसै सूर्यके
मावास्याकी मध्यरात्रीके परस्पर अत्यंत भेदहै तैसैही स्वस्वरूप स्वानु-
भवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभावके अरज्ञानावर्णि कर्मके परस्पर
नभेदहै क्यूंके कर्म अज्ञानहै वो ज्ञानहै कर्म अचेतन वो चेतन कर्म अ-

जीवहै वोजीवहै ज्ञानहैसो कर्मकूं जाणताहै कर्महैसो ज्ञान कूं नहींजा
णताहै ज्ञान अरु कर्म येह वस्तू दोयहै अर दोहू का लक्षलक्षण येकन
हीं जैसे सूर्य प्रकास येकहै तैसे ज्ञान अज्ञान नएकहै नहोवैगा नयेकहु
येथे ज्ञान अज्ञानका मेलहै तो ऐसाहै के जैसा फूल सुगंधका तिलतेल
का दुग्ध घृतकासा मेलहै बहुरि ज्ञान अज्ञान का अंतर भेदहै तो ऐसा
है के जैसा सूर्यका अर अंधकारका अंतर भेदहै तैसा येह अनादीका
लीहै गुरुविना इसका सारको लाभ नहीं होवै जैसे सूर्यमे प्रकाशगुण
सूर्य स्वभावहीसैहै तैसे जिस वस्तुमे केवल ज्ञानादि ज्ञानसे तन्मायिगु
णहै सो केवल ज्ञानहै अर्थात् जिसमे केवलज्ञानादि गुण नाही सो अ
ज्ञान वस्तुहै अब जिसमे ज्ञानगुणहै असो केवल ज्ञानहैसो पर अपे-
क्षा अष्टप्रकारहै जैसे सूर्य प्रकास एक तन्मायिहै तैसे केवल ज्ञान वस्तु
अपणा गुणस्वभाव लक्षणकूं त्याग करिके जड अज्ञान मयि वस्तुसै न

येक कबि कदाचित् नन्मयिहुये नैहोवैगा नहोताहै अब हेसज्जन अष्ट
मकार ज्ञानाबर्णि कर्मको बिचार करै ज्ञानके अर कर्मके नन्मयिताहै के ना
ही उसका बिचार करि ॥ ॥ अथ दोहा ॥ ॥ मकास सूरज एक है जड
चेतन नहि एक ॥ धर्मदास कछुक कहै मनमै धार बिबेक ॥ १ ॥ ॥ इति
श्रीज्ञानावर्णि कर्म चित्र यंत्र सहित समाप्तः ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥




दर्शनावरीचेचित्र

चक्षु द॰ अच॰ द॰ दर्शन॰

॥ अथदर्शनावर्णीकर्मप्रारंभः॥ ॥सोरठा॥ ॥ज्ञानभा नुंजिनराज सर्वजगनकेऊपरै॥ धर्मदासकहैसार सोहीसु खकोकाजहै॥१॥ ॥अथवचनिका॥ ॥ जैसैगढमेंजा करिके देखणेकी सक्ति तो एक पुरुषमें है परंतु द्वारपाल भीतर नहींजाणे देताहै तैसेही जैसे सूर्यमें प्रकासहै तैसैजीवमें ऐजाणणेका गुणस्वभावसैंहीहै परंतु दर्शणावर्णीजानिको द्वारपा लवत् येक कर्महै सो देखणे नही देताहै इहां ऐसा अनुभव लेणा के द्वारपाल उनकूं देखणेके अर्थ नहींजाणे देताहै अर कहताहै के गड के भीतर क्या देखणेकूं जाताहै उत्तर जिसमें देखणे जाणबे का गुणहै उसीकूं देखणेकूं भीतर जाताहूं द्वारपाल रोकताहै कहताहैके मतिजावो जैसा तेरेमैं देखणेजाणनेका गुणहै तैसाही उसमेंहै सूर्यसू र्यकूं देखणेकाउद्योग इच्छा कर्नाहै सो वृथाहै जैसे एक अग्नि भीतर

रवमे दबीहै अर दूसरी अग्नि व्यक्तहै तैसैही तेरे अर तूं जिसकूं भीतर देखणेकूं जाताहै उसके अंतर समजणा राखकी अपेक्षावत् भेदसम जणा स्वस्वरूपमै अभेद जैसो भीतर गढमैंहै तैसोही तूंहै ॥ ॥प्रश्न॥ जैसेजैसो भीतर गढमैंहै तैसोही मै कैसोहूं ॥ ॥अब द्वारपाल दृष्टांतद्वा राउत्तर देताहै॥ ॥ स्त्राणि तूं इस द्वार भवनमे तूं तेरा स्वमुखसे ऊंचा स्वर सैं अलापकरिके तूंही तब द्वारपालके कहे प्रमाण ऐसैही ऊंचा स्वरसे अ वाज करिके तूंही तब प्रतिअवाज वसीही आई तब वो निश्चय समज ल हीके जिसमें देखणेका गुण भीतरमैंहै तैसाही देखणेका गुण मेरेमैं है अ बमै किसकूं देखणेके अर्थ भीतर गढमैंजाऊं अर्थात् मेरेमे देखणेजा णनेका गुण स्वभावहीसैं है अबमै किसकूं देखूं अर किसकूं नदेखूं ॥

दोहा ॥ ॥दर्शणावर्णी कर्मको प्रगटदिखायो भेद ॥ तोबीगुरुबिनना- मिलै बहुतकरो तुमखेद ॥२॥ ॥अथ वचनिका॥ ॥जैसैं सूर्यमें प्रका

सगुणहै तैसे जिस वस्तुमे देखणेका गुणहै सोही वस्तु दर्शणहै
णका परअपेक्षा ४ भेदहै सोबी सम्यक् दर्शणतो स्वभावकूं उलंघक
रिके चक्षो चक्षु होता नाहीं जैसे जन्मांध स्वपर शरीरकूं नही देखतहे
नहींजाणतहे तैसेही अज्ञान वस्तुहे सोस्वपरकूं नहीजाणतहे नहीदेख-
तहे बहुरिजैसे सडकके रस्ताके येक तरफ येकद्वारको मकान स्थानहै ता
केभीतर येकस्थान अर्थात् मकानके भीतर मकान तहां अंधारामे
रुष बैठकु वो उस मकानके द्वारा होकारिके बाहिर रस्तामे आतेहे जातेहे ता
कूंबीजाणतहे अर स्व आपकूं बीजाणतहे तैसेही दर्शणहैसो स्वपरकूं
देखतहे जैसे सूर्जसे प्रकास भिन्न नहीं तैसे दर्शणसे देखणा जाणना क-
दापी भिन्न नहीं १ सर्वकूं देखताहेसो दर्शनहै १ इतिदर्शनावर्णि
कर्म समाप्तः ॥ ॥श्री॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥


वेदनीकर्मचित्र

॥अथबेदनीकर्मप्रारंभः॥ ॥दोहा॥ ॥बिषयस्करवसोदुःरवहै श्रयनयप्रमाण॥ धर्मदासक्षुल्लककहै समजदेरवमतिमान॥१॥ ॥अथवचनिका॥ सहत लपेटीषड्गधाराकूं पुरुष जिव्हासैचाटतहै सो कुछतो स्वादमिष्टभाष होतहै विशेष जिव्हा रवंडन दुःरव भाष होताहै

बेदनीकर्म दोप्रकार साता असाताहै इहांस्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयी स्वभाव वस्तुको अनुभव ऐसै लेणाजैसै सूर्य प्रकाशमै वा आकाशमै कोहूस्करवी कोहूदुःरवीहै ताका स्करव वा दुःरव आकाशसे वा सूर्य अर सूर्यका प्रकाशसै येक तन्मयि होकरिकै लागते नाहीं तैसेही संसारका स्करवदुःरव साता असाता कर्म उस स्वस्वरूपी स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानसूर्यकूं पोंहोंचतानाहीं ज्ञानमयि सूर्यकूं लागत नाहीं अर्थात् कुज्ञानमयि सूर्यके अर येह साता असाता बेदनी कर्मके परस्पर सूर्य अंधकार कासा अंतरभेद परस्परहीके स्वभावहीसै भेदहै दोहूहीके सूर्यप

काशवत् येकन तन्मयि ताहे नहोवैगी नहुईथी स्यात् जैसे दर्पणमें ज-
लाग्निकी प्रतिच्छाया भाष होतीहै तैसेही स्यात् केवल ज्ञानमयी दर्पण-
मे येह साता असाता वेदनी कर्मकी भावबासना भाष होताहे तोबी स-
ता असाता वेदनी कर्मसे वो केवल ज्ञानमयि दर्पण तन्मयि नहुवा नहोवे
गो नहे स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावको अभावनस
मजणा नमानणा नकहणा ॥ ॥सवैय्या ३१ सा ॥ ॥जैसे कोहू चंडा
लीजुगल पुत्रजणेयक दीयो ब्राह्मणकूं येक राख लियो हे ब्राह्मणके
सोतो मदिरामांसत्यागकीया ॥ ॥बचनिका॥ ॥ ताकोतो उत्तम ब्रा
ह्मणपणाको अभिमान आयो बहुरि दूसरो चांडालनीके घरहीमें रह्यो
ताकूं मदिरा मांसादिकके ग्रहण निमित्तसे हीणता पणासे वो आपकूं नीच-
मानतो हुवो इहां बिचार करिकै देखियेतो यह दोहूही उत्तम अरहीण येक
चांडालनीके पेटमेंसे उत्पन्न हुये तैसेही येक कर्म खेतमेंसे साता अ

दनी कर्मका दोयपुत्र समजणा निश्चय दृष्टीमे दे रवो सुनार सुवर्णका· आभूषण करे तोबी सुनारहैसो सुनारहीहै बहुरि स्यात् वोहीसुनार ता· म्रलोहका आभूषण बनावे तोबी जैसाको तैसा सुनार है सो सुनारहीहे बहुरिजैसे सुनार शुभाशुभआभूषणादिककर्म कर्ताहै सो शुभाशुभआ भूषणादिक कर्मसे तन्मयि हो करिके नही कर्ता हे तैसेही सम्यक्त दृष्टी शु भाशुभ कर्म कर्ताहै परंतु शुभाशुभ कर्मसे तन्मयि होय करिके नही कर्ता है वास्ते गुरूपदेशात् सम्यक्दृष्टी होणाजोग्यहै॥ दोहा ॥एकवेदनीक र्मका भेददोयपरकार॥ धर्मदासक्षुल्लककहै साता साता बिचार॥१॥ ॥ बचनिका॥ ॥हेजीव येहसाता असाता वेदनी कर्म तेराहे तबतो तूंही· आधिष्ठाताहे तथा येह साता असाता वेदनी कर्म तेरा नाहीं तो फेर क्याफि करहै तूंनकिसीका कोइन तुमारा तेरा तूंहीहे निराधारा॥ ॥इतिश्रीवेद नीकर्मचिन्हसहित समाप्ताः॥ ॥ ॥ ॥ ॥

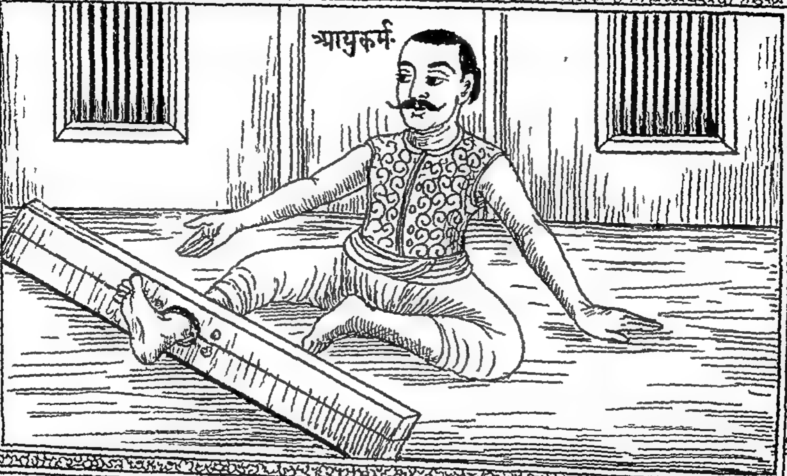

मोहनीकर्म

॥अथमोहनीकर्मप्रारंभः॥ ॥दोहा॥ ॥परस्वभावपररूपकूं मानै अपनोआप॥येबिकल्पसबछोडके नयेसिद्धगुणथाप॥१॥ ॥अथवचनिका॥ ॥जैसेमदिराकेपीणेवालो आपपरकूं जाणनो नाही-मदिरावसात यद्दातद्दावचन बोलनाहे तैसेही मोहनीकर्मवसात् जीव आपणाआपमें आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यकूज्ञानमयि-स्वभावकूं नजाणनेहे अरपरकूं ऐसा मानैहै येह तन मन धन वचनादि कहे सोही मेंहूं अर्थात् येही मोहहै स्वरूप निश्चय मोहका वचन कूं कहताहूं येह तनमन धन बचनादिकहे सोहीमेंहूं येकतो येह बिकल्प बहु-री येह बिकल्पहेके येह तन मन धन बचनादिक हे सो मैनाहीं अर्थात् येहेसोही मेंहूं येहसो मैनाहीं येह दोहूही विकल्पहे सोही निश्च मोहहै इस दोहू विकल्पकूं अर स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान ये स्वभाव वस्तुकूं येक तन्मायि अग्नी उष्णतावत् सूर्यप्रकाशवत् मा-

नताहै जाणताहै कहताहै सो मोही मिथ्याद्रष्टीहै इससे भिन्नसो सम्यक्
द्रष्टी मै तूं येह वह येह ४ च्यार अर इन च्यारका जेता खेल बिलासहै सोस
र्व द्रव्यकर्म भाव कर्मनो कर्मसे तन्मयि येकमयि समजणा हाय हाय मो
हनी कर्म वसात् जिसकूं भला मानताहै उसीहीकूं बुरा मानताहै जिस-
कूं इष्ट मानताहै उसीकूं अनिष्ट मानताहै मोहीजीवकूं येह निश्चय नाही
के जिसमे ज्ञानगुणहै सोही मैहूं यदि निश्चयहै तो फकत कहणेकाहै
स्वस्वरूप स्वानुभव नाहीं क्यूंके तनमनधन वचन आदिक अजीव वस्तु
के अर ज्ञानगुणमईजीवके सूर्य अंधकार कासा अंतर भेद परस्पर स्वभा
वसैहै येह भेदविज्ञान जिसके अंतःकरणमे गुरुपदेशात् आकाशवत्
[illegible]हैहै सो अडिलकहै विचक्षण पुरुष सदामै एकहूं अपणेरस
[illegible]टेकहूं मोह करम ममनाही नाही भ्रमकूपहै शुद्धचेतना
[illegible]है [illegible]नेका जैसेसूर्यमै प्रकाशगुणहै तैसै हे सज्जन

हे प्रेमी तेरेमें ज्ञानगुणहै तूं निश्चय समज तूं ज्ञानहै अरयेह मोहादिक अज्ञानहै भावार्थ ज्ञान अज्ञानकूं सूर्य प्रकाशवत् एकही मानताहै समजताहै कहताहै उस मिथ्या दृष्टीकूं ब्रह्मज्ञान को उपदेस देणा वृथाहै॥ प्रश्न॥ ॥ मोह किसकूं कहतेहै ॥ ॥उत्तर॥ ॥ नदीके तट येक पुरुष बहताहुवा पाणीकूं येकाग्रह मन करिके देखत देखत येह समजीके हमभी बहे जातहै इसीको नाम मोहहै तथा दश पुरुष परस्पर गणि ना करिके नदीके पार उतरणेकी इच्छा करी येक पुरुष गणि ना करिके अपणा घरसे दश आयेथे नवही रहगये आपकूं दशमूं नसमजताहै नमानताहै नकहताहै इसीको नाम मोहहै अर्थात् पुद्गलादिककूं अ सम्यक्ज्ञान मयिहै ताकूं येकही समजताहै सोही मोहहै ॥

इतिश्री मोहनीकर्म चित्रसहित समाप्तः ॥ ॥७॥ ॥७


आयुकर्म

| | |
|---|---|
| आयुकर्मयंत्रम· | |
| मनुष्य· | आयु· |
| देवा | आयु |
| तिर्यन्च | आयु |
| नारकी | आयु |

॥ अथआयुकर्मप्रारंभः॥ ॥चौपाई॥ ॥खंडनमंडन· आयुनाश भयेसिद्धपरमातमपाश॥ अचलायूसमअ· चलअभेद लीनभयेनिजरूपअरवेद॥१॥ ॥वचनिका जैसे कोई तस्कर बेडी खोडासे बंध्योहै तैसेही जीव युकर्मवसात् मनुष्यायू देवायु नर्कायु तिर्यंचायूमे जहांतहां बंध है आयू पूर्ण हुयेबिना एकायूकूं छोडकरिके दूसरी आयूमे नहीं

अब अचलायूके अर्थ स्वस्वरूप स्वानुभव सम्यक् ज्ञानमयि स्व· व वस्तू को स्वानुभव ऐसे लेणा जैसे घटके भीतर घटाकाश बंध्योहै के भीतर मठाकाश बंध्योहै इत्यादि तैसेही देहरूपी घटमे आकाशव· त् एक ज्ञान गुणमायि जीव बंध्योहै विचारकरो जैसे घटकेभीतर शहै सोमहाकाशसे अलगनाहीं तैसेही देही रूपी घटके भीतर ज्ञानहै सो केवल ज्ञानसे भिन्ननाही हे ज्ञान तूतरेकूं केवलज्ञानसे भिन्न मतिस

मजो मति मानै क्यूंके केवल ज्ञानसै भिन्न वस्तूहै सोतो अज्ञान वस्तूहै
सज्जन तूं ज्ञान वस्तु मूलहीसे स्वभावहीसे है फेर तेरेकूं तूं अज्ञान
मानताहै हेज्ञान व्यवहार नयात् तुं मनुष्यायु देवायु नरकायु तिर्यंचा
युमे बंध्योहै निश्चय नयात् है केवल ज्ञान स्वरूपी श्ररु पुद्गल मूर्ति आ
कार वस्तुहै तूं केवल ज्ञानमयि निराकार अमूर्ति वस्तु स्वभावहीसे है
वडे आश्चर्यकी वार्ताहै मूर्ति आकार वस्तुहै सो अमूर्ति निराकार वस्तु
ज्ञानमयिकूं कैसे बंधमे डालतहै असंभवति वार्ता कैसे संभवे हेज्ञान
भरममे मतिडूबे देखणेजाणवेका गुण तेरेसे तन्मयिहै तूं बंधकूं अर
बंध्याकूं अरबंधणेका द्रव्य क्षेत्र कालभाव आदिककूं सहजही
देखतहै जैसे सूर्यका प्रकाश सर्व पृथ्वीके ऊपर सहजहीसे है
न तूं बंध्या बंधकुं सहजही जाणतहै व्यवहार नय बखान् तूं बंध्योहै सो
व्यवहार ऐसाहै वो घृतकुंभ चाऊखलीसडक चलतीहै रस्ता लूटतेहै अ

निश्चय
नी बलतीहै येह पांच दृष्टांत द्वारा सर्व व्यवहार कूं समजो निश्चय
रसै सर्वथा प्रकार भिन्नहै सोही परमात्मा सिद्ध परमेष्ठी ज्ञानघनहै
देखो सूर्य के भीतर अंधकार नाहीं तैसैही सम्यक् ज्ञान स्वभावमें शुभा
शुभ आयु नाही मनुष्यायू देवायू तिर्यंचायू नर्कायू येह ४ च्यार
है ताकूं केवल ज्ञान जाणताहै अचल अखंडायू पंचमायूहै कुछ और
समजो जैसे किसीके पांवमें लोहाकी बेडी सें बंध्योहै सोबी दुःखीहै
बहुरि किसीके पांवमै सुवर्णकी बेडीसे बंध्योहै सोबी दुःखी तैसैही दा
न पूजा व्रतशीलजप तपादिक शुभ भाव शुभक्रिया शुभकर्मादि शुभबं
धहै सोबी सुवर्णकी बेडीवत् दुःखको कारणहै बहुरि पाप अपराध काम
शीलादिक अशुभ भाव अशुभक्रिया अशुभकर्मादि अशुभबंधहै सोबीलो
हाकी बेडीवत् दुःखको कारणहै इस शुभाशुभसे सर्वथा प्रकार भिन्न हो
ऐसो निश्चयहीहै सो सद्गुरुका उपदेशविना मार्गकी प्राप्ति होतीनाहै

॥ ॥प्रश्न॥ ॥मातकीअप्राप्तिसंभवहै॥ ॥उत्तर॥ ॥दधि-
मैसे घृत निकसे पश्चात् दधिमै नही मिलताहै ऐसाहीसमझणा॥१॥
॥ ॥इतिश्रीआयुकर्मविवर्णचित्रसहितसमाप्तः॥ श्रीजिनाय०॥
॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥



स दी.
३७

ना क.




३६

॥अथनामकर्म विवर्णप्रारंभः॥ ॥चौपाई॥ ॥तुमरोनामनहींहेस्वा
मी॥नामकरमतुमसैंअलगामी॥शब्दव्यवहारमैंनामअनंना॥व्यक्त
प्रश्रीजिनअरिहंता॥१॥ ॥दोहा॥ ॥जिनपदनहींसरीरको जिन
गेहि॥जिनवर्णनकुछऔरहे येहुजिनबर्णननाहि॥२॥ ॥अथ
वचनिकाप्रारंभ॥ ॥जैसें चित्रकार नानाप्रकारका आकारका नाम
नाहे कर्ताहे सोजेता काला पीला लाल हरया धोला रंगका चित्र आकारदी
नाहे सो पुद्गलकाहे सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूको नामक्या इसी व
स्तूकोनाम व्यवहार नयात्जीवनामहे सो भी परसंगात् अनेकनामहे जैसे
माटीका घटकूं घृतसंगात् व्यवहारी जन कहतेहे घी घृतकुंभल्यावो अथवास
मुदायवस्तुको नाम फोजहे तथा जेता कुछ बचनसे कहणेमे आवैहे सो सर्व
नामहे नाम देसमे एकही नामहे बहुरि इहां स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्य
ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुको स्वानुभव ऐसे लेणा जैसे सूर्यमे प्रकाशादिक

गुण सूर्य स्वभावहीसेहै तैसे कोई वस्तु ऐसीहै जिसमे स्वपरकूं देखणा
जाणना येहगुण स्वभावहीसैहै विचार करो सर्वनाम अनामकूं देखना
जाणताहे ताकोनाम क्याहे अथवा सर्व नाम अनामकूं कहताहे ताकोना
मक्याहे बचनआरमौन येहवी दोयनामहे अथवा एकही वस्तु अपणा
स्वभाव गुण मयि स्वस्वभावमेजे सिहे तैसी अचल तिष्ठेहे उसीसे तन्मयि
गुप्तवा प्रगट अनेक नाम तिष्ठेते जैसे सुवर्ण अपणा स्वभावगुणादिक अ
पणे आपमे लीयेहुये अचलानष्टेहे ताहीमे कडा मुंदडा असरफी आदि
आभूषणादिक अनेक नामसुवर्णमे तन्मयिहे नामहेसो बी अपेक्षासे हे
जैसे पिताकी अपेक्षा पुत्रनामहे तैसेही पुत्रअपेक्षा पितानामहे तथा
तैसेही जीवकी अपेक्षा अजीवनामहे बहुरि अजीवकी अपेक्षा जीवनाम
हे ऐसेही ज्ञानकी अपेक्षा अज्ञानहे बहुरि अज्ञानकी अपेक्षा ज्ञान नामहो
हाहाहा धन्य धन्य धन्य सर्वपक्षापक्षरहित ज्ञानगुणसंपन्न स्वस्वरूपस्वा

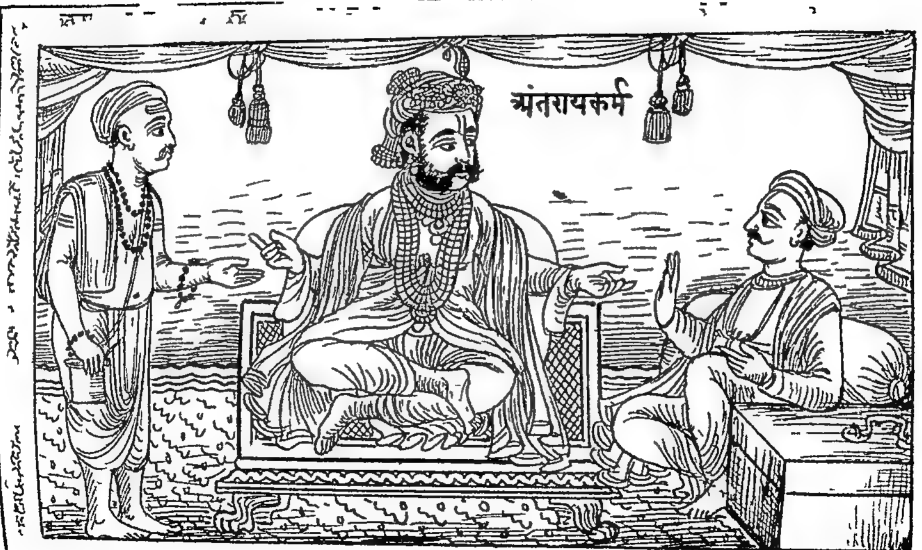
ावगम्य सम्यक् ज्ञानमायि स्वभाव वस्तु स्वभाव होसे जैसाकी तैसी जै-
हैं तैसीहै ताकूं अंतर दृष्टी वा सम्यक्ज्ञान दृष्टीसे देखिये तो ननामहै न
अनामहै अर्थात् वस्तु अपणा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य ज्ञानस्वभावमे जै-
सीहै तैसीहै नाम कहो अथवा मति कहो नाम और जन्म मरण यह पांच
गरकाशरीरहै ताकाहै   पद्मनंदी पचीसी ग्रंथमे पद्मनंदि मुनी कहग
॥   ॥दोहा॥   ॥नामकर्मकीभावना भावे करनि संभारु॥ धर्मदास
क्षुल्लक कहै मुक्तिहोय ततकारु॥१॥ अपणो आपो देखके होय आपको आ
॥होयनिचिंति निश्च्योरहै किसकाकरणाजाप॥२॥ नामकर्म कर्तारको
नामनहीं रूणसार॥जोकदापियोनामहै ताकोकर्ता निर्धार॥३॥   ॥
२ नि श्री नामकर्मबिवर्णचित्रसहित समाप्त॥   ॥७॥   ॥७॥


गोत्रकर्म

॥अथगोत्रकर्मप्रारंभः॥ ॥दोहा॥ ॥ गोत्रादिकसबकर्मकूं त्याग
भयेजिनराज॥धर्मदासक्षुल्लककरै वंदनस्करवकेकाज॥१॥ ॥
का॥ ॥जैसाकुंभार छोटामोटा माटीका बर्तन कर्ताहै तैसे स्वस्वरू
प ज्ञानरहित कोईजीवहै सोनीचगोत्र ऊंचगोत्र कर्मको कर्ताहै याहीतै
नीचगोत्रऊंचगोत्रहै इहां समजणा चाहिये माता पक्षकूं तो जाति कह
तहै बहुरि पिता पक्षकूं कुल कहतेहै जातिगोत्र येह दोयभेद कहणे मा
त्रहै अभेद वस्तुमे येह दोयभेद जल तरंग वत् तन्मयिहै जैसे आम्रवृ
क्षके आम्रही लगताहै बिचारकरो आम्रकीजातिबी आम्रही है अरआ
म्रका कुलहैसो बी आम्रहीहै जैसेजलकीजाति मिश्रीफिटकडीलूण नोसा
दर आदिहै क्यूंके इनकूं पाणीमे मिलावोतो येह मिलजातेहै अर्थात् मि
लज्यावेसो निश्चयजाति तैसेही नीचगोत्र ऊंच गोत्रकोही नीचऊं
है इहां स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुको स्वानुभव

ऐसैलेणो जैसे कूंभार माटीका बर्तन छोटा मोटा बिबाधि प्रकारका बणावै
है कर्ताहै परंतु माटीचक्रदंड छोटा मोटा विबधि प्रकारका बर्तन भांडासे
तन्मायि होय नही कर्ताहै क्यूंके कुंभकार बिचार चिंतवन नही करे तो बी॰
कुंभकारके अंतःकरणमे अचलनिश्चय येहहै के मै माटीनहीं अर माटी
का छोटामोटा बर्तनादिक कर्महै सोबी मै नाहीं अर दंड चक्रादिक कर्म
है सोबी मै नाहीं अर येह मेरा सरीर हाड मांस चर्मादिक मयिहै सोबी मै
नाहीं अर तन मन धन बचनादिक है सो भी मैनाहीं इत्यादिक कुंभकारके
अंतःकरणमे अचलहै तोइहां निश्चय स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
न स्वभावमे येही भाष भाव मालुम होताहै के जैसे माटीको कार्य घट जै॰
सैमाटी ताके बाहिर मांहि जल फेन तरंग बुद बुदा ऊपजताहै सोजलसे जू
दे नाही ऐसेजो जाकोहै कार्य कारणरूप छानो नाहि तैसेही जिस वस्तु
कर्म कारण कार्य कर्ता जिसका जोहिहै अर्थात् जैसे व्यवहार दृष्टीमे॰

देखिये तो माटीका बर्तन कुंभकार कर्ताहै बहुरि निश्चय दृष्टीमे परमा
र्थ सत्यार्थ दृष्टीमे देखियेतो कुंभकारके अर माटीके बर्तन अर माटी च-
क्र दंडादिक के एकमई पणो नाहीं वास्ते माटीका बर्तन कर्मको करणेवा
ली माटीहीहै तैसेही व्यवहार द्वारा नीचगोत्रऊंचगोत्र जीव करैहै निश्च-
य स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान दृष्टी द्वारा देखियेतो ज्ञानमयि जीव नीच-
गोत्रऊंचगोत्र नकरैहै अर्थात् गोत्रकर्म कोकरणेवालो गोत्रकर्मही कर्म
की विधि निषेध कर्मको कर्मही कर्ताहै निश्चय सम्यक् ज्ञान दृष्टीमे देख-
णा ज्ञानगुणमई वस्तु अमूर्तिहै अर कर्म मूर्तिहै रूपमहै जैसे सूर्यका
अर अंधेराका तत्स्वरूप मेल नाहीं तैसेही कर्मको अर केवल ज्ञानको
मेल नाहीं ॥ ॥इतिश्रीगोत्रकर्म वर्णन चित्र सहित समाप्ता ॥ ॥


अंतरायकर्म

| अथ अंतरायकर्मयंत्रम् | |
|---|---|
| दान | अंतराय |
| लाभ | अंतराय |
| भोग | अंतराय |
| उपभोग | अंतराय |
| वीर्य | अंतराय |

॥ अथ अंतरायकर्म प्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ त्याग ग्रहणसे भिन्न है सदा स्वी भगवान् ॥ धर्मदास क्षुल्लक कहै स्वानूभव परमान ॥ १ ॥ ॥ वचनिका ॥ ॥ जैसे राजा भंडारीकूं कहीके इसकूं एक सहस्र १००० रुपीया दे परंतु भंडारी नही देता है तैसेही भीतर अंतहकरणमे मनरायनो हुकम करता है के सर्व माया ममता छोड देउ परंतु भंडारीवत् अंतरायकर्म नहीं छोडणे देता है इहां रूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभावको स्वानुभव इस प्रमाणसे लेणा मैके द्वारा जैसे सूर्यसें अंधारा अलग है तैसे मेरा स्वस्वरूप स्वानुभवसम्यक्ज्ञानमयी स्वभावसें येह तनमनधन वचन आदिक पापपुन्य जगत संसार अलग है तबतो इनकूं मै क्या त्यागूं अर क्या ग्रहण करूं यदि जैसे सूर्यसे प्रकाश अलग नाहीं तद्वत् मेरा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य

कृज्ञानमयि स्वभावसें येह तन मन धन वचनादिक पाप पुन्य जगत
र अलग नाहीं तोबी क्या त्यागूं क्या ग्रहण करूं अथवा जैसे सूर्य सूर्य
कूं कैसे ग्रहण करै तथा सूर्य अंधकारकूं कैसा ग्रहण करे अर सूर्य अं
धकारकूं कैसे त्यागे तैसे ही मैं मेरा केवल ज्ञानमयी स्वभावकूं कैसे त्यागूं
अर ग्रहण कैसे करूं बहुरि मेरा केवल ज्ञानमयी स्वभावसें सर्वथा प्रका
र भिन्न है वर्जित है त्याजहीहै उसकूं कैसे त्यागूं अर उसकूं ग्रहण बी कै
से करूं राजा भंडारीकूं कहता है के इसकूं १००० सहस्र रुपिया दे परंतु
येह नहीं कहता के मैं राजा हूं मेरे हीकूं उगाकरिके इनकूं दे दे अर्थात् रा-
जा पर वस्तूकूं देणेका हुकुम कर्ता है परंतु अपणा स्वभाव लक्षण देणे-
का हुकुम नहीं कर्ता है तैसे ही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि
स्वभाव वस्तु अपणा वस्तुत्वकूं नै किसकूं देता है अर नै किससें
स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयी वस्तुत्व स्वभावकूं लेता है भावार्थ स्वस्व-

रूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभावमै पुद्गलादिक जड अज्ञानम
वस्तु का व्यवहार लेणा देणा नसंभवै जैसै सूर्यमै प्रकाश गुण सूर्यस्व
भावहीसैहै तैसै जिस वस्तूमै देखणे जाणनेकागुण स्वभावहीसैहै
सो वस्तू द्रव्य कर्म भाव कर्मनो कर्मकूं केवल जाणैहीहै द्रव्य कर्म भाव क
र्मनोकर्मकूं कर्तानाहीं क्यूंके ज्ञानाज्ञानके परस्पर तम प्रकाशवत् तो अं
तर भेदहै बहुरि ज्ञानाज्ञानके परस्पर जल कमलवत् मेलहै विचार करो ये
द्रव्य कर्म भाव कर्मनो कर्महै सो स्वभावहीसै अज्ञान वस्तु का भेदहै ताका
कर्ता केवल ज्ञान स्वभाव मै कोणहै बहुरि येह ज्ञानावर्णि आदि अष्टकर्म
है ते सर्वही पुद्गल द्रव्यके परिणामहै तिनकूं केवल ज्ञानमयि आत्मा ना
हीं करैहै जो जानहै सो जानहीहै निश्चय करि ज्ञानावर्णिरूप परिणामहै सो
जैसै गोरसमै व्यापक दही दुग्ध मिष्ट खाटा परिणामहै तैसे पुद्गल द्रव्यमै व्या
पपणा करिकै होतेसंते पुद्गल द्रव्यहीके परिणामहै तिनकूं जैसे गोरसकै

कटवैठापुरुष तिस्के परिणामकूं देखैहै जानहै तैसेही आत्मा ज्ञान मायि
है सो तीनि पुद्गलके परिणामनिका ज्ञाता द्रष्टाहै अष्टक मादिक का कर्त्ता
नाही तो क्याहै जैसे गोरसके निकट बैठा पुरुष तिस्कूं देखैहै तिस देखन
रूप अपने परिणामतें व्याप्तपणेरूप होता संताहै तिसकूं व्याप्य करिदे
खैहीहै तैसेही पुद्गल परिणामहै निमित्त जाकूं ऐसा अपना ज्ञान ताकूं
पनै व्याप्यपणा करि होता ताकूं व्याप्य करि जानैहीहै ऐसै ज्ञानी ज्ञानही का
कर्त्ताहै अर्थात् ज्ञानीहै सो अज्ञान मायि वस्तुसे तन्मायि होय करिके
कोई प्रकारबी द्रव्यकर्म भाव कर्मनोकर्म आदि अज्ञानमायि कर्मको कर्त्ता ना
हीं किंबहुना बहुत क्या कहूं ज्ञान अज्ञान सूर्य प्रकाशवत् नै एक हुवो नै है
नै होवैगो ॥ ॥ इति अंतराय कर्म विवर्ण समाप्तम् ॥ ॥ ॥



॥ अथभ्रांतिखंडनदृष्टांत द्वादशमस्थलप्रारंभः॥ ॥दोहा॥ ॥स्वस्वरूप सम भावमें नहीभरमकोअंस॥ धर्मदास क्षुल्लककहे शुणचेतननिरवंस॥१॥ ॥बचनिका॥ ॥ दृष्टांत दृढनाके अर्थहै स्वभाव ज्ञानदृष्टी रहितजीवहै सोतो आपकूं अरभरमभ्रांति संकल्पविकल्प कूं येकही तन्मयिवत् समजताहै मानताहै कहताहै बहुरि कोईजीव गुरूपदेस पायकरिके स्वभावसम्यक् ज्ञानदृष्टी हुये पश्चात् बिभ्रांति ममें दुःखी होयकरिके येह समजतहै मानतहै कहताहै के तन मन धन बचनसैं बहुरि तन मन धन बचनका जेता शुभाशुभबी व्यवहार क्रिया कर्महै तासें अनन्त् स्वरूप भिन्न कोई परब्रह्म परमात्मा ज्ञानमयि सदा कालजागती ज्योति नहीहै ताका समाधानके अर्थ दृष्टांत जैसे कोहू गुरु शिष्यकूं कहीके हेशिष्य येह येक ल्वणको पिंड इसजलका भर्या मैं भगूनामे डालदे तब शिष्य गुरु आज्ञानुसार उस ल्वण पिंडकूं तिसज-

लपूरित तसलाभ गूनामै डालदीयो येक तरफ येकांतमै रखदीयो प
श्चात् दूजा दिवस फिर गुरु शिष्यकूं कहीके हे शिष्य गये दिवस तूंजलपू
रित तसलाभ गूनामे ल्वण पिंड डालाया सो लावो तब गुरु आज्ञा प्रमा
ण शिष्य सीघ्रतापूर्वक जाय करिके तिस जल पूरित तसलाभ गूनामे
हस्त स्पर्श द्वारा खोजणे देखणे लगो बहुत बेर पर्यंत तसलाभ गूनामे ति
सजलकूं मथन कीयो तथापि ल्वणानुभव भाषनहीं हुवो अर्थात् ॰
दीख्यो तब शिष्य कहीके हे गुरुजी जलमै ल्वण नाही गुरु कहीके
शिष्य कहताहे के नहीहे गुरु कहताहे के हे शिष्य तूं कहताहे के नही हे
वहांहीहे फेर शिष्य कहताहे के नहीहे तब गुरु कहीके हे शिष्य तिस तस
लामै जलहे तामैसो तूं येक अंजुली प्रमाण जल पीवो तब शिष्य जल पी
वणे लागो कुछ किंचित् पीयो पीते प्रमाण शिष्यकूं ल्वणानुभव तत् सम ४४
यही हूवो अर कहीके गुरुजी ल्वणहे तैसेही तन मन धन बच्चनसे बहुरि त

न मन धन बचनका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मादिकसे सर्व
था प्रकार भिन्न स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि परम ब्रह्मप
रमात्मा सदाकाल जागती जोति जहां निषेद है तहांही है स्वानुभवमा
त्रगम्य है १ कोईजीव आपकूं ऐसे मानत है जाणत है कहत है के मै सिद्ध
परमेष्ठी परब्रह्म परमात्मा नहीहूं ताकी येकता तन्मयिताके अर्थ दृष्टांत द्वा
रा गुरु समाधान देता है हे शिष्य इस भवनमे तूं उच्चास्वरसे अलाप ऐसे
करिके तूंही तव गुरु आग्या प्रमाण शिष्य उस भवनमे जाय करिके उच्चास्व
रसे कहीके तूंही तब तिस भवनाका समैसे प्रति अवाज ध्वनि ऐसीही आ
ईके तूंही तब शिष्यके अंतःकरणमे अचल निश्चय येह हुईके जिस सिद्ध प
रमेष्ठी परमातमाकी कर्णद्वारा वार्ताश्रवण कर्ताथा सोतो स्वानुभव मात्र-
गम्य मैहीहूं १ सिद्ध परमेष्ठी परमात्माकूं आपका स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य
सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावसे भिन्न समजता है मानता है कहता है ताका समा

लपूरित तसलाभ गूनामे डालदीयो येक तरफ येकांतमे रखदीयो प
श्चात् दूजा दिवस फिर गुरु शिष्यकूं कहीके हेशिष्य गये दिवस तूं जलपू
रित तसलाभ गूनामे ल्वण पिंड डालाया सो लावो तब गुरु आज्ञा प्रमा
ण शिष्य सीघ्रतापूर्वक जाय करिके तिस जलपूरित तसलाभ गूनामे
हस्तस्पर्श द्वारा खोजण देखण लगो बहुत वेर पर्यंत तसलाभ गूनामे ति
सजलकूं मथन कीयो तथापि ल्वणानुभव भाषनही हुवो अर्थात् ल्वण
नही दीख्यो तब शिष्य कहीके हेगुरुजी जलमै ल्वण नाही गुरु कहीके
शिष्य कहताहेके नहीहे गुरु कहताहे के हेशिष्य तूं कहताहे के नही हे
वहांहीहे फेर शिष्य कहताहे के नहीहे तबगुरु कहीके हेशिष्य तिस तस
लामे जलहे तामेसो तूं येक अंजुली प्रमाण जल पीवो तब शिष्य जल पी
वणे लागो कुछ किंचित् पीयो पीने प्रमाण शिष्यकूं ल्वणानुभव तत् सम
यही हूवो अर कहीके गुरुजी ल्वणहे तैसे ही तनमनधन बचनसे बहुरि त

न मन धन बचनका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मादिकसे सर्व
था प्रकार भिन्न स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि परम ब्रह्मप
रमात्मा सदाकाल जागतीजोति जहां निषेदहै नहांहीहै स्वानुभवमा
त्रगम्यहै १ कोईजीव आपकूं ऐसे मानतहै जाणतहै कहतहै के मै सिद्ध
परमेष्ठी परब्रह्म परमात्मा नहीहूं ताकी येकता तन्मयिताके अर्थ दृष्टांत द्वा
रा गुरु समाधानदेताहै हेशिष्य इसभवनमे तूं उच्चास्वरसे अलाप ऐसे
करिके तूंही तबगुरु आग्या प्रमाण शिष्यउस भवनमे जाय करिके उच्चास्व
रसे कहीके तूंही तब तिस भवनाका समैसे प्रति अवाज ध्वनि ऐसीही आ
तूंही तबशिष्यके अंतःकरणमे अचल निश्चय यह हुईके जिस सिद्ध प
रमेष्ठी परमातमाकी कर्णद्वारा वार्ताश्रवण कर्त्तोथा सोतो स्वानुभव मात्र
गम्य मैहीहूं १ सिद्ध परमेष्ठी परमात्माकूं आपका स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य
म्यक् ज्ञानमयि स्वभावसे भिन्न समजताहै मानताहै कहताहै ताका समा

लपूरित तसलाभ गूनामे डालदीयो येक तरफ येकांतमे रखदीयो प दृष्टां·
श्चात् दूजा दिवस फिर गुरु शिष्यकूं कहीके हेशिष्य गयेदिवस तूंजलपू
तसलाभ गूनामे ल्वण पिंड डालाथा सो लावो तब गुरु आज्ञा प्रमा
ण शिष्य सीघ्रतापूर्वक जाय करिके तिस जलपूरित तसलाभ गूनामे
हस्त स्पर्श द्वारा खोजणे देखणे लगो बहुत बेर पर्यंत तसलाभ गूनामे ति
जलकूं मथन कीयो तथापि ल्वणानुभव भाषनही हुवो अर्थात्
ा दीख्यो तब शिष्य कहीके हेगुरुजी जलमे ल्वण नाही गुरु कहीके
शिष्यकहताहेके नहीहे गुरुकहताहे के हेशिष्य तूं कहताहे के नही है
वंहांहीहे फेर शिष्य कहताहेके नहीहे तबगुरु कहीके हेशिष्य तिस तस
लामेजलहे तामेसो तूं येक अंजुली प्रमाण जल पीवो तब शिष्यजलपी
वणे लागो कुछ किंचित् पीयो पीते प्रमाण शिष्यकूं ल्वणानुभव तत् सम
यही हूवो अर कहीके गुरुजी ल्वणहे तेसेही तनमन धन बचनसे बहुरि त ४४

न मन धन बचनका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मादिकसै सर्व
था प्रकार भिन्न स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि परम ब्रह्मप
रमात्मा सदाकाल जागती जोति जहां निषेद है तहांही है स्वानुभवमा
त्रगम्य है १ कोईजीव श्र्यापकूं ऐसे मानतहै जाएनहै कहतहै के मैं सिद्ध
परमेष्ठी परब्रह्म परमात्मा नहीहूं ताकी येकता तन्मयिताके श्र्यर्थ दृष्टांत द्वा
रा गुरु समाधान देताहै हे शिष्य इस भवनमे तूं उच्चास्वरसे श्र्यलाप ऐसे
करिके तूंही तब गुरु श्र्याग्या प्रमाण शिष्य उस भवनमे जाय करिके उच्चास्व
रसै कहीके तूंही तब तिस भवनाका समैसे प्रति श्र्यवाज ध्वनि ऐसीही श्र्या
के तूंही तब शिष्यके श्र्यंतःकरणमे श्र्यचल निश्चय यह हुई के जिस सिद्ध प
रमेष्ठी परमातमाकी कर्णद्वारा बार्ता श्र्यवण कर्ता था सोतो स्वानुभव मात्र
गम्य मैंहीहूं २ सिद्ध परमेष्ठी परमात्माकूं श्र्यापका स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य
सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावसे भिन्न समजताहै मानताहै कहताहै ताका समा

धानकेअर्थ गुरूकहताहे तुमारा तुमारेही समीपहै इहां तीन दृष्टांतहा
स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानको अनुभव देताहूं श्रवण करो जैसै येकस्त्री
पकी नयनी नाकमैसे निकाल करिके आपहीके कंठाभरणमे पहरादः
ई पश्चात् घरकार्य धंदा करणेमै येकाग्र चित्तहुई दोचार घटिका पश्चा·
त् वाऽस्त्री अपणा नाककों हात लगायो तब भ्रांति उस स्त्रीकों येह हुई·
के मेरी नयनी मेरेसमीप नही हाय मेरी नथ कहांगई इत्यादि भ्रांतिहा
रा दुःखितहुई श्रीगुरुके चरण सरण आई अर गुरूसे कहीके स्वामी मेरी
नथ मेरे समीप नाहीं नहीजाणु कहागई तब गुरूकही तेरी तेरेही
पहै देख इसदर्पणमे तब वास्त्री दर्पणमै स्वमुख देखणे लगी तत्समय
ही स्वकंठाभरणमे लगीहुईनथ अपणी आपके
कहीकेहे स्वामी मेरी मेरेहीसमीप नथहै ऐसेही सिद्ध परमेष्टीसें 
सेद्ध परमेष्टी भिन्न नाहीं प्रश्न मैतो सिद्ध परमेष्टीसेभिन्नहु उत्तर

जैसे सूर्यसे अंधकार भिन्नहै तद्वतूं सिद्ध परमेष्टीसे भिन्नहै तबलो
तप जप व्रत शील दान पूजादिक शुभाशुभ कर्म क्रिया करते संते बी क
दाचित् कोई प्रकार बी सिद्ध परमेष्टीसे येक तन्मयि नहुवो नहोवैगो नहै वहु
रि जैसे सूर्यसे प्रकास येक तन्मयि अभिन्नहै तद्वत् तूं सिद्ध परमेष्टीसे ये
क तन्मयि अभिन्नहै तोबी तूं सिद्ध परमेष्टिसे येक तन्मयि अभिन्न होणे केअ
र्थ क्रोड जप तप व्रत शील दान पूजादिक शुभाशुभ कर्म क्रिया करते संते बी
कदाचित कोई प्रकार बी सिद्ध परमेष्टीसे येक तन्मयि नहोवैगो नहुवो यो न
है १ सिद्ध परमेष्टीसे येकताकी अर भिन्नताकी येह दोहूही भ्रांति विकल्प
स्वभाव सम्यक् ज्ञानमै कदापि नसंभवै १ जैसे कंठमै मोतीकी मालहै
मोतीकी माल मोतीकी मालके समीप तन्मयि हीहै ताकूं भरम भ्रांतिसे
अन्यस्थानमे खोजताहै ताकूं गुरु कहीके अन्यस्थानमे मोतीकी माल
हीं तेराही कंठमै मोतीकी मालहै सो मोतीकी मालसै तन्मयि समीपहै ऐ

सेही सिद्ध परमेष्टीहैसो सिद्ध परमेष्टीसे तन्मायि समीपहै १ जैसे सूर्य
के देखणेसे सूर्यकी निश्चयता सूर्यानुभव होताहै तैसैही सिद्ध परमेष्टी
परमातमा सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यकूं देखणेसे सिद्ध परमेष्टी
मातमा सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यकी निश्चयता स्वानुभवता होती
है १ जैसे सूवर्णका कडा मुंदडा कंठी दोरा असरफी आदि
निश्चय स्वभाव दृष्टीमे देखियेतो भिन्न नाही तैसैही स्वस्वरूप स्वानु॰
गम्य सम्यक् ज्ञानमयि सिद्ध परमेष्टी परमातमासे निगोदसे लेकरिके॰
मोक्ष पर्यंत जेती जीवराशि येकेंद्री आदि पंचेंद्री पर्यंतहै सो निश्चय स्व
भाव दृष्टिमे देखियेतो भिन्न नाही १ अपूर्वानुभव देताहूं श्रवण करो
कोईजीव आपकूं सिद्ध परमेष्टीसे भिन्न समजताहै अर आपहीकूं सि
द्ध परमेष्टीसे अभिन्न समजताहै ऐसी येह दोऊ कल्पना जिस जीवके अं
तःकरणमे अचळहै सोजीव मिथ्याद्रष्टीहै १ जैसे लोकीकमे येह कह॰ ४६

णा प्रसिद्ध है के देखोजी तुम समज करिके काम कार्य कर्म कर्ता तो तुमारे येह नुकसाण किस वास्ते होने अर्थात् सत् गुरु का उपदेस बचन द्वारा कोई जीव आपका आपमै आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावकूं समज करिके पूर्वप्रयोगात् शुभ अशुभ काम कार्य कर्म कर्ता है ताका सम्यक् ज्ञान स्वरूपी धनको कदापि नुकसाण होणे को नाहीं २ जैसे लौकिकमै येह कहणा प्रसिद्ध है के देखोजी रस्ता मार्गमे कंटकादिक विघ्न बहुत है बच करिकै जाणा तैसेही कोई जीव सत् गुरू उपदेश बचन द्वारा आपका आपमै आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावकूं तन मन धन बचनसे बहुरि तन मन धन बचन का जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मसें बचाय करिकै बच करिकै फेर तीनसै तेतालीस राजू प्रमाण येह लोक तामै बच करिकै भ्रमण करै तोबी स्वभाव सम्यक् ज्ञान है सो संसारमै फसणेको नाही १ जैसे चक्की का पाटके

पर बैठी मखीहै सो चक्की को पाट चोतरफ गोल फिरताहै ताकेऊपर बै
ठी मखीबी फिरतीहै तैसैही स्वभावसे अचल सम्यक् ज्ञानमयि परमात
मा संसार चक्रके ऊपर फिरताहै तोबी अचलको अचलहीहै १ जैसे स
मुद्र स्वभावमै जैसाहै तैसाहै तोबी व्यवहार नयात् समुद्रके कीनारो ह-
द् प्रमाणहै वास्तै समुद्र बंध्योहै बहुरि समुद्रकूं कोई बंध कर्यो नाही वा
सोही समुद्र मुक्तहै तैसैही स्वयंसिद्ध परमातमा व्यवहार नयात् बं
मुक्तहै स्वभाव सम्यक ज्ञानमै स्वानुभव दृष्टीमै देखिये तो बंधमुक्त-
रहो परंतु बंध मुक्तकी कल्पनाको अंसबी नसंभवे १ जैसे सूर्य
प्रकार नाही तैसे येह जगत् संसार स्वानुभव सम्यक्ज्ञान-
भीतर नाहीं १ जैसे सूर्यका अर अंधकारका येक तन्मयि
ज्ञानमयि परमातमाका अर जगत संसारका येक तन्म-
१ जैसे बकरी मंडलीमे जन्म समय सैही भरमसे पर बसान

सिंह रहताहै अरदूजो सिंह जंगलमै स्वाधीन रहताहै दोहूंही सिंहकी-
जाति लक्षण स्वरूप नामादिक येकहीहै परंतु परस्पर अभेदमै भेदनि-
श्चयहै तैसेही निगोदसें लेकरिके मोक्ष वा सम्यक्ज्ञानस्वभावपर्यंन जी
वराशि नामजाति लक्षणादिक युक्त येकहीहै परंतु परस्पर अभेद स्वरू
पमै भेदहै येह भेदबुद्धि अरभेदबुद्धीकी कल्पना येह बिघ्न दूख सतगुरू
के चरणकी सरण होणेसें मिटेगा १ जैसे येक मोटा चोडा लंबा बहुता
स्तीर्ण परमाणका स्वच्छ दर्पणमै अनेक प्रकारकी अनेक चलाचल रंग-
बिरंगी वस्तूदीखैहै तैसेही स्वच्छ ज्ञानमयि दर्पणमै येह अनेक
मयि जगत संसार दीखताहै १ जैसे सूर्यका प्रकासमै कोई
है कोई पुन्य कर्ताहै कोई मर्ताहै कोईजनमताहै इत्यादि ताका श
भ पाप पुन्य जन्म मरणादिक सूर्यकूं लागतानाही सूर्यसै येह जन्म मर
ण पाप पुन्य तन्मयि होतेनाही तैसेही सम्यक्ज्ञानमयि स्वभावस्व

पर बैठी मखीहै सो चक्की को पाट चोतरफ गोल फिरताहै ताकेऊपर बै
ठी मखीबी फिरतीहै तैसेही स्वभावसे अचल सम्यक्ज्ञानमयि परमात
मा संसारचक्रके ऊपर फिरताहै तोबी अचलको अचलहीहै १ जैसे स
मुद्र स्वभावमे जैसाहै तैसाहै तोबी व्यवहार नयात् समुद्रके कीनारो ह-
द् प्रमाणहै वास्ते समुद्र बंध्योहै बहुरि समुद्रकूं कोई बंध कस्यो नाही वा
स्ते सोही समुद्र मुक्तहै तैसेही स्वयंसिद्ध परमातमा व्यवहार नयात् बं
धमुक्तहै स्वभाव सम्यक् ज्ञानमै स्वानुभव दृष्टीमे देखियेतो बंधमुक्त-
तो दूरहीरहो परंतु बंध मुक्तकी कल्पनाको अंसबी नसंभवे १ जैसे सूर्य
के भीतर अंधकार नाही तैसे येह जगत् संसार स्वानुभव सम्यक्ज्ञान-
मयि सूर्यके भीतर नाहीं १ जैसे सूर्यका अर अंधकारका येक तन्मयि
ता नाहीं तैसेही ज्ञानमयि परमातमाका अरजगत संसारका येक तन्म-
यिता नाही १ जैसे बकरी मंडलीमे जन्मसमय सेही भरमसे परबसान

गुरूपदेसात् पीउगा ऐसे करते करते मरण कारिके कहा के कहा चलेजा
तेहै १ जैसे धोबी मैला कपडा वस्त्र कूं साबण क्षार शिलादिक निमत्तसे
धोताहै परंतु धोबी वस्त्रसे साबणसै क्षारसै शिलादिकसे तन्मयि होय
नही धोताहै तैसैही शुभके लगी अशुभ कालिमाताकूं सम्यक् द्रष्टी धो
ताहै परंतु सम्यक् द्रष्टी शुभाशुभसै अर शुभाशुभका जेता व्यवहार कि
याकर्म है तासै तन्मयि होयनहीं धौताहै ॥ ॥दोहा॥ ॥ भेदज्ञानसा
बणभयो समरसनिर्मलनीर॥ धौवीअंतरआतमा धोवैनिर्मलचीर॥१
जैसे कोरा नवीन एक माटीका कलसकेऊपर पवन प्रसंगात् रेणु आय लागे
है तैसे सम्यक् द्रष्टीके कर्मरेणु आय लागतीहै १ जैसे बहुत वर्षसे भर्यो
तेलपूरितचीकणो माटीको कलस ताकेऊपर पवन प्रसंगात् रजरेणु आ-
लागतीहै तैसे मिथ्याद्रष्टीके कर्म वर्गणा आये लागतीहै १ जैसे कोई
मूक पुरुषका मुखमें मिश्री गुड खांड डालदिया मूक कूं मिष्टानुभव हुवो

प्रकासमे पाप पुन्य जन्म मरण कर्मादिक शुभाशुभ होतेहै ताका फल
अर मूलादिकहै सो सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव सूर्यकूं पहोंचतेनाही ला
गते नाही तन्मयि होते नाही १ जैसै सूर्यके इच्छा सूर्यकूं देखणेकी नसं
भवै तैसैही ज्ञान मयि परमात्मा कूं ज्ञान मयि परमात्मा देखणेकी इच्छा
नसंभवै २ जैसै धोबी निर्मल नीरका भस्या तलावमे कपड़ा धोताहै ता
कूं लागीजल पीणेकी पिपासा सो मूर्ख धोबी विचार कर्ताहैके येह २ दो
य बस्त्र धोय पश्चात् जल पीउंगा दोय बस्त्र धोये पश्चात् फेरबी येही विचा
र कीयाके येह धोय पश्चात् येह धोय पश्चात् ऐसै अनुक्रम संकल्प विचार
करतो करतो धोबी निर्मल नीरको निर्मलनीरहीमे धोबी मरगयो परंतु जल
नही पीयो तैसैही सर्वजीव राशि निर्मल सम्यक् ज्ञान मयि जलका भस्यास
मुद्रमे परबस्तुकों उजल कर्ताहै येह करे पश्चात् गुरुके उपदेस द्वारा सम्यक्
ज्ञानरूपी नीर पीय करि स्खवी होहुंगा येह करे पश्चात् सम्यक् ज्ञान मयि नीर

वहार विरुद्धहे तथापि बालककी स्थिरता करवके अर्थ जो पुरुष व्यवहार-
विरुद्ध वचन बोलताहे तैसैही शिष्य मंडलीकेस्रव स्थिरताके अर्थ गुरु
स्यात् अपभ्रंश बचन बोलताहे हेतुगुरुका उत्तमहे १ जैसे अग्नीमे कु-
पूर चंदनादिक डाल दीजियेतिसकूं बी अग्नीजलय देतीहे बहुरि चर्म मला
दिक डाल दीजिये तिसकूं बी अग्नी जला देतीहे तैसैही सम्यक्ज्ञानाग्नि
विषे येह शुभाशुभ पाप पुन्यादिक जल जातेहे अर्थात् नहीरहताहे १ जै
से येकजात येक लक्षण येक स्वरूप येक तेज येकगुणादिक युक्त रतनरा-
सि दूरसे येकहीसी दीखतीहे परंतु हेवह रतन भिन्न भिन्न तथा जैसे अग्नी
का अंगाराकी रासि दूरसे येकहीसी दीखतीहे परंतु हे वह अंगारा भिन्नभि
न्न तैसैही जीवराशि भिन्न भिन्नहे गुण लक्षण जाति नामादिक सर्वका ये-
कहे १ जैसै दधी मथन करिके तिसको माखण निकास करिके पीछाको पी
छो तिस छाच तक्र मह्वामे डालदेतो बी वो माखण छाच तक्रमे मिल करि-

परंतु कह नहीसक्का तैसैही कोईजीव कूं गुरुपदेशात् आपका आपकूं आपमै आप भयि स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव हुवो परंतु कह नहीसक्का
१ प्रश्न गुरुस्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव कैसे देता होगा उत्तर
गुरूकी गुरूही जाणै तथापि कुछ कहताहूं जैसे कोई चंद्र दर्शणकोइच्छक गुरूसे बूजीके चंद्र कहाहै तब गुरू कहीके वो चंद्रमा मेरी अंगुलीके ऊपर इत्यादिक अनेक प्रकारसै गुरू स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव देताहै
१ जैसे किसी पुरुषको स्त्री अपणे भरतारसे कहीके तुम इस बालककूं लडावो गोदमै लेवो तोमै घरकार्य करूं तव वो पुरुष स्वपुत्रकूं अपणी मैं लेकरि लडाणे लाग्यो ततसमय बालक रूदन करणे लागो तब पुत्रको पिता तिस बालककी थिरता रूरवके अर्थ कहताहैके हे पुत्र रूदन मतिकरै वहां अपणी माता बैठीहै इहां बिचारणा चाहियेकी माता तो तिस बालककीहै पुरुषकी नाहीं पुरुषकी तो स्त्रीहै ऽ स्त्रीकूं माता कहणा व्य-

माञ्वी सम्यक् ज्ञानाग्नि तन्मयि होय लाग जावैगी तो अष्ट कर्मादि ना
मकर्म पर्यंत जलाय देगी बाद पश्चात् जो बचणेजोग है सो को सोही स्व
स्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु अषंड अविनासी र-
हगा १ जैसै काष्ट पाषाण चित्रामकी ऽस्त्री आकार फूतलीकूं कोई कामी
तीव्र काम राग भावसै देखते देखते ताको वीर्य बंध छूट जाताहै तैसैही
कोई धातु पाषाणकी पद्मासण षड्गासण ध्यानमुद्रायुक्त वैराग सूचक
मूर्तिकूं कोई मुमुक्षु तीव्र अपणा वीत राग भावसहित देखैतो तत्काल ताका
अष्टकर्मबंध छूट जाताहै १ जैसै व्यभिचारणी ऽस्त्री स्वघर कार्यादिक कर्ती
है परंतु ताके अंतः करणमै वासना व्यवचारि पुरुषकी तर्फ लगी रहतीहै तै
सैही सम्यक्द्रष्टी पूर्वकर्म प्रयोगात् संसारीक काम कार्य कर्ताहै परंतु अं
तः करणमै ताके दृढ अचल वासना स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान
कीहै अर्थात् स्वसम्यक् ज्ञानकूं अर आपकूं अग्नि उष्णतावत् येक तन्मयि

के येक होणेको नाहीं तैसैही गुरु संसार सागरमैसे जीवकूं निकास क-
रिके पीछाको पीछो संसार सागरमै डाल देवैतोबी वोजीव संसार साग
रसै अग्नी उष्णतावत् मिल करिके येक होणेको नाही १ जैसे किसीके
पास सर्पकाजह्नर विष निवारणी बुटी जडी मंत्रसमी पहै वो सर्पसे नही
डरताहै तैसे किसीके पास स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञान तन्मयिहै वो संसार-
सर्पसे नही डरताहै १ जैसे कुंभकारको चक्र दंडादिक प्रसंगात्
बहुरि दंडादिक प्रसंगात् भिन्नहुये पश्चात् बी वोचक्र कुछ किंचित् काल
पर्यंत फिरबि फिरतारहताहै तैसैही कोईजीवका ४ च्यार घातिया कर्म
भिन्नहुये पश्चात् बी पूर्व प्रयोगात् कुछ किंचित् कालपर्यंत संसारमे भ्रम
ताहै १ जैसे सूकी गोवरी छाणा कंडाके येक कणिका मात्रबी अग्नी
गई तो सो अग्नी तिस सूकी गोवरी छाणा कंडाकूं अनुक्रमसे जलायक ५०
रिके भस्म करि देतीहै तैसैही कोईजीवके गुरुप देशात् येक समय काल

मात्मवी सम्यक्ज्ञानाग्नि तन्मयि होय लाग जावेगी तो अष्ट कर्मादि ना
मकर्म पर्यंत जलाय देगी बाद पश्चात् जो बचणे जोग है सो को सोही स्व
स्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु अषंड अविनासी र
हगो १ जैसे काष्ट पाषाण चित्रामकी स्त्री आकार पूतलीकूं कोई कामी
तीव्र काम राग भावसे देखते देखते ताको वीर्य बंध छूट जाताहै तैसेही
कोई धातु पाषाणकी पद्मासण षड्गासण ध्यानमुद्रायुक्त वैराग सूचक
मूर्तिकूं कोई मुमुक्षु तीव्र अपणा वीत राग भावसहित देखै तो तत्काल ताका
अपकर्मबंध छूट जाताहै १ जैसे व्याभिचारणी स्त्री स्वघर कार्यादिक कर्ती
है परंतु ताके अंतः करणमै वासना व्यभचारि पुरुषकी मक लगी रहती है तै
सेही सम्यक्द्रष्टी पूर्व कर्म प्रयोगात् संसारीक काम कार्य कर्ताहै परंतु अं
तः करणमै ताके दृढ अचल वासना स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान
कीहै अर्थात् स्वसम्यक् ज्ञानकूं अर आपकूं अग्नि उष्णतावत् येक तन्मयि

समजताहै मानताहै १ जैसे गुमास्तो दुकान वा कोठीको काम कार्य रा
गद्वेष ममता मोहयुक्त कर्ताहै परंतु ताके अंतः करणमै अचल येह हैके
येह धन परिग्रह बहुरि धन परिग्रहका शुभाशुभ फल मेरा नाहीं सेठ
काहै तैसेही सम्यक् द्रष्टी पूर्वकर्म प्रयोगात् संसारका शुभाशुभ व्य
वहार क्रिया कर्म राग द्वेष ममता मोह साहित कर्ताहै परंतु ताके अंतः
करणमै अचल दृढ अवगाढ येह हैके येह संसारका जेता शुभाशुभव्य
वहार क्रिया कर्म राग द्वेषादिक हैसो बहुरि ताका शुभाशुभ फलहैसो
मेरा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तुका तन्मा
नाही येह संसारका शुभाशुभ कर्मादिकहै सो सर्व तन मन धन
सैं तन्मयिहै तिसीहीकाहै १ जैसे स्वच्छ दर्पणमै अग्नि बहुरि जलके
प्रतिछाया दीखतीहै ताकरिके वो दर्पण उष्ण शीतल नहीं होतो तैसे
ही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य स्वच्छ सम्यक् ज्ञानमयि दर्पणमै संस

शुभाशुभ क्रिया कर्मकी प्रतिच्छाया भाषहोतीहै ताकरिकै वो स्वच्छ-
सम्यक् ज्ञानमयि दर्पण राग द्वेषसै तन्मयि होते नाही १ जैसे आकास-
मै काला पीला लाल मेघ बादल बीजली आदि अनेक विकार होताहै अ
रविगडताहै ताकरिकै आकाश बिकारी नही होताहै तैसैही स्वसम्यक्-
ज्ञान मयि आकाशमै येह क्रोध मान माया लोभादिक होते रहतेबी सोस्व
सम्यक् ज्ञानमयि रागद्वेषादिकसै तन्मयि होते नाही १ जैसे जिस घरमै
अग्नी लागेगी तो घर जलैगा बलैगा परंतु घरके भीतर बाहिर आकाशहैसो
कदाचित् कोई प्रकारबी जलैगा बलैगा नाही तैसेही देह रूपी घर तथा स-
रीर घरमै आधि व्याधि रोगादिक अग्नि लागेगी तो देह सरीर घर जलैगा ब
लैगा परंतु देह सरीरके वा लोका लोकके भीतर बाहिर स्वसम्यक् ज्ञान-
मयि निर्मल आकाश घनहै सो कदाचित् कोई प्रकारबी जलैगा बलैगा वा
मरैगा जन्मैगा नाही १ जैसे सूकी गोवरीके कणिका मात्रबी अग्नी ला-

गजावैतो तिस अग्नी प्रसंगात् सो सूकी गोवरी अनुक्रमसे जलजाती·
है तैसे ही कोहू जीवके सत् गुरू वचनोपदेस द्वारा येक नेत्र टीमकारा·
वा येक समय कालमात्र वी सम्यक् ज्ञानाग्नी तन्मयि लाग जायतो तिस्
जीवका द्रव्यकर्म भावकर्मनोकर्म अनुक्रम पूर्वक जलजाय वलजाय इ
समे कदाचित् कोई प्रकार संदेह नाहीं १ जैसे कोहू ऽस्त्री अपणा स्वभ
र्तारकूं त्यज करिके अन्य पुरुषकी सेवा रमण आदि कर्तीहै सो ऽस्त्री
वचारणी मिथ्यात् णीहै तैसैही कोहू अपणा आपमे आपमयि स्वस·
म्यक् ज्ञान मयि देवकूं त्यज करिके अज्ञान मयि देवकी सेवा भक्तिमे ली·
नहै सो मिथ्यातीहै १ जैसे कोहू मदिरा वारुणी पीवणेका सर्वथा प्र·
कार त्याग करैगो तव मदोन्मत्त पणाका त्याग संभवेगा तैसैही कोहूजीव
जाति लाभ कूल रूप तप बल विद्या अधिकार येह अष्ट मद सर्वथा प्रका
र त्यागेगा तब निश्चय मार्दवजो स्वसम्यक ज्ञान गुणहै तासे तन्मयि होवे·

गा १ जिसके तिल तुसमात्र परिग्रह नाही अर पंच प्रकारका सरीर त-
न्हे तासे कदाचित् कोई प्रकारबी तन्मायि नाही सोही सतगुरुहै १ जे-
से कोइ मद भंगादिक पीवे ताकरिकै मदोन्मत्तहै ताकूं लौकीकजन ऐसे
कहतेहै येह मतवालेहै तैसेही कोई अपूर्व मति मंद मदिरा पीय करिके म-
दोन्मत्त होरह्याहै येह जैन मतवाले वैष्णु मत वाले शिव मतवाले बौद्ध म-
तवाले इत्यादि बहुरि इनकूं कोइ कहके तुम कोणहो तबवह स्वमुखवान्
अपणा आप कहताहै के हम जैन मत वाले हमवैष्णु मतवाले हम शिव
मतवाले हम बौद्ध मतवाले इत्यादि येह मतवाले स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य
सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुसे तन्मयि नाहीं १ जैसे सूर्य अपणा स्व-
भावगुण प्रकास नही छोडे तैसेही स्वसम्यक् ज्ञान अपणा ज्ञान गुणकूं न
छोडै १ जैसे कोइ कंबल अंगकेऊपर ओटकरि मधु छत्ताकूं तोडणे लागे
ताके तत् समय सहस्रादिक लगी मधु मक्षिका तथापि वो पुरुष अडकरह

ताहै तैसैही कोहू जीव गुरुबचनोपदेशात् स्वसम्यक् ज्ञानानुभव
ल ओढलीनी ताकेयेह संसार माक्षिका नही लागती १ जैसे कागपक्ष
बोलताहै तैसैही किसीकूं स्वसम्यक् ज्ञानानुभवको तन्मयिता परमाव
गादता नो हुई नही अर बडे बडे वेद सिद्धांन सास्त्र सूत्र पढतेहै सो का
क भाषित मेवच १ जैसे कस्तूर्या मृगके समीपही कस्तुरीहै परंतु क
स्तुरीकी सुगंध नासिका द्वारा धारण करिकै कस्तुरीकूं इदर उदर
फिरताहै धावता दोडताहै तैसैही जीवके समीपही
न्मयि स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहै ताकूं जीव आकास पाताली
लोकमे खोजताहै अज्ञानी जीवकूं येह खबर नाहीं के जिसकूं
हूं सो बस्तु तो मेरी मेरेही समीपहै मेरा स्वसम्यक् ज्ञानसे तन्मयिहै वा मैंहूं
स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहूं १ जैसे इंद्रजालका खेल मिथ्याहै तै
सैही येह संसारका खेल मिथ्याहै स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा सत्यहै

२ जैसें रुभाकी माया कूटीहै तैसैही संसार की माया कूटीहै स्वसम्यक ज्ञानमयि परमानमा सत्यहै १ जैसैजहां देह नही तैसै तहां जन्म मरण नामादिक नाही अर्थात् जहा देहहै तहांही तिनसै तन्मायि जन्म मरण नामादिक है १ जैसै चलती चकीका दोउ पाटके बीच जेता गहूं चीणा मुंग उडद आदि धान्य क्षेपथे ते सर्व पिसजाते है आटो होजातोहै येक कण दाणु बी नही बचता है परंतु उसी चलती चकीमे कोई कोई बीज लोहाका कीलाके नजीक रहता है सो बच जाताहै तैसेही संसार चक्रके बीच पड्याहै जीव सोतो मरणादिक द्वारा हो करि नर्क निगोदमै जाय पडतेहै परंतु कोई कोई जीव गुरुबचनोपदेस द्वारा आपका आपमे आपमयि स्वसम्यक ज्ञानमयि परमातमाके तन्मायि शरण होजायहै सो जीव जन्म मरणके दुःखसें बचजातेहै १ जैसें सर्पणी १०८ पुत्र जणतीहै जाणीकरिके गोलाकार आपणी देह गोलाकारके बीचि सब पुत्र समुदाय कूं राखि करिके अनुक्रमसे सर्व कूं भक्षण करिजा

तीहै परंतु कोईकोइ गोलाकारमै निकस जातोहै सो बच जातोहै तैसैही
उत्सर्पणी अवसर्पणी का गोलाकारमैसै कोहू जीव निकस करिकै भिन्नहु
वो सोतो बच्यो शेषरहे सो उत्सर्पणीका अवसर्पणीका मुखमैरहै १ जै
ऽस्त्रीकूं पुत्रोत्पत्तीका आदि अंत पूर्वापर सर्व विवर्ण श्रवण करा
वो तथापि तिस बाऊऽस्त्रीकूं पुत्रोत्पत्तीका कदाचित् कोई प्रकारबी सा
क्षात अनुभव होते नाही तैसैही बज्र मिथ्यादृष्टिकूं स्वसम्यक् ज्ञानोत्प
त्तीका पूर्वापर विवर्ण श्रवण करावो तथापि ताकूं सम्यक् ज्ञानोत्पत्ति को
साक्षात् अनुभव होते नाहीं १ जैसै किसीको नाकछिन खंडनहै ताकूंको
दिखावैतो वोनाकछिन अपणादिलमै येह बिचार करै के मेरा
नाक छिनहै इसी वास्तै यो मेकूं दर्पण बतावैहै तैसैही मिथ्यादृष्टीकूं स्व
सम्यक् ज्ञान दर्पण दिखावणा भयाहै १ जैसै बाऊस्त्रीकूं पुरुषका संयो
ग होते संतेबी पुत्र फल लाभानुभव नही होताहै तैसैही मिथ्यादृष्टीकूं

देवगुरुसास्त्र सत् पुरुषांको सतसंग होनेसं ते बी स्वसम्यक्ज्ञान फल
लाभानुभव नही होताहै १ जैसै हंस दुग्ध पाणी मिलेहुयेकूं भिन्नभि
न्न समजताहै तैसै स्वसम्यक्ज्ञानी येह लोकालोककूं आपका आपमै
आपमधि स्वसम्यक् ज्ञानकूं भिन्नभिन्न समजताहै १ जैसै स्वप्नाअव-
स्थामै घरकुटुंब बेटाबेटी ऽस्त्री मातापिता धनधान्यादिक दिखताहै-
ताकूं जाग्रत समय देखियेतो नदीखताहै अर्थात् स्वप्ना अवस्थाका मा
ता पितास्त्री पुत्रादिक सर्व मरजातेहै ताका दुःख हर्ष सोक जाग्रत अव
स्थामै नही होते तैसेही जाग्रत अवस्था समयका माता पिता ऽस्त्री पुत्रा
दिकहै सो स्वप्नामै नही दीखताहै अर्थात् जाग्रत अवस्था समयका मा-
ता पिता ऽस्त्री पुत्रादिक सर्व मरजातेहै ताका दुःख हर्ष सोक स्वप्नाअव-
स्थामै नही होते १ सदाकाल देखता जाणताहै ताके सन्मुख येह स्वप्ना
समयका अरजाग्रतसमयका संसारहोताहै बिगडताहै १ जैसै स्वप्नास

संदी· ५५

दृष्टां·

मय कोई किसीको मस्तग छेदन कियो मारगेल्यो तिस समय आपकूं मर्यो समज्यो मान्यू सोही जायत हुवो नब कहऐ लाग्यो के मैं स्वप्नामें मरगयोथो तैसेही येह जन्म मरण पाप पुन्यादिक स्वप्नाकारवेलहै इस खेलका तमासा देखता जाणताहै सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानहै १ जैसे मनचालो स्वमानाकूं माताही कहताहै परंतु ताको विश्वास क्या क्यूंके कदाचित् अपणी माताकूं अपणी स्त्री मानले तो प्रमाण क्या तैसेही येह मनि मदिरामें मदोन्मत्त येह जैन मनिवाले वाले शिव मनिवाले वेदांतमनिवाले बौद्ध मनिवाले आदि षट् मनिवाले है सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूकूं और से और प्रकार मानले कह देवै तो प्रमाण क्या १ जैसे माटीका ५५

कसें बालक प्रीत कर्ताहै सोबी दुःखीहै बहुरि कोहु सत्य साचा घोटकसे प्रीत कर्ताहै सोबी दुःखीहै कारण उसका घोटककूं कोहू तोडे फोडे अर

तिसका घोटककूं वी कोई चारो दाणु नदे वा ताडै तैसैही कोहूजो मारी-
की पत्थरकी चित्रामकी काष्ठकी झूटी देव मूर्त्तिसै प्रेम प्रीत कर्त्ताहै सोबी
दुःखहीको कारणहै बहुरि कोहु सत्य साचो देवहै तासै बी प्रेम प्रीत कर-
ताहै सोबी दुःखहीको कारणहै अर्थात् स्वसम्यक ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुसै
भिन्नहोय करिकै परवस्तुसै प्रेम प्रीत करैगा सो दुःखानुभवमै लीनहो
रहैगा २ जैसै येक पुरुष पाषाणका देव मूर्त्तिकूं अर धातु मूर्त्ति देवकूं
बहुरि काष्टकी देव मूर्त्तिकूं अर चित्र देव मूर्त्तिकूं बडे प्रेम भावसै ताकी पू
जा प्रणाम कर्त्ताथा दैववसात् पाषाणकी मूर्त्ति तो फूटगई तूटगई अर
धातुकी देव मूर्त्तिकूं चौर तस्कर लेगये बहुरि काष्टकी देवमूर्त्ति अग्नीमै ज
ल बल करिकै भस्म होगई अर चित्रामकी मेघ पवन वा हस्त स्पर्शात् द्वारा
बिगडगई अर्थात् धातु पाषाणादिककी देवमूर्त्तिमै नष्टहोणा आदिम्नन
कदूषण मनक्षानुभवहोता देख करिकै अपणो आपमै आपमयि स्वस-

मय कोई किसीको मस्तग छेदन कियो मारगेरयो तिस समय आपकूं
मस्योसमज्यो मान्यूं सोही जाग्रत हुवो तब कहणे लाग्यो के मैं स्वप्नामे
मरगयोथो तैसे ही येह जन्म मरण पाप पुन्यादिक स्वप्नाकारखेलहे इस
खेलका तमासा देखता जाणताहे सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्
ज्ञानहे १ जैसे मनचालो स्वमाताकूं माताही कहताहे परंतु ताको वि
श्वास क्या क्यूंके कदाचित् अपणी माताकूं अपणीस्त्री मानले तो प्रमा
ण क्या तैसे ही येह मनि मदिरामे मदोन्मत्त येह जैन मतिवाले
वाले शिव मतिवाले वेदांतमतिवाले बौद्ध मतिवाले आदि षट् मतिवा
ले हे सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूकूं और
से और प्रकार मानले कह देवे तो प्रमाण क्या १ जैसे माटीका
कसे बालक प्रीत कर्ताहे सो बी दुःखीहे बहुरि कोइ सत्य साचा घोटकसे ५८
प्रीत कर्ताहे सो बी दुःखीहे कारण उसका घोटककूं कोइ तोडे फोडे और

कूं अज्ञान भाषासे समजावणा १ जैसे कोई कहैके दोहुराजा परस्पर
युद्धकरिरहाहे बिचारसे देखियेतो परस्परकी फोज लडतेहे दोहुराजा
तो अपणे अपणे स्वस्थानमे निमग्नहे तैसेही ज्ञान अज्ञान दोहुही अ
पणा अपणा स्वस्थानमे अपणे अपणे स्वभावमे निमग्नहे अपणे अ
पणे स्वभावहीसे १ जैसे कोहू कहके राजाइस गांवकूं लूटताहे जलादी
यो इसगांवकूं बालदीयो इस गांमकूं बचादीयो इसग्रामकी
परंतु बिचारसे देखियेतो लूटणे मारणे बचाणेका जलाणेका
कार्यहे ताकूं फोज सिपाई जमादार फोजदार आदि कर्तेहे राजा नहि
तहि तैसेही स्वसम्यक् केवलज्ञान राजाहे सोकिंचित् वी शुभाशुभ क्रिया
कर्म नही कर्ताहे १ जैसे सुवर्णका सुवर्णमयि भावकटिकुंडलादि सु
वर्णमयिही होताहे बहुरि लोहाका लोहमयिही होताहे तैसेही स्वस्वरू
सम्यक्ज्ञानका भाव क्रिया कर्म सम्यक्ज्ञानमयिही होताहे बहुरि तैसेहि

म्यक् ज्ञानानुभवगम्य स्वभाव स्वरूप आपहीकूं देव समज करिके चुप चापरहे १ जैसै कोहू पुरुष किसी साहुकार की दुकान को द्रव्य स्वर्ण रतनादिक दूरसै देख करिके कहीके मेरकूं येह जेता द्रव्य रतनादिक रेसे दूर अलगही दीखताहे ताका मेरे त्याग है तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् केवल ज्ञानहे ताके येह संसार लोका लोक का स्व॰ त्यागहे १ जैसै कोई द्रव्यार्थि पुरुष राजाकूं जाण करिके करिके राजाके अनुस्वार चलताहे रहताहे ताकूं राजा द्रव्य देताहे तैसे ही कोहू जीवहे सो प्रथम स्वसम्यक् केवलज्ञान राजाकूं अपणा स्वभावगुणसैं तन्मयि समजकरिके जाण करिके ताकी दृढ परमाव गाढश्रद्धा करि॰ केवल ज्ञान राजाके अनुस्वार चलताहे रहताहे ताकूं केवल ज्ञान राजस्व॰ व सम्यक् ज्ञानमयि मोक्ष देताहे १ जैसै संस्कृत भाषामे मलेंछ नहीं समजे तोहोवैतो मलेंछकूं मलेंछी भाषामें समजावणा तैसेही अज्ञानं

सिणगार करती है सो वृथा है तैसैही मोक्ष मैं गये स्वस्वभाव सम्यक्
तन्मयि होगये निग्रंथ गुरू सो तो अब पलट करिके पीछा आते नाही
वणकी फूतली क्षार समुद्र मै गई सो पलट करिके आती नाही तद्वत् ही स
मजणा अब चले गये निग्रंथ गुरू ताकी आसा धारण करिके संसारिक शु
भाशुभ भोगादिक उत्पत्तीका शुभाशुभ क्रिया कर्मादिक करणा वृथा है १ जै
सै कोइ जन्मसमयसे लगाय अद्यपर्यंत गुड शर्करा खाई नाही अर गुड स
र्करा की वार्ता बिवर्ण कर्ता है सो वृथा है तैसैही कोइ कदाचित् काहू प्रकार
वी स्वस्वरूप स्वयंसिद्ध सम्यक् ज्ञानमयि परमात्मा सै तो तन्मयि हुये नाही
अर उनका गीत वेद पुराण सास्त्र सूत्र स्वमुखात् पढता है बोलता है कहता है
सो सूकपक्षीवत् वृथा है १ जैसै सीलवंती स्त्री स्वघर त्याग कोई काल पर
घर प्रतिबी जावे आवे तो वी फिकर नाही तैसैही स्वसम्यक् दृष्टी पूर्वकर्म प्रि
योगात् कुछ काल संसार मै भी भ्रमण करै तथापि फिकर नाही १ जैसे

उत्पन्नहोतीहै १ जैसे सूर्योदय समय स्वमेवही कमल प्रफुल्लित
है तैसेही किसीके अंतःकरणमै स्वसम्यक् ज्ञानमयि सूर्योदय होतसं
ते मनस्वरूपी कमल प्रफुलित होताहै भावार्थ मनमै बडीकुसी हर्ष
ताहै केहाहाहाहा जिसके प्रकासमे यह लोकालोक प्रगट दीखताहै
ऐसा सूर्यका दर्शण लाभ हुवा अथवा विशेष हर्ष प्रफुलित पणो ऐसो
के जिस सूर्यका प्रकासमे येह लोकालोक जगत संसार जन्म मरण ना·
मानाम बंध मोक्षादिकहै सो सूर्य स्वभावहीसे मैहीहूं २ जैसे फोजतो
है परंतु तामे फोजदार नाही तो वाफोज वृथाहै तैसेही व्रत शील जप तप·
ज्ञान ध्यान दया क्षमा दान पूजादिकतोहै परंतु तामै स्वसम्यक् ज्ञानमयि
गुरूनही तो वह व्रत शीलादिक वृथाहै १ जैसे कोई ऽ स्त्री को
समैजाय कोरिके तत्रस्थलही मरगयो अब वा स्त्री त्तिस भर्तारकी
रण करिके भोगादिक उसत्तीका सिणगार काजल टीकी मेंदी नयनी आर्

है मानताहै दूजो ऐसा नदीहै हो संसारका कार्य कर्म कर्ताहै तामें यक दो
दूजो निर्दोस १ जैसें सूकपक्षी स्वमुखात् रामरामराम बोलताहै परंतु
रूप सम्यक्ज्ञानमें तन्मयि बीज वृक्षवत् तथा जल कल्लोलवत्
ऐसा रामकूंतो जाणतोनाही। फिरवो सूक पक्षी स्वमुखात् रामराम बोलता
है सो वृथाहै तैसैही मिथ्याद्रष्टी स्वयंसिद्ध स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानम
इकूं तोजाणतो नाही अर स्वमुखात् णमोसिद्धाणं ऐसे बोलताहै सो वृ
थाहै इहां विधि निषेधसे स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु
यिनसमजणा १ जैसे दीपज्योतिके भीतर कालो काजल कलंकहै तैसेंहि
स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञान दीपज्योतिके प्रकासमे कर्मसे तन्मयि कर्म कलंकहै
इहां कोई मिथ्याद्रष्टी दृष्टांतमें तर्कस्थापन करिके स्वसम्यक्ज्ञानानुभवनो
नही ग्रहण करैगो अर सून्यदोष ग्रहण करैगो क्योंके दीपज्योतिमे कालो
कलंक काजलहै परंतु दीपज्योतिके बुजगये पश्चात् काजल वी कहांहै अर

दयहोने प्रमाण तत्काल तत्समयही अंधकार उपसम होजातेहै तैसैंही किसीके अंतः करणमै स्वसम्यक्ज्ञान सूर्योदय होते प्रमाण तत्काल समयही मोहांधकार उपसम होजातेहै १ जैसे व्यभचारणी स्त्री अ

स्वघर त्याग करिकै परघर नही जाती आतीहै तथापि ताकी वासना व्यवचारी पुरुषकी तरफ लगी रहतीहै तैसैही जिसकूं स्वस्वरूप सम्यक् नानुभवकी अचलता अवगाढ परमावगाढता नाही ऐसा मिथ्यादृष्टीकी बासना भाव शुभाशुभ संसारकी तरफलगी रहतीहै १ जैसे जिस कोठे वा दुकानको कामकार्य सेठ कर्ताहै ममतामाया मोहसहित तैसैही गुमास्तो ममता माया मोहसहित कर्ताहै परंतु भीतर परिणाम भेद भिन्न भिन्नहै तैसैही किसी कूं गुरुवचनोपदेशात् स्वसम्यकज्ञानानुभव होणे जोग होचुके येकतो ऐसो बहुरि दूजो ऐसोके संसारकूं वा लोकालोककूं बहुरि अपणा स्वभाव सम्यकज्ञानकूं येक सूर्य प्रकासवत् निश्चय

नानुभव बिना ज्ञानहैसो जगत संसारवत् भाषहोताहै १
चांदी भाषहोतीहै तथा मृगतृष्णामैनीर भाषहोताहै तैसैही स्वसम्य
क्ज्ञानमै तन्मयिवत् येह संसार जगत भाषहोताहै १ जैसै अंधसमूह
कूं खेंचतनयन प्रवीण तैसै आतमज्ञानबिना होय मोहमैलीन १
आकाशके धूलि मेघादिक नही लागते तैसैही स्वसम्यक्ज्ञानके प
न्ये वक्षरि पाप पुन्यका फल नही लागते १ येह लोकालोक जगत संसार
कूं स्वसम्यक्ज्ञानहैसो सहज स्वभावहीसे जाणताहै ताकी विधि नि
षेद कोण प्रकार १ जैसै सूरबीर नरेश मलेंच्छादिक देसकूं जीत करिकै
मलेंच्छादिकदेसहीमै रहताहै तैसैही स्वसम्यक्ज्ञानी क्रोध मान मा
या लोभ वा विषय भोगादिककूं जीत करिकै तिसही विषय भोगादि
कमै रहताहै १ तन्मयि तत्स्वरूप होय करिकै नही रहताहै १ जैसै
भीतर बाहिर मध्य आकाशहै सो घटकूं कैसै त्यागै अरग्रहणवा

दीपज्योतिबी कहांहै ऐसी तर्क द्वारा शून्यदोष ग्रहण कर्त्ताहै सो
स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभवसे शून्यहै मिथ्यादृष्टीहै १ पंचेंद्रियकूं
बहुरि पंचेंद्रियका जेता शुभाशुभ विषय वा भोगोप भोगादिककूंसह
ज स्वभावहीसे जाणताहै देखताहै सोही केवलज्ञानहै ऐसे नही स
मजणा मानणा कहणाके घ्राणेंद्रियका विषय भोगकूं जाणताहै
कुछ ज्ञान औरहै जिव्हा इंद्रियका विषय भोगाकूं जाणताहै सो कुछ
ज्ञान औरहै ऐसैही कर्णेंद्रियका स्पर्श इंद्रियका विषय भोगादिककूं जा
णताहै सो कुछ ज्ञान औरहै बहुरि तनमनधन बचनादिककूं बहुरि तन
मन धन बचनादिकका जेता शुभाशुभ क्रिया कर्मकूं और
जाणताहै सो कुछज्ञान औरहै ऐसी भेदाभेदकी कल्पना कदा
ई प्रकारवी स्वभावसम्यक्ज्ञानसे तन्मयि नसंभवे २ जैसै सूर्यकाप्र ६०
कासमे पडीरस्सी रात्रिसमय सर्प भाष होतीहै तैसैही स्वसम्यक्ज्ञा

वरनाहीं तैसैही जगतऋोरजगदीस येह दोन्यूही बरोबरहै परंतु मूलस्व
रूप सम्यक्ज्ञान स्वभावमै दोन्यू बरोबरनाही १ जैसैबिन धूम्रकी
सोभायमानहै तैसैही भ्रमरूपी धूम्र करिकेरहित स्वसम्यक्
भाव वस्तु सोभायमान भाषतीहै १ जैसेज्वरके ऋंतसमय ऋन्नप्रिय ला-
गताहै तैसैही शुभाशुभ संसारके ऋंत स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानानुभव
यलागताहै १ जैसे कुकर्दम राजा स्ववर्गकूं त्याग करि पर वर्गसूं मिश्रि-
तह्लोय मर्णादिक दुःखकूं प्राप्त हुवा तैसै ही कोहू स्वस्व भाव सम्यक्ज्ञान-
कूं छोडकरिके परस्वभाव परवर्गसे ऋापकूं तन्मायि वत् समझताहै मान-
ताहै सो जन्म मरणादिक संसारका दुःख भोगताहै १ जैसै मही मंडर
दीको प्रभाव एकताहीमे ऋनेक भांतनीरकीझरनहै पत्थरकोजोर तहां-
धारकी मरोड होय कंकरकी खानी तहांझागकी झरनहै पवनकीझकोर तहां
चंचल तरंग उठै भूमिकीनीचान तहांभवरकी पडितहै तैसैही एकस्वस्वरूप

।येह जगत संसारके भीतर बाहिर मध्य स्वसम्यक् ज्ञानहे सो
क्या त्यागे अर क्याग्रहण करे १ जैसे समुद्रकेउपर कल्लोलउपजते
विनसतीहे तैसेही स्वसम्यक् ज्ञानमाथि समुद्रमे वह स्वमा समयको·
जगतउपजतोहे बहुरि जाग्रत समयको जगत विनसताहे बहुरिजा
समयकोजगतउत्पन्न होताहै अर स्वप्न समय कोजगत विनसता
हे १ जैसेजन्मांध रतन स्वर्णादिकका आभूषण पहरताहे सोवृथा
हे तैसेही स्वसम्यक्भाव सम्यक्ज्ञानानुभवकी परमावगाढविना ब्र·
१ शील तपजप नेमादिक संपूर्ण वृथाहे १ जैसे कोऊ पुरुष वृक्ष कुंप
काडिकरिके स्वमुखात् कहकेमे बंध मोक्षसें कब भिन्न होऊगा तैसेही बंध
मोक्षसें भिन्न होणेकी इच्छा करताहे सो स्वस्वभाव सम्यक्ज्ञान रहित मू
र्ख मिथ्या दृष्टीहे १ भावाभाव विकारहे सो आपणे आपणे स्वभावहीते
हे १ जैसे तोलमे गुंजा और स्वर्ण बराबरहे परंतु मूल स्वभावमे बरो·

त्हदय हानमैनहींआवे १ तथा जबतक हे अज्ञान तबीतक कुटंम कर्ब ईहै ज्ञान हुवा तो आतमा आपमै आपसमाहीहे १ जैसे जैसी प्रीत प्रेम घर कुटुंब बेटा बेटीसै है तैसै ही स्वसम्यक ज्ञानमयि परमातमासै तन्मयि प्रेम प्रीत अचलहोय तो सहजा विना यतन विना परिश्रम ही संसार शुभाशुभसे प्रेमराग छूटजाय १ जैसे सूर्यके सहजही अंधकारका त्यागहे तैसे ही स्वसम्यक ज्ञान सूर्यके सहज स्वभाव होसै येह भ्रमजाल संसारहे त्यागहे १ जैसे कोहू पुरुष ऽस्त्रीकूं भोगताहे परंतु आप स्त्रीसे बहारे ताका भाव क्रिया कर्म फलसै तन्मयि तत्स्वरूप होय करिके स्त्रीकूं नहीं भोगताहे तैसै ही स्वसम्यक ज्ञानमयि परम ब्रह्म परमातमा पुराण पुरुषोत्तम पुरुषहे सो सर्व संसार भ्रम जाल मायास्त्रीकूं भोगताहे परंतु संसार भ्रमजाल मायासे जैसे अंधकारसे सूर्य भिन्नहे तदवत् संसार भ्रमजाल मायासे भिन्न होकारे भोगताहे अर्थात् संसार भ्रमजाल माया स्त्रीसे अर

 सम्यक् ज्ञान मई आत्मा है वहुरि अनंत रसमयी पुद्गल है तिन दोहु का पुष्प-
 सुगंधवत् तथा घट आकाशवत् संयोग होते संते विभावकी
१ स्वसम्यक् ज्ञानानुभव हुये पश्चात् बी कुछ काल पर्यंत पूर्वकर्म
न् सम्यक् दृष्टि संसार में भ्रमण कर्ता है कैसे जैसे कुंभकार को चक्र दंड कूं
भकार आदि प्रसंगात् परिभ्रमण करे है परंतु दंड कुंभकार आदिक
संगसे भिन्न हुये पश्चात् बी कुछ काल पर्यंत परिभ्रमण करे है तैसे १
पर जो तन मन धन बचनादिक कूं अर इन का शुभाशुभ व्यवहार क्रिया क
र्म फल कूं जाणता है तैसे ही पलट करिके आपकूं ऐसे जाणे के यह तन
न धन बचनादिक कूं वहुरि इन तन मन धन बचनादिक का जेता शुभाशुभ
व्यवहार क्रिया कर्म फल है ताकूं मैं के द्वारा मैं जाणता हूं यह मेरा स्वस्व
रु सम्यक् ज्ञान कूं जाणते नाहीं ऐसे आपकूं जाणे सो ही कहीहे
मजकार घर नही जाणे दूजा कूं क्या समजावे भ्रमण करे संर

रहै ताकीहै सोतासे तन्मयिहै १ जैसे स्वच्छ दर्पणमे अग्नीकी प्रतिछाया
तन्मयिवत्सी दीखतीहै तासेतो वो दर्पणतो गरम उष्ण नहीं होते बहुरि
तिसही स्वच्छदर्पणमे जलनीरकी प्रतिछाया दीखती है तन्मयि वत्सी
तासे तो दर्पण शीतल नही होते तैसैही स्वच्छ सम्यक् ज्ञान मयि दर्पणमे
काम कुशीलादिक रागमयिकी छाया भाव भाष होते संते तो रागमयि हो-
तेनाही बहुरि शील व्रतादिक वैराग मयिकी छाया भाव भाष होते संते वै
राग मयि होते नाही ऐसे स्वच्छ सम्यक् ज्ञान मयि स्वभावसे येह राग द्वेष-
तन्मयि नाही १ जैसे जलमे चंद्र प्रतिबिंबहै सो पकडयामे हस्तमे नही आ
वै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञान मयि सिद्ध परमेष्ठी द्रव्यकर्म भावकर्म नो कर्मादि
क बंधमे नही आते १ जैसे गोमटनाम पर्वत केऊपर बाहुबली राजसंपदा छो
ड करिके धनधान्य सुवर्ण रतनादि वस्त्र पर्यंत बाह्य परिग्रह छोड करिके
नग्नदिगंबर होय करिके खडेरहे ध्यानमे ऐसा लीन रहेजो वज्र पातादिक-

सं·दी ६३ दृष्टां·

का भावक्रिया कर्म फलसै तन्मयि नत्स्वरूप होय करिकै नही भोगताहै १
जैसे स्त्रीबी पुरुषकूं भोग देतीहै सो पुरुषसै तन्मयि होय करिकै नाही दे·
तीहै तैसेही संसार भ्रमजाल मायास्त्रीहै सो स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानम·
यि पुराण पुरुषोत्तमकूं भोग देतीहै सो पुरुषसै अलग होय करिकै देतीहै
तन्मयि होय करिकै भोग नही देतीहै १ जैसो काजलसै कालो कलंक
यिहै तैसेही तन मन धन बचनादिकसै बहुरि जेता तनमन धन
कका शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म फलहै तासै अज्ञान् तनमईहै १
सै स्वच्छ दर्पणमै कृष्ण वस्त्रकी प्रतिछाया काली
है सो निस दर्पणकी नाही कृष्ण वस्त्रकीहै सो कृष्ण वस्त्रसै तन्मयिहै
ही स्वच्छ सम्यक् ज्ञानमायि स्वभाव दर्पणमै येह द्रव्यकर्म भावकर्म
यि संसारकी प्रतिछाया कर्म कलंकमयि तन्मयि वत्सी दीखतीहै सो स्व ६३
च्छ सम्यक् ज्ञानमायि दर्पणकी नाहीं द्रव्य कर्म भावकर्म नो कर्ममयि संसा

है सोकेसो इसभ्रमजालसंसारमै डूबैगा वा कैसै गुप्त ह्योवैगा १ जैसै
घटकहिये घीवको घटकोरूपनधीव नैसैत्यौंबर्णादिकनामसे जडतारू-
हनजीव १ जैसोरवांडोकहियकनको कनकम्यानसंजोग ॥ न्यारोनि
रखनदेखिये लोहकहसबलोक ॥ २ ॥ जैसैकोहू अग्नीसे जलताहुवा
घरमैसे निकस करिके बाहिर सडक वा मारग चोगानमै खडो रह करि पुका
रताहै के यावस्तु जलतीहै अमुकीवस्तबलतीहै तासे कोहु कहके तूं तो
नही जल्यो नही बल्यो तूं तो नही जलताहै नही बलताहै तब वो कहके मै
तो नही जलताहूं नही बलताहूं मैनो नही जल्यो नही बल्यो यह घरजलता
है बलताहै अर घरके भीतर अमुक अमुक वस्तू जलती
कोहु मुमुक्ष गुरुपदेशात् इस भ्रमजाल संसारसे अलग होय करिके ऐ
सै पुकारताहै के यो मर्यो वो मरताहै मैतो नही मर्यो नमरताहूं इत्यादि-
कोहु मुमुक्षनो ऐसा बोलताहै बहुरि जैसे बलताजलताहु वा घरमैसेके

स्वशरीरपै गिरे तोबी चलायमान नही हुये सर्वांगमै जिनके सर्प और वृक्ष लता लपटगई मौनचलरहित इत्यादि अवस्था पर्यंत पहोंचगये येक वर्ष पर्यंत खडेरहे तथापि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानानुभवकी परमावगाढतासे तन्मयि नही भये कारण ताके अंतः करणमै सूक्ष्म अनिर्वचनीय येह वासना रहीके मै भरतकी प्रथ्वीकेऊपर खडाहूं पूर्वोक्त दिशा अवस्थासे सर्वथा प्रकार भिन्नहुये तब स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकी परमावगाढतासे तन्मयि सूर्य प्रकाशवत् मिले १ गुरू भ्रमजाल संसार से सहजही भिन्न करदेताहै १ जैसे जलकुंडमै जलकेऊपर तेलबिंदू तरतीहै तैसे । लोकालोकजगत संसारकेऊपर वा पंचभूत वा पुद्गल पिंड भाव राग द्वेष केउपर तथा काम क्रोध कुशील आदिकजेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया करताकाजैसा तैसा फलहै ताके सर्वकेऊपर स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव स्वरूप परमब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्ठी तरता

है सोकेसो इस भ्रमजालसंसारमे डूबेगा वा कैसे गुप्त होवेगा १

घटकहिये घीवको घटकोरूपनघीव नैसैत्यौंबर्णादिकनामसे जडतारु
हनजीव १ जैसोरखांडोकहियकनको कनकम्यानसंजोग ॥ न्यारोनि
रखनदेखिये लोहकहसबलोक॥२॥ जैसे कोहू अग्नीसे जलताहुवा
घरमैसे निकस करिके बाहिर सडक वा मारग चोगानमे खडो रहकरि पुका
रतोहैके वावस्तुजलतीहै अमुकी वस्तबलतीहै तासे कोहु कहके तूं तो
नहीजल्यो नही बल्यो तूंतो नही जलताहै नही बलताहै तबवो कहके मैं
तो नही जलताहूं नही बलताहूं मैंनो नही जल्यो नही बल्यो येह घरजलता
है बलताहै अर घरके भीतर अमुक अमुक वस्तू जलती १

कोहु मुमुक्ष गुरुपदेशात् इस भ्रमजाल संसारसे अलग होय करिके ऐ
सै पुकारताहै केयो मरयो वो मरताहै मैंतो नही मरयो नमरताहूं इत्यादि
कोहु मुमुक्षतो ऐसा बोलताहै बहुरि जैसे बलता जलताहुवा घरमैसेको

हु निकस करिके बाहिर सडक चोगानमै दिलका दिलमै येह बिचार कर ताहै के घरजलगयो बलगयो अर घरके भीतर शुभाशुभ अमुकी सोबीजलगई बलगई अब किसकूं क्या कहूं यदि कहूं तो क्या वह वस्तु अब अमुकी शुभाशुभ लाभ होएगे की नाही वास्तै बोल वृथाहै तैसेही कोइ मुमुक्षु गुरूपदेशात् भ्रमजाल संसारसे अल गहुये पश्चात् बिचार द्वारा देखताहै के पुद्गल धर्माधर्माकाश काल इन पांचमै ज्ञानगुण स्वभावहीसे नाही अर मेरा स्वरूप स्वभावहै सो अब गुरु कृपाद्वारा ज्ञानसै तन्मायिहै वास्तै बोलणा वृथाहै ऐसै कोइ मुमु- क्षु नबोलताहै १ जैसै ज्वरके जोरसे भोजनकी रुचिजाय तैसैही मोह कर्मसे अपणा स्वभाव सम्यक्ज्ञान कूं येक तन्मायि समजताहै मानना है कहताहै ऐसा मिथ्या दृष्टीकू स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानानुभव सूचक उपदेस प्रियनही लागतेहै १ जैसै सूर्यका प्रकाशमै अनेक प्रकारकी

भाशुभ वस्त काली पीली धोली हरित रतनदीप चमक दमक पाप ग्राप
राध देणा लेणा दान पूजा भोग जोगादिककूं देखताहै ग्रर सूर्यका प्र-
कासकूं ग्रर सूर्य कूं नही देखताहै सो मूरखहै तैसैही स्वस्वरूप सम्य-
क् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यका प्रकाशमै येह लोकालोकजगत संसार का
म कुशील क्रोध मान माया लोभादिक दीखताहै ताकूं तू मिथ्या दृष्टी दे-
खतोहै ग्रर पलटवा उलट हो करिके स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञान मयि स्वभा
व सूर्य परमातमाहै ताकूं नही देखतोहै सोही मिथ्या दृष्टीहै १ स्वभा
व सम्यक्ज्ञानहै तासै कोई वस्त तन्मयि नाहीउसी वस्तुका स्वभाव स-
म्यक ज्ञानके त्यागहै १ मरजावै जलजावै गलजावै बलजावै इत्यादि
ग्रनेक प्रकारका शुभाशुभ कष्ट करते संतेबी स्वस्वरूप स्वानुभवगम्यस
[illegible]ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्टीका प्रतक्ष्यानुभवकी
[illegible] ग्रचलताका ग्रखंड लाभ नहीहोवै सतगुरू महाराज स

हज बिना परिश्रम शुभाशुभ कष्ट न करते संतेही सदा काल ज्ञान मयी
गतीज्योतिका तन्मायि मेल करादेताहै धन्यहै गुरू १ बेद कहिये केव-
लीकी दिव्यध्वनी सास्त्र कहिये महामुनीका बचन तिनसेवी सो स्वस्व-
रूप सम्यक्ज्ञान मयि सदाकाल जागती ज्योति परब्रह्म
नहीजाणवामे आवे वहुरि वो सम्यक्ज्ञान मयि सदाकाल जागतीज्यो
ति परमातमाहैसो पांचयंद्री षष्ठम मनसैवी मन स्वानुभव नहीजाण-
वामै आवै बहुरि सतगुरुसहज स्वभावहीसैबिना परिश्रम ही सदा
कालजागतीज्योति ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्टीकी तन्मयि-
ता कर देताहै गुरु धन्यहै १ मनकूं बडे आश्चर्य होताहै क्याके पांचइंद्री
षष्ठम मनसै अर केवलीकी दिव्यध्वनीसे वहुरि
दणे बाचणेसैतो वो सम्यक्ज्ञान मयि सदाकाल जागतीज्योति नहीं-
जाणवामै आवे फेरगुरू कैसे दीखाते होगे कैसै जनादेते होगे क्या कह

तेहोगे अर शिष्यबी कैसै समजता होगा हाहा हाहा गुरु धन्य है हाय खे:
द गुरू नही होतेतो मै इस भ्रमजाल संसारसे भिन्न कैसै होता १ जैसे
कके अंकबिना बिंदु प्रमाणभूत नाही तैसै येक गुरु विना त्यागी
गी सन्यासी व्रत शील दान पूजा शुभाशुभ आदिक प्रमाण भूत नाही १
जैसे बीज राखि स्रव भोगवै जो किसाण जगमांहि तैसै स्व स्वरूपी
कु ज्ञान मांयि सम्यक्‌ दृष्टी है सो अपणा आपमै आप मयि स्वभाव धर्म
कूं आपका आपमै आप मयि समज करि कै पूर्व पुण्य प्रयोगात् विषय-
भोगादिक का स्रव भोग नाहे १ जैसे सुपेद काष्ट अग्नीकी संगतीसे कृ
ष्ण काला होजाताहे कोयला होजाताहे फेर कारण पाय पलट करिकै
ग्नीकी संगती करैतो कोयला जलबल करिकै सुपेद राख होजाते है तै:
सेही कोहू जीव विषय भोगादिककी संगती पायकरिकै अशुद्ध हो,
है फेर पलट करिकै गुरु आज्ञा प्रमाण विषय भोगादिक कूं अपणा स्व-

हज बिना परिश्रम शुभाशुभ कष्ट न करते संते ही सदा काल
गतीज्योतिका तन्मयि मेल करादेताहै धन्यहै गुरू १ बेद कहिये केव-
लीकी दिव्यध्वनी सास्त्र कहिये महा मुनीका वचन तिनसेबी सो स्वस्व-
रूप सम्यक्ज्ञान मयि सदाकाल जागती ज्योति परब्रह्म मनस्यानु
नही जाएवामे आवे बहुरि वो सम्यक्ज्ञान मयि सदाकाल जागतीज्यो
परमातमा है सो पांचयंद्री षष्ठम मनसे बी मन स्यानुभव नही जाए-
वामे आवे बहुरि सत्गुरु सहज स्वभाव ही सै बिना परिश्रम ही सदा
कालजागतीज्योति ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्टीकी तन्मयि
ता करदेताहै गुरु धन्यहै १ मनकूं बडे आश्चर्य होताहै क्याके पांचइंद्री
षष्ठम मनसे अर केवलीकी दिव्यध्वनीसे बहुरि
दरो वाचणेसे तो वो सम्यक्ज्ञान मयि सदाकाल जागतीज्योति नहीं
जाएवामे आवे फेरगुरू कैसे दीखाते होगे कैसे जनादेते होगे क्या कह

तेहोगे अर शिष्यबी कैसै समजता होगा हाहाहाहा गुरु धन्यहै हाय खे: द गुरू नही होतेतो मै इस भ्रमजाल संसारसे भिन्न कैसै होता १ जैसै कके अंकबिना बिंदु प्रमाणभूत नाही तैसै येक गुरु विना त्यागीपणो पंडितपणो गी सन्यासी व्रत शील दान पूजा शुभाशुभ आदिक प्रमाण भूत नाहीं १ जैसै बीज राखि सुख भोगवै जो किसाण जगमांहि तैसै स्व स्वरूपी : क ज्ञान माधि सम्यक् दृष्टी है सो अपणा आपमै आप माधि स्वभाव धर्म कूं आपका आपमै आप माधि समजकरिकै पूर्व पुण्य प्रयोगात् विषय-भोगादिकका सुख भोगताहै १ जैसै सुपेद काष्ट अग्नीकी संगतीसै कृ ष्ण काला होजाताहै कोयला होजाताहै फेर कारण पाय पलट करिकै ग्नीकी संगती करैतो कोयला जलबल करिकै सुपेद राख होजातेहै तै: सेही कोहू जीव विषय भोगादिककी संगती पायकरिकै अशुद्ध होजाते है फेर पलट करिकै गुरु आज्ञा प्रमाण विषय भोगादिक कूं अपणा स्व:

हज बिना परिश्रम शुभाशुभ कष्ट न करते संतें ही सदा काल ज्ञान मयि
गती ज्योति का तन्मयि मेल करादेताहै धन्य है गुरू २ बेद कहिये केव-
लीकी दिव्यध्वनी सास्त्र कहिये महा मुनी का बचन तिनसें बी सो स्वस्व-
रूप सम्यक्‌ज्ञानमयि सदाकाल जागती ज्योति परब्रह्म

नही जाणवा में आवे बहुरि वो सम्यक्‌ज्ञान मयि सदाकाल जागती ज्यो
परमातमा है सो पांचयंद्री षष्ठम मनसें बी मन स्वानुभव नही जाण-
वा में आवे बहुरि सत्‌गुरु सहज स्वभाव ही सें बिना परिश्रम ही सदा
काल जागती ज्योति ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्टीकी तन्मयि-
ता करदेता है गुरु धन्य है १ मनकूं बडे आश्चर्य होना है क्याके पांच इंद्री
षष्ठम मनसे अर केवलीकी दिव्यध्वनीसे बहुरि बेद पुराण

ढणे बाचणेसे तो वो सम्यक्‌ज्ञान मयि सदाकाल जागती ज्योति नहीं-
जाणवा में आवे फेर गुरू कैसे दीरवाते होगे कैसे जनादेते होगे क्या कह

तेहोगे अरशिष्यबी कैसैसमजताहोगा हाहाहाहा गुरुधन्यहै हाय
द गुरु नही होनेतो मैइस भ्रमजाल संसारसे भिन्न कैसै होता १ जैसे
कके अंकबिना बिंदु प्रमाणभूतनाही तैसैयेकगुरुविनात्यागीपणोपंडितपणो
गी सन्यासी व्रत शील दान पूजा शुभाशुभ आदिक प्रमाण भूतनाहीं १
जैसे बीजरारिव सरव भोगवे जोकिसाएा जगमांहि तैसे स्वस्वरूपी
कु ज्ञान मयि सम्यक दृष्टीहैसो अपणा आपमैं आपमयि स्वभावधर्म
कूं आपका आपमैं आप मयि समजकरिके पूर्व पुण्य प्रयोगात् विषय
भोगादिकका सरव भोगताहै १ जैसे सुपेद काष्ट अग्नीकी संगतीसे
ष्ण काला होजानाहै कोयला होजाताहै फेर कारणपाय पलट करिके अ
ग्नीकी संगनी करैतो कोयला जलबल करिके सुपेद रवाक होजातेहै तै
सेही कोहूजीव विषय भोगादिककी संगनी पायकरिके अशुद्ध हो
है फेरपलट करिके गुरुआज्ञा प्रमाण विषयभोगादिककूं अपणा स्व

भाव सम्यक् ज्ञानसें भिन्न समज करिके पश्चात् विषय भोगादिकसे अ
तन्मयि होय करिके विषय भोगाकी संगति करै सोजीव परम पवित्र शुद्ध
होजातोहै १ वस्तुस्वभावमें येह शुद्धाशुद्ध है सो स्यात् कथंचित् प्रका
र १ स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तूसें तूं मैं ये
ह वह च्यारशब्द तन्मयी नाही १ जैसे काहू सूर्यका प्रकाशमें से येक अ
णुरेणु उठाय करिके अंधकारमें क्षेपदे तासें तो सूर्योदय कुछ कमती हो
तेनाही बहुरि कोइ अंधकारमें से येक अणुरेणु उठाय करिके सूर्यका प्रका
शमें क्षेपदे तासे सो सूर्योदय वृद्धी होते नाही तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभव
गम्य सम्यक्ज्ञान सूर्योदयमें से येह अनंत संसार निकस करिके कहु क
हांजाते रहतासे तो सो सम्यक्ज्ञान सूर्योदय शून्य कमती होते नाही ब
हुरि कहु कहांसे येह संसार है तैसाही और अनंत संसार स्वस्वरू
कज्ञान सूर्योदयमें आय पडे तासे सो सम्यक्ज्ञान सूर्योदयकी वृद्धी हो

ते नाही १ जैसै येक दीपकके बुज जाणेसै सर्व पूर्ण अनंत दीपक नहीं
बूजते तैसेही येक जीवके मर जाणेसै सर्व पूर्ण अनंत जीवसे न-
न्द्र मरते नाही १ सर्व भाव पदार्थ वा द्रव्यक्षेत्र कालभव भाव भोगजोग
पाप पुन्यादिक संसारहै तासै स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि
स्वभाव वस्तु तन्मयि नाहीं वास्ते स्वस्वरूप ज्ञानहैसो सर्व संसार पाप पुन्य
भाव पदार्थादिक जेता शुभाशुभ व्यवहारहै ताको निश्चय स्वभावही
सै त्यागीहै स्वसम्यक् ज्ञानहै ताके परवस्तुका सहज स्वभावहीसै
है कैसै जैसै यथानामकोपि पुरुषः परद्रव्यमिदमितिज्ञात्वात्यजति त
थासर्वान् परभावान् ज्ञात्वा विमुंचति ज्ञानी १ जैसे नाटिककी रंग भूमि
मै कोऊ स्वांगधारण करिकै नाचताहै ताकूं कोहू ज्ञाता जाणलेके तूं तो-
अमुकाहै तबवो स्वांगधारक पुरुष नाटिककी रंगभूमि मैसे निकस
कै यथावत् जैसाको तैसा होय करिकै रहताहै तैसैही येह लोकालोकरं

गभूमि मेजीवाजीव पुष्पगंधवत् येक होय करिकें चोरासी लक्ष योनं दृष्टां.
मे नाचनाहै ताकूं सतगुरु ज्ञाता कहीके तूं तो जिस्मे ज्ञानगुण तन्मयि
। तूं है येह मनुष देव तिर्यंच नारकी वा स्त्री पुरुष नपुंसकादिक
गहै तूं स्वांग नाही बहुरि स्वांगका अर तेरा सूर्य प्रकाशवत् येक
नाही तूं इस स्वांगकूं जाणताहै येह स्वांग तेरेकूं जाणते नाही तूं
है बहुरि येह मनुष्यादिक स्वांग हैसो अज्ञान वस्तुहै जैसे सूर्यांधकारका
मेल नाही तैसे येह मनुष्यादिक स्वांगहै ताका अर तेरा येक मेल नाही.
सूर्य प्रकास इस पृथ्वीकेऊपरहै ताका अर पृथ्वीका मेलहै तैसे हे ज्ञा-
न सूर्योदय तेरा अर येह मनुष्यादिक स्वांगहै ताका मेलहै हे ज्ञान देख
सर्व मायाजाल संसार स्वांगसे व्यतिरेक भिन्नहै श्रवणकरि समज मै क-
हताहूं अंतमे दोय अक्षर आवै ताके द्वारा तेरा तूं ही स्वानुभव लेएगा ६८
मति ज्ञान १ कुश्रुति ज्ञान १ कुअवधि ज्ञान १ मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान

१ अवधिज्ञान २ मनपर्ययज्ञान १ केवलज्ञान १ ऐसे हे ज्ञान तूं सवें सं
सार स्वांगसे स्वभावहीसै भिन्न है तूं मनुष नाही तूं देव नाही तूं तिर्यंच नाही
तूं नारकी नाही तूं स्त्री पुरुष नपूंसक नाही वहुरि मनुष्यादिक अर स्त्री पु
रुष नपूंसकका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म फल है सो वी तूं ना
ही तूं तो येक निर्मल निर्दोष निराबाध शुद्ध परम पवित्र ज्ञान है जैसे का
चकी हांडीमे दीपक है ताका प्रकाश कांचकी हांडीके भीतर बाहिर दोहु
तरफ है तैसै ही स्वसम्यक् ज्ञान दीपिकाको प्रकाश लोकालोकके भी
र बाहिर दोहु तरफ येकसो ही है १ जैसे सुवर्णकी छुरीसे वी कलेजा
फट जाते है अर लोहाकी छूरीसे बी कलेजा फट जाते है तैसेही ज्ञान म-
यि जीवका पापसे बी भला नाही होने अर पुन्यसै बी भला नाही होने १
॥ ॥प्रश्न॥ ॥ पापपुन्य करणा के नाही करणा उत्तर पापपुन्य
से अग्नी उष्णतावत् येक तन्मयि होय करिके पाप पुन्य कर्ता है सो

गभूमि मैजी वाजीव पुष्पगंधवत् येक होय करिके चोरासी लक्ष
मे नाचताहै ताकूं सत्गुरु ज्ञाता कहीके तूं तो जिस्मै ज्ञानगुण तन्मयि
ोही तूंहै येह मनुष देव तिर्यंच नारकी वा स्त्री पुरुष नपुंसकादिक
तूं स्वांग नाही बहुरि स्वांगका अर तेरा सूर्य प्रकाशवत् येक
नाही तूं इस स्वांगकूं जाणताहै येह स्वांग तेरेकूं जाणते नाही तूं
है बहुरि येह मनुष्यादिक स्वांगहै सो अज्ञान वस्तुहै जैसे सूर्यांधकारका
मेल नाही तैसे येह मनुष्यादिक स्वांगहै ताका अर तेरा येक मेल नाही
सै सूर्य प्रकास इस पृथ्वीके ऊपरहै ताका अर पृथ्वीका मेलहै तैसे हे ज्ञा-
न सूर्योदय तेरा अर येह मनुष्यादिक स्वांगहै ताका मेलहै हे ज्ञान देख
सर्व मायाजाल संसार स्वांगसे व्यतिरेक भिन्नहै श्रवणकरि समज मै क
हताहूं अंतमै दोय अक्षर आवै ताके द्वारा तेरा तूं ही स्वानुभव लेणा
मति ज्ञान १ कुश्रुति ज्ञान १ कुअवधि ज्ञान १ मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान

१ अवधिज्ञान २ मनपर्ययज्ञान १ केवलज्ञान १ ऐसैहेज्ञान तूंसर्वसं
सारस्वांगसे स्वभावहीसैभिन्नहे तू मनुषनाही तूं देवनाही तूंतिर्यंचनाहे
तूं नारकीनाही तूं स्त्रीपुरुषनपूंसकनाही वहुरि मनुष्यादिक अरस्त्रीपु
रुषनपूंसकका जेताशुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म फलहे सोवी तूं ना
ही तूंतो येक निर्मल निर्दोष निराबाध शुद्ध परम पवित्र ज्ञानहे जैसैं का
चकी हांडीमे दीपकहै ताका प्रकाश काचकी हांडीके भीतर बाहिर दोकु
तरफहे तैसैही स्वसम्यक् ज्ञान दीपिकाको प्रकाश लोकालोकके भीत
र बाहिर दोकु तरफ येकसोहीहे १ जैसे सुवर्णकी छूरीसै वी कलेजा
फट जानेहे अर लोहाकी छूरीसे वी कलेजा फटजानेहे तैसैही ज्ञान म
धि जीवका पापसैवी भला नाही होने अर पुन्यसै वी भला नाही होने१
॥ ॥प्रश्न॥ ॥ पापपुन्यकरणा के नाही करणा उत्तर पापपुन्य
से अग्नीउष्णतावत् येक तन्मयि होय करिके पाप पुन्य कर्ताहेसो

थ्या दृष्टीहै बहुरि जैसै सूर्यसै अंधकार भिन्नहै तदवत् कोई पापपुन्य
सै भिन्नहोय करिकै पश्चात् पापपुन्य पूर्व कर्मप्रियोगात् कर्त्ताहै सो
नी सम्यक्‌ज्ञान दृष्टीहै १ जैसै ज्येष्ट वैशाख मासमै मध्यान्ह समयसू
र्यका प्रकाशमै मरूस्थल भूमिमै मृगमरीचकाजल दीखताहै तदवत्
ही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि सूर्यका प्रकाशमै येहलो
कालोक दीखताहै ज्ञानकूं १ अभेदमै अनेकभेद अभेदसै तन्मयि जै
से वृक्ष अभेद ताहीसै तन्मयि अनेकभेद मूल साखा लघुसाखा फल·
पत्र फलमै अनेक फल अनेक फलमै अनेक वृक्ष येक येक वृक्षमे
क लघु दीर्घ साखादिक अनंतभेदहै तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य·
सम्यक् ज्ञानमयि जिनेंद्र मूलमै अनंतजीव राशी भेदहै सोजिनेंद्रसै त·
न्मयि अभेदहै २ जैसै गंगायमुनादिक नदी समुद्रसै मिलीहै तैसैही
रूपदेस पाय करिकै सम्यक् दृष्टी जीव जिनेंद्रसै तन्मयि मिलैहै १

येक स्रुवर्णसे अनेकनाम कडा मूंदडा कंठी दोरा असरफी कांचन कन
क हेम आदिहै सो तन्मयिवत्है तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य
क्ज्ञानमयि स्वभाव बस्तु मे येह जिनेंद्र शिव शंकर ब्रह्मा ब्रह्म विष्णु
नारायण हरि हर महेश्वर परमेश्वर ईश्वर जगन्नाथ महादेव आदि अन
त नाम तन्मयिवत् है १ जेसे कोई पुरुष ऽस्त्रीका कपडा वस्त्र आभूषणा
दिक धारण करिके अर्थात् स्रुंदर देवांगना वत् बणकरिके नाटिककी
रंग भूमिमे नाचणे लग्यो तत् समय नाटिक् देखणे वाले पुरुष मंडली
हताहै के होहो हो क्या स्रुंदर स्त्रीहै ऐसा बचन सभा मंडलीका श्रवण
करिके सो स्त्री स्वांग पुरुष आप आपणे दिलमे जाणताहै मानताहै के
मेंऽस्त्री मूलहीसे नाही येह सभामंडलीके पुरुष मेरा निजस्वभावगुण·
लक्षणतो जाणते नाही बिना समजसे येह मेरे कूं ऽस्त्री कहताहै मान
ताहै जाणताहै सो वृथाहै तैसेही स्वस्वभाव सम्यक्ज्ञानमयि सम्यक्·

सं·र्द ७० दृष्टी आपअपणा अंतःकरणमै येह निश्चय समजताहै मानताहै केये दृष्टां·
ह बाहिर दृष्टिवान् मेरेकूं स्त्री पुरुष नपूंसकादिक मानतेहै
नताहै सो वृथाहै मेरो स्वभाव सम्यक् ज्ञानहै सोतो नऽस्त्रीहै न पुरुषहै
न नपूंसकादि कोइ बी किंचित् मात्र स्वांग मेरा स्वरूप सम्यक् ज्ञानसे त-
न्मयि नाही १ जैसे येक पुरुष तो निर्मल नीरका भऱ्या तलावके किनारे
तिष्टेहुये इच्छा प्रमाण निर्मल नीर प्रतिदिवस पीय करिके सुखीहै बहु
जो कोइ पुरुष तलावसे लक्षयोजन भिन्न येक क्षीरोदधि समुद्र निर्म
ल नीरको भऱ्योहै ताके किनारे तिष्टेहुयो इच्छाप्रमाण निर्मल नीर पं
करिके सुखीहै तैसेही संसारमै पूर्वकर्म प्रयोगात्
प्रमाण लालपर्यंत रहणेवाले सम्यक् दृष्टीका बहुरि संसारसे भिन्नमो
क्षहै तामै रहणेवाले स्वसम्यक् ज्ञान मयि सिद्ध परमेष्टीका अर्थात् ७०
दोहूका सुख समसमानहै २ जैसै दुग्धका भऱ्या कलसमै येक नील·

मणी रत्न डालदीजिये तब दुग्धका ओर नील मणी रत्नका रंग ओर दुग्ध-
का रंग येकसाही नीलमणी रतन तेजवत् समान भाष होताहै तैसैंही-
ज्ञान ज्ञेय येकसा भाष होताहै परंतु ज्ञान अज्ञान कदाचित् कोई प्रकार-
बी येक तन्मयि होते नाही १ जैसै माटीका घटमे घृत भर्यो होय तिसकार
ण तिस घटकूं घृत घट कहतेहै कहो भला परंतु घट माटीको माटीमयिहै-
माटीका घटके ओर घृतके अग्नीउष्णतावत् येक तन्मयिता हुई नहोवैगी न-
है तैसैंही ज्ञानमयि जीवके ओर अजीवज्यो तन मन धन बचनादिकके ओर
जेता तन मन धन वचनादिकका शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्महै ताके प-
स्पर सूर्य प्रकासवत् नयेक तन्मयिता हुई ओर नहै नहोवैगी १ जैसै ला-
ल लाखके ऊपर लग्यो लाल रतन तार तनमे लाखकी लाली ओर रतनकी-
लाली दोहु लाली येकसी तन्मयिवत् दीखतीहै परंतुहै यह दोहु लाली
भिन्नभिन्न ताकूं असल जहोरी होताहै सो दोहू लालीकूं भिन्नभिन्नसम

जनाहै माननाहै कहनाहै तैसैही आकास अमूर्ति निराकार अजीव म-
ताका बहुरि स्वसम्यक् ज्ञानमयि अमूर्ति नीराकारजीव मयि है
ताका परस्पर अमूर्ति अमूर्तिपणा बहुरि निराकार नीराकार पणा-
येक तन्मयिवत् मिथ्या दृष्टीकूं भाष होनाहै परंतु सूक्षम दृष्टिवान्
जो स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानी सम्यक् दृष्टी दोहु अमूर्ति
कूं बहुरि दोहु नीराकारकूं भिन्नभिन्न समजताहै माननाहै ·
१ परमातमा स्वसम्यक् ज्ञान मयि हैसो आदि अंत पूर्ण स्वभाव सं
युक्त है येह परसंजोग पर रूप कल्पना रहित मुक्त है ॥ प्रश्न कैसे
है उत्तर श्रवणकरो जैसे प्रथम आदिमे पूर्णचिन्ह बिंदु है सोकी
सोही अंतमेबी पूर्णचिन्ह बिंदु है देखो स्वानुभव दृष्टीके द्वारा आदि
०१२३४५६७८९१० अंत १ बहुरि जैसे सूर्य प्रात काल आदि
है सोही सूर्य सायंकाल अंत है तो क्या मध्यान्ह काल नहीहै अर्थात्

तैसेही स्वसम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्य सदाकालहै १ " जैसैजैसोपी
वैपाणी तैसैतैसी बोलैवाणी " तैसैंही जिसकूं गुरूपदेस द्वारा आप
का आपमे आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकी भानकी प्राप्ती अन्तर
हुई सो स्वमुखात् ऐसे बोलताहैके स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहै
सोही सोहं प्रश्न ऐसेतो बहुतसे बाल गोपाल बोलताहै उत्तर
जैसे रात्री समय येकस्वान प्रत्यक्ष चोरकूं देख करिके भूक भूक बोल
ताहै ताका शब्द श्रवण करिके सहरमे बहुतसे श्वान तदवत् ही भुक
भूक बोलताहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानानुभव ज्ञानीका स्वमुखात् श-
ब्द श्रवण करिके सम्यक् ज्ञानानुभव रहित मिथ्या दृष्टीबी ऐसैहीबो
लताहै केहमही परमातमाहै मिथ्यादृष्टीकूं येह निश्चय नाहीके श-
ब्दके अर सम्यक् ज्ञानीके परस्पर सूर्य अंधकार कासा अंतरभेद है १
बहुरि " जैसैजैसो खावै अन्न ताकै तैसो होवैमन्न " तैसैही किसी मुमु

क्षकूं गुरुपदेस द्वारा स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानानुभवकी
प्राप्तकी प्राप्ति ताकी अचल अवगाढताहुई ताको मन ऐसो हो जानोहै·
के ऊपरतो व्यवहार करै पण भीतर स्वप्न समानजूं भाषै तथा ताको
ऐसो हो जातोहैके मेरो मनहै परंतु मै मन नाही बहुरि मनका जेता शु·
भाशुभ व्यवहार है सोबी मै नाही अर जेता शुभाशुभ व्यवहारका सु·
ख दुःख फलहै सोबी मै नाही बहुरि मै हैं सो येक येह शब्दहै वास्ते
शब्दकूं अर मनादिककूं जाणताहै सोही सोहं

जाताहै· १ जैसे मैला मल मूत्रमे रतन पड्योहै ताकूं लेणा जोगहै
ल मूत्रकी मैलाई दुर्गंध तासे अपणा हंस गिलान भाव धारण करिके·
रतनकूं नही ग्रहण कर्ताहै सो मूर्खहै तैसेही तन मन धन वचनादिक·
मे पड्योहै स्वसम्यक् ज्ञानरतन ताकूं कोई तन मन धनादिकका शु· ७२
भाशुभ विकार देख करिके ताकी गिलान धारण करिके स्वसम्यक्

रतनकूं तन्मयाधारण नहीं करताहै सो सूर्य मिथ्यादृष्टीहै १ जेसे कोइ
कहीके सूर्य कहां रहताहै ताकोउत्तर ऐसो है के सूर्य सूर्यके भीतर तन
मयीरहताहै तैसेही स्वसम्यक्ज्ञान सूर्यहै सो स्वसम्यक्ज्ञान सूर्यही
मेरहताहै निश्चयनयात् १ जैसे पुष्पमे सुगंधहै तथाजैसे तिलमेतै
लहै वाजैसे दुग्धमे घृतहै तैसेही यह लोकालोकहै तामे तथातन मन
धन वचनहै तामे बहुरि तन मन धन वचनका जेता शुभाशुभ व्यवहार
क्रिया कर्महै तामे अतन्मयि सहज स्वभावहीसे स्वसम्यक्ज्ञानहै १
हे मुमुक्षु मंडलीहो स्वसम्यक् ज्ञानसे तन्मयि होयकरिके देखो कोवि
धि को निषेध १ जैसे दर्पणमे काला पीला लाल हरित आदि अने
करंग बिरंग बिकार दीखताहै सो दर्पणका तन्मयि नाही तैसेही
स्वसम्यक् ज्ञानमयि दर्पणमे यह राग द्वेष क्रोध मान माया लोभ का
म कुशीलादिकका बिकार तन्मयि सा दीखताहै सो स्वच्छ सम्यक् ज्ञा

नमयि परमातमाका नाही १ जैसै नवका रंगरंगीलीहै सोबी पारउता
र देतीहै बहुरि रंगरंगीली नवका नहीहै सोबी पार उतार देतीहै तैसेही
स्वानुभव ज्ञानमयि कोहू गुरुहै सो न्याय व्याकर्ण कोश अलंकार काव्य
छंदादिक युक्तहै सोबी संसार सागरसे पारउतार देताहै बहुरि कोहुगु
रुहै सो स्वसम्यक् ज्ञानानुभवि परंतु न्याय व्याकर्ण कोश अलंकारका
व्य छंदादिकरहितहै सोबी संसार सागरसे पारउतार देताहै १ जैसेगो
रस अपणे दुग्ध दही घृत माखण आदि पर्यायसे भिन्ननाही बहुरि
दुग्ध दही घृत माखण आदिकहै सो गोरससे भिन्ननाही तैसेही
म्यक् ज्ञान मयि परमातमासे स्वस्वसत्ताचेतन जीव ज्ञानादिक भि·
न्ननाही बहुरि स्व स्वसत्ता चेतन जीव ज्ञानादि कहै सो स्वसम्यक्·
ज्ञानमयि परमातमा भिन्ननाही १ जैसे नाख्यो धूलीकूं
स्वर्णकी कणिकाकूं नहीजाणताहै तो इच्छा आवे जेता कष्ट करो धू

ली धोवणे का उनकूं कदाचित्‌वी स्रवर्ण लाभ होने नाही तैसैही कोई मुनी साधू सन्यासी भोगीजोगी ग्रहस्ती आदिकोई स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाकूं तो जाणते नाही अर व्रतजप तप ध्यान दान पूजादिक- का बहुप्रकार कष्ट करते है तो करो उनकूं कदाचित्‌वी स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाको लाभ होते नाही २ जिसजती ब्रती जोगी जंगम मुनी परमहंस वा भोगी ग्रहस्ती आदि भेषमे स्वसम्यक ज्ञानानुभव अचल हुवा सो जती ब्रती जोगी जंगम मुनी परमहंस भोगी ग्रहस्ती धन्यहै धन्यहै धन्यहै सहस्रबेर धन्यहै १ जैसे अग्नि द्रव्यहै तामे उष्णताका गुणहै जो इस अग्नि उष्णगुणाविषे भिन्न भई तो इंधनकूं जलाय न शके जो कदाचित् अग्नीसे उष्णगुण भिन्न होय तो काहे करिजलावे अग्नी भिन्न हुई तो उष्णगुण किसके आश्रय रहे निराश्रय हुवा वहवी जलावणेकी क्रिया ते रहित होय गुण गुणी आपसमे जुदे हुये कार्य का

" असमर्थहै जो दोहुकी येकता हुई तो जलावणेकी क्रिया
समर्थ होय तैसैही सतगुरू उपदेसात् केवल ज्ञान गुणीका अर ता·
कागुण देखणाजाणनेका अर्थात् दोहूकी येकता तन्मायिता होय त·
ब सहज स्वभावहीसे अष्टकर्म काष्टकूं जलावणेकी क्रिया विषे सम·
र्थ होय १ जैसे सूर्य मेघपटल करिके आच्छादित हुवा प्रभारहित क
हियेहै परंतु सो सूर्य अपणे स्वभावते तिस प्रभासे त्रैकाल भिन्न होय
नाही तैसैही स्वसम्यक् केवल ज्ञानमयि सूर्यके करम भरम वा द्रव्य ।
भावकर्म नोकर्मस्वरूपी बादल पटल करि आच्छादित हुवा ताकूं ज्ञान
प्रभारहित कहियेहै परंतु सो स्वसम्यक् केवलज्ञानमयि सूर्य अपणा
आपमे आपमयि आपकागुण स्वभाव ज्ञान प्रकाशसे त्रैकाल कोई प्र·
कार बी भिन्न होय नाही १ जैसे पाचक होतीसीजती हांडीमेसे येक
वल देखिये तो सीजगयो तो सीजताहुवा सर्व चावलाकोनिश्चयानुभवहो

जाताहे के सर्व चावल सीजगये तैसैही अनंतगुण मयीस्वसम्यक्ज्ञा
न परमातमा ताका येकबी गुणको किसीकूं गुरुपदेसद्वारा अचला
नुभव हुवोतो निश्चय समजणाके जेता परमातमाका गुण है ते तास
वे गुणाका ताकूं अचलानुभव हो चुक्या १ जैसै घटकेप्रथम कुंभ-
कारहै तैसै तनमन धन वचनके बहुरि जेता तन मन धन वचनका शु
भाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मके प्रथम आदिनाथ स्वसम्यक्ज्ञानम
यि परमातमाहे १ जैसै कुंभकार घटचक्रादिकसै तन्मयि होय करि-
के घटकर्मकूं नही कर्ताहे तैसैही स्वसम्यक् ज्ञान मयि परमातमाहे
सो तन मन धन वचनादिकसै तन्मयि होय करिके शुभाशुभ व्यवहार
क्रिया कर्म नही कर्ताहे १ जैसै नय दोयहे येक द्रव्यार्थक येक पर्या
यार्थ जैसै सुवर्ण सुवर्णत्व करिके नउपजेहे नाविनसैहे बहुरि ति
सहीसे तन्मयि कटि कादि कादिक पर्याय विनसैहे उपजेहे सोबीक

थंचित् प्रकार तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि प
रमातमा स्वस्वभावमें नउपजैहै नबिनसैहै बहुरि तिसहीसैं तन्मयि
जीव चेतनादिक पर्याय है सो उपजैहै बिनसैहै सोबी कथंचित् प्र
कार २ जैसे समुद्र अपणे जल समूह करि उत्पाद व्यय अवस्थाकूं·
हीं प्राप्त होता अपणे स्वरूप करि स्थिर रहैहै परंतु च्यारही दिशा
नकी पवन करिकै कल्लोलका उत्पाद व्यय होयहै तोबी सदा नित्य टं·
कोत्कीर्ण जैसाहै तैसाहै तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्ज्ञा
नार्णव केवल ज्ञानमयि समुद्र अपणे स्वगुण स्वभाव समरस नीरस
मूह करि उत्पाद व्यय अवस्थाकूं नाही प्राप्त होता अपणे स्वरूप क·
रि स्थिर रहैहै परंतु मनुष देव तिर्यंच नारकी येही च्यार दिशानकी पव
न करिकै संकल्प विकल्प राग द्वेषादिक कल्लोलका उत्पाद व्यय होयहै
तोबी सदा नित्य टंकोत्कीर्ण जैसाहै तैसाहै २ जैसे सुनार आभूषणा

दिक कर्मको कर्ताहै परंतु आभूषणादिक कर्मसे तन्मयि तत् स्वरूप-
होयकरिकै नाही कर्ताहै तैसैही आभूषणादिक कर्मका फलकूं न-
त्स्वरूप तन्मयि होय करिकै नाही भोक्ताहै तैसैही स्वसम्यक्स्वानु
भव ज्ञानी सर्व संसारका शुभाशुभ कर्म कर्ताहै परंतु तन्मयि तत्स्वरू
प होय करिकै नाही कर्ताहै तैसैही संसार का शुभाशुभ कर्म का
से तत्स्वरूप तन्मयि होय करिकै नाही भोक्ताहै १ अधुनाचेत् १
वस्तु का स्वभाव वचनसे तन्मयि नाही अर्थात् वचन गम्य नाही
लोककूं बहुरि जेता लोकालोकमै अपणे अपणे गुण पर्याय सहित
द्रव्य अचल अनादिसे जैसाहै तैसा ताकूं येकही समयमै सहजही नि
राबाधि पूर्वक जाणताहै देखताहै सोही सर्वज्ञ देवहै ऐसा सर्वज्ञ देव
से तन्मयि होयकरि तिसही का स्वस्वानुभव ज्ञानमै लीनहै सो संदेहसं
काउपजावनेनाही १ जैसै चंदन वृक्षके जहर विषमयि सर्प लपटार

सं·दी
७६

दृष्टां·

हताहै तोबी चंदन अपणा गुणस्वभाव सुगंध पणा शीतल पणा कूं-
छोड़ करिके जहर विषमयि विषवत् होते नाही तैसेही स्वसम्यक् दृ
र्म प्रयोगात् शुभाशुभ कर्म लाग रहाहै तिस करिके तिस
तन्मयि होते नाही १ जैसे सूर्यके भीतर सूर्यसें अंधकार तन्मयि
नाही तैसेही स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि सूर्यके भी
तर अज्ञान तन्मयि नाही १ जैसे जिस नगरमे अज्ञानी राजाहै ताके
ऊपर केवलज्ञानी राजा होसक्ताहै बहुरि जहां केवलज्ञानही राजाहै
ताके ऊपर कोई बी अधिष्ठाता न संभवे अर्थात् तैसेही स्वस्वरूपी
स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि त्रैलोक्यनाथ परमातमाके ऊपर ता
से अधिक कोई न है न होवेगा न कोई हुवो १ जहां भरम होताहै तहां
ही भरम नाही है जैसे सरल मार्गमे सायंकाल समयको हूरस्सी कूं
पड़ी देख करिके संकावान हुवो के हाय सर्प है तब कोहू गुरु कहीके है-

७६

वत्स भय मति करै येह तो रस्सी है सर्प नाही १ तन मन धन बचनसे
वहूरि तन मन धन बचनादिक का जेता शुभाशुभ व्यवहार किया कर्म है
तासे तत्स्वरूप तन्मयि होणेकी जिसके स्वभावसे ही इच्छा नाही सो नर-
ज्ञानी है १ कर्त्तासे होवै तिसको नाम कर्म है दान पूजा व्रत जप तप सामा
यिक स्वाध्याय ध्यानादिक शुभ कर्म है पाप अपराध चोरी हिंसा कुशी-
लादिक अशुभ कर्म है अर्थ येह के शुभाशुभ कर्मको कर्त्ता है सो शुभा-
शुभ कर्मसे अग्नी उष्णतावत् येक आपकूं तन्मयि समज करिके
रिके कर्त्ता है सो तो मिथ्यादृष्टी है बहुरि शुभाशुभ कर्मसे आपकूं सर्व
था प्रकार भिन्न समज करिके फेर शुभाशुभ पूर्व प्रयोगात् कर्म कर्त्ता है
सो स्वसम्यक्‌दृष्टी है १ जैसे सूर्यके भीतर प्रकास तन्मयि है तैसे जिस व
स्तुमे देखणे जाणनेका गुण तन्मयि है सो ही वस्तु दर्शण है और वस्तु
दर्शण मानना है समजना है कहना है सो मूर्ख मिथ्यादृष्टी है १ जहा

घरमे अंधकारहे तहांही प्रकाशहे क्यूंके प्रकाशनही होते तो
की खबर कैसे होती कैसे जाणते जिसका प्रकासमे सूर्य दीखताहे
अर अंधकार आदि दीखताहे सोही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्-
ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्टीहे १ जैसेजहां प्रथीकेऊप
र कूप खोदेगा तहांही पाणी नीर निकलताहे तैसेही तन मन धन
नादिकके भीतर बहुरि तन मन धन बचनादिकका जेता
वहार क्रियाकर्महे ताके भीतर आकाशवत् व्यापक स्वसम्यक्
ब्रह्मकूं कोई खोजेगा तो प्रगट प्रसिद्ध होताहे १ शरीर पिंडसे
क् ज्ञान मयि परमातमा तन्मयि होते तो कदाचित् कोई प्रकार वी कोइ वी
नहीमरते तथा येह लोका लोकजगत संसार दीखताहे तासे सोस्वस-
म्यक् ज्ञान मयि परमातमा तन्मयि होते तो हरकिसीकूं दीखतो होहो
हो ऐसा अपूर्व बिचारकी पूर्णता श्रीसद्गुरूके चरणकी शरण बिना नहं

होगी २ जैसे जहांलग पक्षी के दोय पक्ष तन्मयिहै तहां पर्यंत पक्षीइ
दर उदर भ्रमताहै उडता बैठताहै बहुरि जिस समय तिस पक्षीकी दो
हु पक्ष खंडन निर्मूल होजाय तब सो पक्षी इदर उदर भ्रमण कारिर
होय जहांको तहां स्थिर अचल रहताहै तैसेही जहां पर्यंत जीवके निश्च
य व्यवहार की तन्मयिताहै अवगाढताहै तहां पर्यंत च्यारगती चवरासी
लक्ष योनिमे भ्रमण कर्ताहै बहुरि जिस समय जिस जीव के काल लब्धी
पाचक द्वारा तथा सतगुरू के उपदेस द्वारा निश्चय व्यवहारकी पक्ष खंड
न निर्मूल होवेगी तत्समयही च्यारगति चवरासी लक्ष योनीमे भ्रमण
कर्ने रहित होय जहांके तहां अचल स्थिर रहताहै १ जैसे उडद मुंगकी
दोय दाल हुये पश्चात् मिलते नाही अर बोवे तो उगने नाही तैसेही जीवा
जीवकी जहां सर्वथा प्रकार भिन्नताहै गुरुप्रसादात् तहां जीवाजीवके
तन्मयिता येकता नाही दोहूकी येकतासे संसार उत्पन्न होनेये सो अब

होएेको नाहीं १ जैसे अंधाके स्कंधाके ऊपर बैठे पांगुलो इहां विचार
करो देखो अंधोतो चलताहै अर पांगुलो देखताहै तैसेही अंधवत् ये
संसार चक्र ताके ऊपर स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान सो पांगु
लावत् संसार चक्रके उपर बैठहुवो केवल देखता जाणताहै १ देखणा
जाणना येह निज धर्म केवल ज्ञानकाहै १ प्रश्न संसारकूं चक्र सं-
ज्ञा कैसेहै उत्तर जाग्रतमे येह संसार दीखताहै सोही पलट करि
के स्वप्नामे दीखताहै बहुरि जो संसार स्वप्नामे दीखताहै सोही पलट
करिके जाग्रतमे दीखताहै ऐसे येह संसार चक्र फिरताहै प्रश्न
संसारचक्र किस भूमिकाके ऊपर फिरताहै उत्तर अलोकाकाशमे
अणुरेणुवत् येह संसार चक्र आप आपहीके आधार जल
फिरताहै प्रश्न सुसति और तुर्या समय संसार चक्र कहां रहताहै क-
हां फिरताहै उत्तर येक पुरुष सुलोचन अर्थात् ताके नेत्र तोहै परंतु

के तनमंन धन वचनादिक मूलहीसे नाही ताके ग्रागे येह संसार चक्र-
मणयुक्त नाचताहै स्वलोचन पुरुष देखताहै परंतु कहता नाही १ जे-
से कमती ज्यादा भोजन जीमणेसे बेमारी दुःख होताहै तैसैही कोइ-
संसारका विषय भोग कमती ज्यादा भोक्ताहै कर्ताहै सोही दुःखी बे-
मार होताहै अर्थात् जहां बराबरका व्यवहार क्रिया कर्म है तहां वि-
ध भाव नसंभवै १ शब्दातीतका शब्द सूचहै १ जो वस्तु निरंतरहै तामे-
विधि निषेधको अवकाश कदापि तासे तन्मयि नसंभवै १ जैसे वैद्य पु-
रसहैसो विषकूं उपभोगता संता मरणकूं नही प्राप्त होताहै कारण ति-
स वैद्यके समीप दूसरी बिषनासनी दवाई है तैसेही जिसके समीप
सम्यक्ज्ञान तन्मयिहै सो कर्मजनित पूर्व प्रयोगात् विषय उपभोग-
गते संतेबी मरते नाही १ जैसे स्वर्ण अग्नीसे तप्त होते संतेबी
स्वर्ण पणा आदिगुण स्वभाव छोडते नाही तैसेही स्वसम्यक्ज्ञान-

दृष्टी पूर्व कर्म प्रियोगात् कर्म बेदना दुःखरूपी अग्नीमे तप्तायमान
संतेबी अपणा स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानादिगुण छोडते नाही १ जैसे जः
लती हुई तेलकी कडाईमे अपूपावत् सूर्यको प्रतिबिंब जलताहे बलता
हे तोबी आकाशमे सूर्य है सो नजलता नमरता तैसे ही संसारमे स्वस्व
रूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि परमातमा मरताहे जनमताहे तो
बी स्वस्वभावे कदाचित् कोई प्रकारबी नमरता नजन्मता २ जिसको गुरु
पदेसात् स्वभाव दृष्टी अचल हुई सो सहस्र बेर धन्य बाद योग्य है १ जैसे
मदिराके तीव्र अति भावकूं जाण करिके तिस मदिराकूं कमतीबी नही
पीताहे अरज्यादाबी नही पीताहे इस प्रमाण मदिरा पीवते संतेबी
दोन्मत्त नही होते तैसेही स्वसम्यक् दृष्टी मोह मदिराके तीव्र अति भा
वकूं जाण करिके तिस मोह मदिराकूं कमतीबी नही ग्रहण कर्ताहे व
हुरि अधिक बिशेषबी नही ग्रहण कर्ताहे इस प्रमाण मोह मदिराकूं स्व

सम्यक्दृष्टी ग्रहण कर्त्ते संतेबी स्वसम्यक्ज्ञान स्वभावकूं छोड करिकै मो
ह मदिरासै अग्नीउष्णतावत् येकतन्मयि होते नाहीं १ जैसै वृक्षके ल
गेहुये फल येकबेर परिपक्क होय परिजायतो वो फल फेर पलट करिकै
उस वृक्षके नाही लागतो तैसैही कोईजीव कालपाय करिकै गुरुपदेस
द्वारा अपणा आपमे आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानानुभव अचल परिपक्क
पूर्णानुभव होय करिकै येकबेर संसार जगतसै भिन्नहुये पश्चात् फिर प-
लट करिकै संसारजगतसैं तन्मयि होते नाहीं १ औरबी तीन दृष्टान्त-
द्वारा स्वसम्यक् ज्ञानानुभव लेणा जैसै दहीमैसें माखण घृतभिन्नहुये
पश्चात् पलट करिकै दहीमे मिलतो नाही १ वृक्षकी जड उपडे पश्चात्कु
छ काल पर्यंत फल फूल पत्ताहरित रहताहै परंतु दस पांच दिवसमैंस्व
यमेवहि सुष्क सूक जाताहै १ चणीकचीणा भूजदिये पश्चात् बोवै-
तोउगतेनाही अर खावैतो स्वाद लागने १ तिलमैसे तेल निकसे पश्चा

न् पलट करिके नही मिलते १ इत्यादि॰
रतनआदि अनेक वस्तुसे भर्याहोयहै सोयेकजल करि भर्याहे तोहू
तामे निर्मल छोटी वडी अनेक लहरी कल्लोलउठेहै तेसर्व येकजलरूप
हीहै तैसेही स्वसम्यक्ज्ञान मयि समुद्रहै सो रतन त्रय सम्यक् दर्श
ण सम्यक्ज्ञान सम्यक्चारित्र येही तीनरतन आदि अनेक शुभाशुभ
शब्दादिक वस्तसे भर्या होय है सोयेक समरस जलकरि भर्याहे तो
हू तामे निर्मल कुमतिज्ञान कुश्रुतिज्ञान कुअवधिज्ञान बहुरि मति
न श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान मन पर्ययज्ञान केवलज्ञान आदियेही छोटी
वडी तामे अनेक लहरी कल्लोलउठेहै तेसर्व येक स्वसम्यक् ज्ञानमयि
स्वसमरस जलनीरहीहै १ जैसे लोद फिटकडी का पुटबिना मजीठरं
गमे वस्त्रभीजोरहे चिरकाल तोहु वस्त्र सर्वथा नही होवे लाल तेसैहीजी
वसंसारमेहे चिरकालसेहै सो सर्वथा प्रकार कदाचित् कोई

पणा जीव स्वभाव छोड करिके अजीवसे येक तन्मयि होने नाही १ जैसे निश्चय करि स्वर्ण है सो कर्दमके बीच पड्या है तोहु कर्दम करिके तन्मयि लिप्त होते नाही स्वर्णके तन्मयि काई लागती नाही तैसेही स्वसम्यक् दृष्टी निश्चय करि संसार कर्दमके बीच पड्या है तोहु ताके रागद्वेष रूपमै लाई तन्मयि लिप्त होता नाही १ जैसे शंख श्वेत स्वभाव है सो शंख सचित्त अचित्त मिश्रित अनेक प्रकार द्रव्यनकूं भक्षण करै है तोहु ताका श्वेत भाव है सो कृष्ण करणेकूं समर्थ नाही हूजिये है तैसेही स्वसम्यक् दृष्टीका स्वसम्यक् ज्ञानमयि विशुद्ध स्वभाव है सो सचित्त अचित्त मिश्रित अनेक प्रकार द्रव्यनका भोगउपभोगकूं भोगता संतावी तोहु ताका स्वसम्यक् ज्ञानमयि विशुद्ध स्वभाव है सो अजीव अचेतन अज्ञानमयि भाव करणेकूं समर्थ नाही हूजिये है १ जैसे सहस्रमण काच खंडमै येक असल रतन पड्या है तोभी सो असल रतन अपणा रतन-

स्वभाव गुण लक्षणादिकूं छोड करिके तिस काच खंड वत् होते ना
ही तैसैही स्वसम्यक् दृष्टि अनंत अज्ञान मयि संसारमे पड्याहे तो बी-
अपणा स्वसम्यक् ज्ञान स्वभावकूं छोड करिके संसार अज्ञानमयिसे
तन्मयि तत्स्वरूप होतेनाही १ जैसे दुग्ध जलमिले हुयेकूं हंस जल
छोड करिके दुग्धको ग्रहण कर्ताहे तैसेही क्षीर नीरवत् मिले यह सं
सार अर स्वसम्यक् ज्ञान ताकूं स्वसम्यक् दृष्टी हंस अज्ञान मयि संसा
रकूं छोड करिके स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभावकूं
ग्रहण कर्ताहे १ जैसे हस्तीका मस्तगमे मांस अर मोती मिलेहे ता-
मे काग पक्षीहे सोतो मोती छोड करिके मांस ग्रहण कर्ताहे वहुरि-
हंस पक्षी हेसो मांस छोड करिके मोती ग्रहण कर्ताहे तैसेही
दृष्टीतो स्वसम्यक् ज्ञान गुण छोड करिके अज्ञानकूं ग्रहण कर्ताहे बहु
स्वसम्यक् दृष्टी अज्ञान औगुणकूं छोड करिके स्वसम्यक् ज्ञानगुण

कूं ग्रहण कर्ताहै १ जैसै परवस्तकूं परवस्तसैं तन्मयि होय करिके परवस्तकूं ग्रहण कर्ताहै सो निश्चय तस्कर चोरहै सोई दरउदर शंका सहित भ्रमण करैहै बहुरि अपणा आपमें आपमांथि आपही काथ न ग्रहण कर्ताहै सो साचो सत्य निश्चय साहुकार है सो इदर उदर निःशंकासहित भ्रमण कर्ताहै बेफिकर तैसैंही मिथ्यादृष्टीहै सो तो तस्कर चोरवत शंकासहित संसार चारगति चौरासी लक्ष योनी मैं भ्रमण कर्ताहै बहुरि स्वसम्यक् दृष्टीहै सो जैसै कुंभकार का चक्रके ऊपर अचल बैठी हुई मखी परिभ्रमण करैहै तैसैंही सत्य साहुकार स्वसम्यक् दृष्टीहै सो निःशंक बेफिकर संसार च्यारगति चौरासी लक्ष योनीमैं भ्रमण करैहै १ जैसैं येक पुरुष नदीके तटपर खडा हुवो तीव्र वेगसैं बहताहुवा नीरकूं एकाग्रह ध्यान करिके देखैथा तिस कारणसै उसकूं येह भ्रांतिहुई के हमभी बहेजाते है पुकारता था

दुःखीथा ताकूं दयाल मूर्ति सद्गुरू कहताहै के तूं दुःखी मति हो तूं
नही बहताहै येह तो नदीको नीर बहताहै अबतूं इस दुःखसैं
प्रकार भिन्न होणेके अर्थ सर्वथा प्रकार बहताहुवा नदीका नीर कूंम
ति देखै तूं तेरी तरफ देख तब गुरू आज्ञा प्रमाण भ्रांतिमे बहता पु-
रुष बहताहुवा नदीका नीर कूं देखणा छोड करिकै अपणा आपही
तरफ देख करिकै आपकूं अचल नही बहता समज करिकै बहुत कु
सी आनंद हुवो अर गुरुके चरणमै नमोस्तु करिकै कहीके हे गुरू
मै बहे जातो थो सो आप मोकूं बचादियो तैसेही गुरु संसारमे बहते
हुयेकूं बचादेताहै १ सारांस हे मुमुक्षजनहो बहताहुवा
ल संसारसे बचणेकी तुमारेको इच्छा है तो इस भ्रमजाल संसारकूं दे
खणेके अर्थ तो तुम जन्मांधवत हो जावो बहुरि तुमारा तुमसे तन्म
स्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावहै ताकूं देखणे

केअर्थ तुम सहस्त्र सूर्यवत् अचलहोजावो १ जैसै रसोई पाक
मै आदो दाल चावल घृत सर्करा गुड लवण मिरच भांडा बासण लक
डी इंधन आदि भोजनकी सामग्री अर भोजन बणावणे वालो
वैहै परंतु अग्नी बिना तांदुलादिक सर्व सामग्री कचीहै तैसैही सिद्ध प
रमेष्टी का स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानाग्नि बिना येह मुनी पणा त्यागी ब्रती क्ष
ुलक ब्रह्मचारी पणा दान पुन्य पूजा पाठ सास्त्राध्ययन ध्यान धारणा
उपदेस देणा लेणा आदि तीर्थयात्रा जप तप शुभाशुभ व्यवहार
शुभाशुभ व्यवहारका क्रिया कर्म अर ताका शुभाशुभ फल आ
वै कचाहै ब्रथाहै मिथ्याहै यदिस्यात् पूर्वोक्तका फलहै तो स्वर्ग नरकहै
बहुरि स्वर्ग नरकहै सो अरहट घटियन्त्रवतहै १ ज्ञान संसार सागर-
के भीतर बाहिरहै परंतु जैसा येह संसारहै तैसो ज्ञान नाही १ जैसैच
कमक पत्थरीमे अग्नीहै सो दीखता नाही तोबी अग्नीहै

सं·८
८३

दृष्टां·

गतमे स्वसम्यक् ज्ञान प्रसिद्ध है सो दीखतो नाही तोबी स्वसम्यक्
न प्रसिद्ध है १ जैसे मूर्ख लोक कोई नयन्याय द्वारा कहताहै के
जलती है बलतीहै परंतु पूर्ण दृष्टीसे देखियेतो अग्नी स्वभावमे अग्नी
नजलती न बलती तैसेही असत्य व्यवहार द्वारा देखियेतो स्वयं ज्ञा·
नमायि जीव मरताहै जन्मताहै निश्चय सत्यजीवत्व स्वभावमे देखिये·
तो नजीव मरताहै नजीव जन्मताहै १ जैसे हम खूब चोकस ठिक निश्च
य करचूके सूर्यके सन्मुख अंधकार नाही तैसेही स्वसम्यक्
सूर्यके सन्मुख अज्ञान रूपी अंधकार नाही १ जैसे सूर्यके अर अंध
कारके येक तन्मायि मेल नाही तैसेही स्वसम्यक् ज्ञान मायि सूर्यके अ
र अज्ञान मायि अंधकारके परस्पर येक तन्मायि मेल नाही १ जो जिस
से भिन्न है वो उससे भिन्न है इतिन्यायम् १ जैसे सूर्य प्रसिद्ध है ताही
का प्रकाशमे घट पट मठ आदि प्रसिद्ध है तैसेही स्वयं सम्यक् ज्ञानम

८३

यि सूर्य प्रसिद्ध है ताहीका प्रकाशमे येह लोकालोक जगत संसार प्र-
सिद्ध है १ येह तन मन धन बचनादिक है सो बहुरि तन मन धन बचना-
दिकका जेता शुभाशुभ भावकर्म क्रियादिक अर इनका फल येह स्व
वं स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानकूं जाणते नाही १ स्वसम्यक् ज्ञानका अरये
ह लोका लोक जगत संसारका मेलतो असाहे जैसा फूल सुगंधका-
सा दुग्ध घृतवत् तिल तेलवत् बहुरि येह लोकालोक जगत संसार है
ताका अर स्वयं सम्यक् ज्ञान है ताका परस्पर अंतर भेद है तो ऐसा है
जैसा सूर्य अंधकारका परस्पर अंतर भेद है तैसा १ जैसे जहां पर्यंत
समुद्र है तहां पर्यंत कल्लोल लहरी चलती है तैसे ही जहां पर्यंत स्वस
म्यक् ज्ञानार्णव है तहां पर्यंत दान पुन्य पूजा व्रत शील जप तप ध्या
नादिक की बहुरि काम कुशील चोरी धन परिग्रह भोग बिलास कीड़
च्छा वांच्छा रूप लहरी कल्लोल चलती हे १ जैसे कमल जलही मे उ-

स्पन्न हुवो बहुरि जलहीमै रहताहै परंतु जलसै लिप्त तन्मायि नाहि दृष्टां॰
ते तैसैही स्वसम्यक ज्ञानमयि सम्यक् दृष्टी येह लोकालोक
सारमै उत्पन्न हुये अर इसी ही संसार जगत लोकालोक मै रहताहै
रंतु येह संसार जगत लोकालोकसैं लिप्त तन्मायि नाहीं होते १
दी समुद्रसै भिन्न नाहीं तैसैही जिस वस्तमै ज्ञानगुणहै
द्रसै भिन्न नाही १ जैसै सुवर्णकी वस्तु सुवर्णमयीहीहै बहुरि लोहाकीवस्तु लोह
मयीहीहै तैसैही स्वयंज्ञानमयिजीवकीवस्तुस्वयंज्ञानमइहै बहुरि अज्ञानमयी
जीवहै ताकी वस्त अज्ञान मयिहीहै १ जैसै मृग मरीच का जल दीर
है सोनही दीखते प्रमाणवत् मिथ्याहै तैसैही येह जगत संसार दीख.
नाहै सो स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानसै तन्मायि होयकरि स्वस्वरूप सम्यक्
ज्ञानकी तरफ देखते संते मिथ्याहै १ जैसै मृगजलसै किसीकै
उपसम होती नाही वस्त्र गीलाहोते नाही तैसैही तीव्र स्वयं स्वसम्यक्

ज्ञानमयि सूर्यका भलाबुरा येह मृगमरीचका जलसै भर्या संसारजगत है
तासै होते नाही १ जैसै जहांको वासी तहांको मरमजाणै तैसै ही स्वसम्य
कृज्ञान मे तन्मयि होय कारे रहता है सो स्वसम्यकृज्ञानको मरमजाणता है
१ जैसे जिस हांडीमे खाणेकूं मिले ताकूं फोडणा तोडणा बिगाडणाजो
ग्य नही तैसैही येह लोकालोक जगत संसारमे जिसकूं स्वस्वभाव सम्यक्
ज्ञानकी प्राप्ति भई ऐसा संसारकूं बिगाडणा जोग्य नही १ जैसे
पूर्णजलसै भर्योघर शब्द नाही कर्ताहै तैसैही परिपूर्ण स्वस्वभाव समर
सनीरसे तन्मयि स्वयं स्वसम्यक् ज्ञानहै सो शब्दसे तन्मयि होय करिके न
ही बोलताहै १ जैसे जहां पर्यंत मंडपहै तहां पर्यंत बेलि बिस्तीर्ण होर
हीहै ऐसे नहीसमजणा के बेलडीमे बिस्तीर्ण होणेकी सक्ती नहीहै तै
सैही उस स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यकृज्ञान मयि परमातमा कोज्ञा
न लोकालोक पर्यंत बिस्तीर्ण होयरह्योहै ऐसै नही समजणा के उस

ज्ञानमयि परमातमासै येतावन्मात्रही ज्ञानहै अर्थात् जैसा येह लोका
लोकहै ऐसाही और सहस्र लक्ष लोकालोकबी होयतो वो स्वसम्यक्
ज्ञानमयि परमातमा येकही समयमात्र कालमें निराबाध पूर्वक जाणे
परंतु येह लोकालोक शिवाय दूसरो ज्ञेयकोई हैही नाही भावार्थ जा·
णे किसकूं जाणताहीहै सो क्याजाणे येहलोकालोकतो नि
ज्ञानमयि परमातमा का ज्ञानप्रकाशके भीतर अणुरेणुवत् नही-
जाणे किदर कहां पडेहै १ जैसे स्वप्नाकी मायाकूं छोडणा क्या अर ग्रह·
णकैसे करणा तैसेही वो स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहै सो इसअ
ज्ञान मयि लोकालोक जगत संसारकूं छोड करिके कहां पटके कहांडा
ले बहुरि ग्रहण करिके कहां राखे कहां धरे १ जैसे कांचकी हांडीमे दी
पक भीतर बाहिर प्रकास रूपहै तैसेही किसी जीवकूं गुरुपदेस द्वारा·
स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान सरीरके भीतर बाहिर प्रसिद्ध होवे सोजं

सहस्त्रबेर धन्यबाद योग्यहै १ प्रश्न स्वसम्यक् ज्ञानमयि परब्रह्म पर मातमाको अचलानुभव कैसे होय उत्तर हेशिष्य इस भवनमै तूं उच्चा स्वरसे अलाप ऐसे करिके तूंही तबशिष्य गुरुआज्ञा प्रमाण तिस भवनमं दिरमै उच्चा स्वरसे कहीके तूंही तबतत् समयही पलट करिके तिस शिष्य के कर्णद्वारा होकरि अंतः करणमे प्रतिध्वनि सोकीसोही पहोंचीके तूं ही तबशिष्य प्रतिध्वनी श्रवण द्वारा निश्चय धारण करिके स्वसम्यक् ज्ञा-न मयि परब्रह्म परमातमाहै सोही सोहं १ स्वसम्यक् ज्ञानानुभव श्रव-णाकरो जैसे कोहू पुरुष नीरसे भऱ्या घटमे सूर्यका प्रतिबिंब देख करिके संतुष्ट थो ताकूं निश्चय सूर्यकूं जाणतो पुरुष कहीके तूं ऊपर आकाश मे सूर्य है ताकूं देख तब वो पुरुष घटमै सूर्यकूं देखणा छोड करिके ऊप र आकाशमे देखणे लागे तब निश्चय सूर्यकूं देख करिके अपणा अंतः करणमे विचार कियाके जैसो ऊपर आकाशमे सूर्य दीखताहै तैसोही

घटमें सूर्य दीखताहै जैसो इहा तैसो उहां तैसो उहां जैसो इहां नइहां· दृष्टां·
नउहां अर्थात् जैसोहै तैसो जहांको तहां तैसेही स्वसम्यक् ज्ञानमयि
सूर्यहै सो तो जैसोहै तैसो जहांको तहां स्वानुभवगम्य है सोहै यह नय·
न्याय शब्दसे तन्मयि बणरह्याहै पंडित सो स्वानुभवगम्य सम्यक्
यि परब्रह्म परमातमाकूं अनेक प्रकारसे कल्पहै सो अथाहै १ जैसे येक
किसीको प्रियपुत्र द्वादश वर्ष पश्चात् परदेसमेंसे आयो आप्त प्रमाण मा·
ता माता सज्जनादिकसे मिले ताको आनंद हुयो सो फेर वो आनंद रहनाना
हीं आनंदको हेतु परदेसमेंसे आयो सो पुत्र विद्यमानहै
लाप समय प्रथमानंद हुवाथा तैसा आनंद अबहै नाहीं इहां प्रथमानंद
संभवैहै इसी आनंदसे सर्वानंदरूपहै तैसेही प्रथम स्वयंसिद्ध स्वस·
म्यक् ज्ञान मयि परमातमा परमानंद मयि प्रथमहै उसीसे भोगानंद जो ८६
गानंद धर्मानंद विषयानंद हिंसानंद दयानंद आदि जेता आनंद शब्द·

है सो स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा परमानंद का सूचक है १ जैसै अंध
कुटीमै बैठे हुवो पुरुष तिस कुटीके द्वारा होकरिके बाहिर मनुष्य पशू प
क्षी वृषभ घोटकादिक परहै ताकूं जाणतहै बहुरि स्वयं आपकूंवी जाण
तहै तैसेही स्वसम्यक्ज्ञानमयि सम्यक्दृष्टी स्वयंदेह अंधकुटीमै बैठ
करिके आपापरकूं जाणतहै १ जैसा बीज ताका तैसा फल २
सै देखताहै बहुरि नेत्रकूं नही देखताहै सो अंधवत् स्यात् तैसेही ज्ञान
से जाणताहै बहुरि ज्ञानकूं नही जाणताहै सो अज्ञानवत् स्यात् १
नट नाना प्रकारका स्वांग धारैहै परंतु आप अपणा दिलमै जाणताहै
नताहै के येह जैसा स्वांगहै तैसा मैनाही तैसेही स्वसम्यक्ज्ञान मयि स
म्यक्दृष्टीहै सो अपणा आपमै आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानसे तन्मयिहै
ताकूं तो स्वांग न मानतहै न समजतहै परंतु स्वस्वभाव सम्यक्ज्ञानसे त
न्मयी नाही तिस सर्वहीकूं स्वांग जाणताहै मानताहै १ जैसे घरके अ

ग्नी लागे ताके प्रथम कूप खोदणा जोग्यहै तैसैंही येह देह कुटीके काला
ग्नि लागै ताके प्रथम सद्गुरु बचनोपदेस द्वारा देह कुटीके भीतर बाहिर म
ध्य निरंतर स्वसम्यक् स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान मायिस्वभाव वस्तूहै
ताकूं तन्मायि समज लेणा मान लेणा योग्यहै १ जैसै चकवा चकवी सा
यंकाल रात्री समय अलग अलग होजाते है सो कोण उनकूं द्वेष भाव
सै अलग अलग कर्ताहै बहुरि प्रात काल सूर्योदय समय यह चकवा च·
कवी परस्पर मिलतेहै ताकूं कोण प्रीतराग भावसैं मिलाते है तैसै ही
जीव अजीवकूं कोणनो प्रीतराग भावसैं मिलायाहै बहुरि कोण द्वेषभा
वसैं अलग अलग करताहै १ जैसै स्ववर्णका अनेक भेद अलंकारहै
नेक भेद अलंकारकूं गलादेवैतो येक केवल स्ववर्णहीहै तैसैही येक स्व·
यंसिद्ध स्वसंम्यक ज्ञानहै ताका भेद कुमतिज्ञान कुश्रुति ज्ञान कुअवधि·
ज्ञान मतिज्ञान श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान मनपर्ययज्ञान केवलज्ञान

दि भेदहै ताकूं गालदेइ बोदे तो येक केवल स्वयं सिद्ध स्वसम्यक्
है १ जैसै सूर्यका प्रकासमै अंधकार कहाहै सूर्य निकास लीयो तो प्र-
तिबिंब कहाहै आत्मज्ञानी कूं जगत संसार मृगजलवत है सूर्य न होय-
तो मृगजल कहांहै ऐसै गुरुपदेस द्वारा आपकूं आपमै आपमयि
हीमै आपकूं खैचलियेसे आकार कहाहै ऐसै जगत संसार है सो •
है भरमउडगये तो जगत संसार कहांहै १ जैसै जल अग्नी को संयोग
य करिकै गरमहै परंतु गरमहै नही क्यूंके उसी गरमजलकूं अग्नी के
पर डालदे पटकदे तो अग्नी उपसम होजाती है बूजजाती है तैसै ही स्व
सम्यक् ज्ञान है सो क्रोधादिक अग्नी को संयोग पाय करिकै संतप्त होजा
ते है परंतु संतप्त होते नाहीं क्यूंके उसी स्वसम्यक् ज्ञानकूं क्रोधादिक अ
ग्नी के ऊपर वा संसार जगत के ऊपर डालदे पटकदे तो क्रोधादिक अग्नी ब
हुरि संसार जगत उपसम होजाते है १ जैसै सूर्य को प्रकास तथा आका

श सर्वत्रहे तैसैही स्वसम्यक्ज्ञान सर्वक्षेत्र काल भव भावादिकहे त
हे निश्चयनयात् १ स्वसम्यक्ज्ञान स्वभावमे रात्री दिवसका भेद नसंभ-
वे इसी वास्ते स्वसम्यक्ज्ञानको नाम सदोदय सूर्यहे १ जैसे बालक
डका लडकी बाल्यअवस्थामे गुडागुडी बनाय करिके मैथुनादिक
पभोग आभाषमात्र कर्ताहे परंतु योवन
नादिक भोगोपभोग उसीही लडका लडकीकूं निश्चय मान होजावेहे
तब पूर्वकृत्य गुडागुडीकूं असत्यजाण करिके येक ठिकाणै समेट क-
रिके राख देताहे तैसेही किसीकूं गुरुपदेश द्वारा काल लब्धी पावक द्वा
रा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञान स्वभावकी अचलता
दता होणेजोग्य होचुकी सो धातु पाषाण काष्टादिककी मूर्ति जहांकीन
हां दूसरे बालवतके अर्थ राख देताहे १ जैसै समुद्रका जल खाराहे परंतु उ
सीसमुद्रके तट कूप खोदे तो जल मिष्ट निकलताहे तैसैही गुरुपदेस

करिके कोहू संसार क्षारसमुद्रके तट खोजैगा तो स्वसम्यक् ज्ञान मिष्ट
जलका लाभ होवैगा १ जैसैं दोहा बीजराख फरव भोगवे ज्यूं की
साएजगमांहि ॥ त्यूं चक्रीनृपफरवकरे धर्मबिसारनाहि ॥१॥ तैसैही
कोहू स्वसम्यक् ज्ञानमयि स्वभावबीजकूं आपका आपमे आपमयि आ
पहीके पास आपही राख करिके पश्चात् संसारका शुभाशु
ताहै ताको स्वभावधर्म कदाचित् कोहू प्रकारबी नष्ट होनेनाही १ जैसैब्र
क्षकी जड मूलमे इच्छाप्रमाण जलडालो परंतु समयपाय फल लागैगा
तैसैही मिथ्याद्रष्टीकूं इच्छाप्रमाण स्वसम्यक् ज्ञानोपदेस देवो तथा सा
क्षात् सूचक बचन कहोके तूही जिनेंद्र शिव स्वसम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव
सूर्यहै ऐसा सूचक बचन कहते संतेबी मिथ्या द्रष्टीके स्वसम्यक् ज्ञानानु
भवकी अचलता परमावगाढता काललब्धी पाचकहुये बिना होनीनाही
१ जैसै सूर्य प्रकाश कर्ताहै अंधो नहीं देखनो तो सूर्यकूं क्या दोष तैसे स

नगुरु सम्यक् ज्ञानोपदेस कर्ता हे मिथ्यादृष्टी स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकी
परभावगाढता नही धारण कर्ता हे ताको सतगुरूकूं क्यादोष १ जैसे
दीपकतो अन्य घट पटादिक वस्तूकूं प्रगट नाही कर्तो क्यूंके वह वस्तु
दीपककूं ऐसे कहती नाही प्रेरणा कर्ती नाही के हे दीपक तुम हमकूं
प्रगट करो तैसेही दीपक उस घटपटादिक वस्तूकूं कहतो नाही प्रेर-
णा कर्तो नाही के हे घट पटादिक वस्तू हो तुम मोकूं प्रगट करो तैसे ही
स्वसम्यक् ज्ञानदीपक हे सो तो अन्य संसार वा तनमन धन बचनादिक
स्तूकूं बहुरि तन मनधन बचनादिकका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया
कर्म हे ताकूं अर इनका शुभाशुभ फल हे ताकूं प्रगट नाही कर्तो क्यूंके
येह संसार तनमन धन बचनादिक वस्तु हे सो बहुरि इनका शुभाशुभ
व्यवहार क्रिया कर्म हे सो अर इनका शुभाशुभ फल हे सो स्वसम्यक्
ज्ञानदीपककूं ऐसे कहते नाही प्रेरणा कर्ते नाही के हे स्वसम्यक्

दीपक तुम हमकूं प्रगट करो तैसैही स्वसम्यक्ज्ञान दीपक हैसो इस
संसार तन मन धन वचनादिक वस्तुकूं अर इनका जेता शुभाशुभव्य
वहार किया कर्म है ताकूं अर इनका शुभाशुभ फल है ताकूं ऐसै कह
तो नाही प्रेरणा कर्त्ता नाही के हे संसार तन मन धन वचनादिक वस्तु
हो अर तन मन धन वचनादिक वस्तके जेता शुभाशुभ व्यवहार कि
या कर्म हो अर इनके शुभाशुभफल हो तुम मोकूं प्रगट करो १ जैसै
बाजीगिर अनेक प्रकारका तमासा चेष्टा कर्त्ता है परंतु आप
लमै जाणता है के यह जैसा मै तमासा चेष्टा कर्त्ता हूं तैसो मै मूल
वहीसे नाही हूं तैसैही स्वसम्यक्ज्ञानमयि सम्यक्दृष्टी सर्व
शुभाशुभ कर्म चेष्टा कर्त्ता है परंतु आप अपणा दिलमै निश्चय ५
ता है के जैसा मै संसारका शुभाशुभ कर्म चेष्टा कर्त्ता हूं तैसा तन्मयि
दाचित् कोई प्रकारबी नाही हूं जैसा कर्म चेष्टा कर्त्ता हूं तैसा मै मलम्व

भावहीसे नाहीहूं १ जैसै बाजीगिर मिथ्या मृगजलवत् आम्रवृक्ष ल-
गातोहै ताकूं देख करिके किसी पुत्रको कहीके हे पुत्र वहो बाजीगिर·
आम्र वृक्ष लगायो सो मिथ्याहै परंतु पुत्रको पिता बाजीगिरकूं मिथ्या
नहीं जाणतोहै तैसेही स्वसम्यक् दृष्टी द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्म कूं मि
थ्या जाणतोहै परंतु जो कर्मसे अतन्मायि होय कर्मको कर्ताहै ताकूं मि
थ्या नहीं जाणताहै नमानताहै नकहताहै १ जैसै खडी पांडु आपस्व
मे वही श्वेतहै अर परजो भीत आदिककूं स्वेत करै है परंतु आप भीत·
आदिकसे तन्मायि होती नाही तैसेही स्वसम्यक् ज्ञान है सो सर्व संसार
आदिककूं चेतन वत् करि राखेहै परंतु आप संसार आदिकसे तन्मायि
होते नाही १ जैसे जेलखानामे बेडीसे बंधे तस्करादिक वीहै अर नि
सहीजेल खानामे निर्बंध शिपाई जमादार फोजदार वीहै तैसेही सं·
सार कारागारमे मिथ्या दृष्टी तो कर्मबंधयुक्त है बहुरि स्वसम्यक् दृष्टी

कर्मबंधरहितहै १ दृष्टांतमे तर्ककर्ताहै जिसकूं स्वभावसम्यक्ज्ञानको लाभनहीहोताहै १ जैसे सर्बतमे मिश्री एलायची दुग्ध काली मिरच विदामबीज केशर जलमिश्रित बहुत द्रव्यहै सो अपणे अपणे स्वभावगुण लक्षणमे भिन्नहै तथापि येक सर्वत नामहै तैसेही जीव पुद्गल धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य आकासद्रव्य कालद्रव्य येह षट्मयी संसारहै तामे ज्ञानगुण जीवमेहै और पांचद्रव्यमे नाही १ जैसे समुद्रमे अनेकनदी नालाकोजल जावैहै तहां येहवी भाग नाहीहै के योजल तो अमुकी नदीकोहै बहुरि योजल अमुकी नदीकोहै तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव समुद्रमे यह विभाग नही है के योज्ञानतो जैनकोहै अर यो ज्ञान वैश्नुकोहै अर यो ज्ञान शिवकोहै यो बोधका योनयायिक चार्वाक् पातांजली सांख्यकोहै इत्यादि कवी भाग बिधि निषेध स्वस्वभाव सम्यक्ज्ञानार्णवमे नसंभवे १ जैसे कोहू-

पुरुष सन्निपात युक्ति अपणा स्वघर मे सूतो है अर भरम भ्रांतियुक्त क
हता है के मै मेरा घरमे जाऊं तैसैही स्वयं ज्ञान मयि जीव अपणा ज्ञानम
यि स्वभाव मोक्षसे भिन्न नाही तथापि भरम भ्रांतिसे मोक्षमे जाणेकी
इच्छा कर्ता है १ आगे फकत केवल दृष्टांन द्वारा अपणा आपमे आप
मयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यका अनुभवलेणा इति अथ केवल दृष्टांन संग्रह प्रारंभ दोहा नमोज्ञा
नसिद्धांनकूं नमोज्ञानशिवरूप॥ धर्मदासवंदनकरै देखआनमाभूप
॥१॥ प्रश्न स्वसम्यक्ज्ञानमयि आत्मा कैसा है अर कैसे पाइये
को उत्तर दृष्टांत द्वारा कहते है यह आत्मा स्वसम्यक्ज्ञान मयि चेतन स्व-
रूप अनंत धर्मात्मक येक द्रव्य है ते अनंतधर्म अनंत नयकी गम्य है अ
नंत नय है सो सब श्रुति ज्ञान है तिस श्रुतज्ञान प्रमाणकरि आत्मा अ-
नंत धर्मात्मक जानिये है इस वास्ते नय निकरि स्वभाव सम्यक्ज्ञान

दिखाइयहे सोही आत्मा द्रव्यार्थक नय करि चिन्मात्र है दृष्टांत जैसै व-
स्त्र येकहे तैसे स्वभाव सम्यक् ज्ञान मधि आत्मा येकहे १ जैसै वस्त्र-
सूत तंतु आदि करि अनेकहे तैसैही स्वसम्यक् ज्ञान मधि आत्मा दर्शन-
ज्ञान चारित्र सुख सत्ता चेतन जीवत्वादि करि अनेकहे १ जैसे लोह मधि बा-
ण अपणा द्रव्य क्षेत्र काल भव भाव करि अस्तिहे तैसैही स्वसम्यक् ज्ञान-
मधि आत्मा अपणी आपमे आप मधि आप द्रव्य आपहीमे आप रहता
है वास्ते आपही क्षेत्र आपहीमे आप वर्तनाहे वास्ते आपही काल आप
ही आपका स्वभावहे मैहे वास्ते आपही भव भावकरि अस्तिहे १ जैसे लो
ह मधि बाणपर द्रव्य क्षेत्र काल भव भावादि करि नास्ति तैसैही स्वसम्यक्
ज्ञान मधि आत्मा परद्रव क्षेत्र काल भव भावादि करि नास्ति १ जैसे दर्पण
मे स्वमुख नही देखो तोबी स्वमुखहे बहुरि दर्पणमे स्वमुख देखो
मुखहे तैसैही हे स्वसम्यक् ज्ञान तूं तेरेकूं संसार जगत जन्म मरण नामा

नाम बंध मोक्ष स्वर्ग नर्कादिकमें नहीं देखै तोबी तूं अनादि अनंत निरं
तर सम्यक्ज्ञान हीहै बहुरि हे स्वसम्यक्ज्ञान तूं तेरेकूं सूर्य प्रकासवत्
क तन्मयि तेरा तेरेही भीतर तूंही तेरेकूं देखे तोबी तूं सोका सोही
दि अनंत निरंतर स्वसम्यक्ज्ञान नहींहै १ जैसे कोहू स्वहस्तसे आपही
का स्वस्थानमें आपहीकी स्वसिंदूकमें तिजोरीमें रतन राखै राख करिके
और बातिमें लाग जावै तब तिस रतनकूं भूलबी जावैहै परंतु जब या
रै तबही सो रतन अनुभवमें आवै है तैसेही कोहू शिष्यकूं सतगुरु
नोपदेस द्वारा तथा काल लब्धि पाचक द्वारा स्वस्वरूप स्वसम्यक्
भव होणे जोग थो सो होगये परंतु पूर्व कर्म बसात् और बातिमें लाग
तब तिस स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकूं भूलिबी जावैहै परंतु जब याद करै तब
सासात् षो स्वानुभवमें आवैहै १ इसीके अर्थ तीन दृष्टांत जैसे येक वेर
चंद्रकूं देखलीये चंद्रानुभव नहीं जाते १ जैसे येक वेर गुडकूं रच



९२

गुडानुभव नही जाते जैसै येकबेर भोग भोगे पश्चात् भोगानुभव नही जाते १ जैसै काहू दर्पणकूं सदा काल स्वहस्त मै लिये रहताहै ताकी मषीबेर बेर देखताहै तिस करिकै स्वमुख दीखने नाही दर्पणकी मषीकूं पलट करिकै स्वच्छ दर्पणमै स्वमुख देखै तो स्वमुख दीखै तैसैही मिथ्यादृष्टी इस संसार तन मन धन वचनकी तरफ बहुरि तन मन धनका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म अर इनका शुभाशुभ फलकी तरफ देखताहै यातै स्वसम्यक्ज्ञान नही दीखतो नही स्वानुभवमे आतो बहुरि इन संसार तन मन धन वचनादिककी तरफ देखणा छोडकरिकै स्वसम्यक्ज्ञानकी तरफ निश्चय देखै तो स्वसम्यक्ज्ञानही दीखै स्वसम्यक्ज्ञानानुभवकी अचलता परमावगाढता होवै १ लोकालोककूं जाणवाकी बहुरि नही जाणवाकी येह दोऊ कल्पनाकूं सहज स्वभावहीसै जाणताहै सोही स्वसम्यक्ज्ञानहै १ जैसै हरित रंगकी मेंदीमें

लालरंगहै परंतु दीखतो नाही पत्थरीमे अग्नीहै परंतु दीखती नाही
दुग्धमे घृतहै परंतु दीखतोनाही तिलमे तेलहै परंतु दीखतो नाही
पुष्पमे सुगंधहै परंतु दीखती नाही तैसेही जगतमे स्वसम्यक्‌ज्ञान
मयि जगदीश्वरहै परंतु चरमनेत्र द्वारा दीखतोनाही किसीकूं सतगुरु
बचनोपदेस द्वारा काललब्धि पाचक द्वारा स्वभाव सम्यक् ज्ञानसे तन्म॰
यिस्वभाव सम्यक्‌ज्ञानानुभव मे अचल दीखताहै १ जैसे व्यभिचार॰
णीस्त्रीस्वघर कार्य कर्तीहै परंतु ताको चित्त मन व्यभिचारि
फ लागरह्योहै तैसेही स्वसम्यक् दृष्टी पूर्वकर्म प्रयोगात् संसारिक॰
माकार्य कर्ताहै परंतु ताकोचित्त मन स्वसम्यक् ज्ञानमयि
तरफ लागरहताहै १ जैसे जिसस्त्रीका शिरकेऊपर भरताहै स्यात् सो
स्त्री परपुरुषका निमित्तसे गर्भबी धारण करे तो ताकूं दोष लागते नाही
तैसेही किसी पुरुषका मस्तगसे तन्मयि मस्तगकेऊपर

मथि परब्रह्म परमातमा है स्यात् सो पुरुष परकर्म वसात् दोषवी
करै तो तापुरुषकूं दोष लागनै नाही बडेका सरणा लेणेका येही फल
है १ जैसे मूका पुरुषका मुखमै गुडखंड देकरि पश्चात् मूकासे बूजीके
कहो मूका गुडकेसा मिष्टहै इहां मूकाकूं गुडका मिष्टानुभवहै परंतु
हनही सक्तो तैसेही किसीकूं गुरुवचनोपदेस द्वारा स्वसम्यक
भवकी अनलता परमावगाढता होणेजोगथी सो होचुकी
हीसक्तो १ जैसे हस्तीका दंत बाहिर दीखणेका औरहै बहुरि भ
षणे खाणेका औरहै तैसेही जैन बौध्द आदिक कारुषी मुनी आचार्य
का रचेहुये बेद सिद्धांत सास्त्र सूत्र पुराणादिकहै सोतो हस्तीका बाहि
रका दंतवत् समजणा बहुरि भीतरका आसय असल जिसका जो ही
जाणै १ बंधको बिलास डालदीजे पुद्गलपै तथा देहीका विकार तुम दे
हाशिर दीजिये १ स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानहै सोतो तनमन धन बचनादि

करसै तन्मयि नत्त्वरूप कदापि नाही फिरगुरु स्वसम्यक् ज्ञानानुभव॰
की अचलता अवगाढता निश्चयता करदेताहै धन्यहै गुरु सहस्त्रवेर
धन्यहै १ जैसै जैन वैश्नु बोद्ध शिवादिक कोइ ही हो जोचोरी करैगो॰
सो बंधमै पडैगो तैसैही कोइ ही हो जोकोइ गुरु वचनोपदेस द्वारा वा
काललब्धि पाचक द्वारा आप का आपमै आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानानु
भवकी अचलता परमावगाढता धारण करैगो सोही संसार भरम जा॰
लसै भिन्न होयकै सदाकाल स्वरवानुभवमै मगनरहैगो १ प्रश्न ॥
आत्मा कैसाहै अर कैसै पाइये ताकाउत्तर दृष्टांत द्वारा कहतहै येहआ
त्मा चैतनस्वरूप अनंतधर्मात्मक येकद्रवहै ते अनंतधर्म
गम्यहै अनंतनय सब श्रुतज्ञानहै तिसश्रुतज्ञान प्रमाण करि आत्मा॰
अनंत धर्मात्मक जानियेहै इसवास्तै नयनिकरि वस्तु दीषाइयेहै
आत्मा द्रव्यार्थिक नयकरि चिन्मात्रहै दृष्टांत जैसै वस्त्र येकहै अर सो॰

ही आत्मा पर्यायार्थिक नयकरि ज्ञान दर्शनादिक रूपकरि अनेक है
जैसे सोही चरूा सूतके तंतु वनिकरि अनेक है अस्तित्व नयकरि सो-
ही आत्मा स्वद्रव्यक्षेत्र काल भावनिकरि अस्तित्व रूपहै जैसे लोहम-
यी वाण अपने चतुष्टय अस्तित्व रूपहै लोहातो द्रव्यहै धनुष अरगु
णके बीचरहेहै ताते वह बाणका क्षेत्रहै जो साधनेका समय है सोका
लहै निसाणेके सन्मुख है सो भावहै इसभांति अपणे चतुष्टय करि-
लोह मयि बाण अस्तित्व रूपहै और नास्तित्व नय करि सोही आत्मा
परद्रव षेत्र काल भावकरि नास्तित्व रूपहै जैसे लोह मयी बाण सोही
लोहाके बाणनाही और धनुषगुण बाचि नाही और साध्या नाही
रनिसाणेके सन्मुष नाही ऐसे सोही लोहमयी बाण परचतुष्टय करि
नास्तित्व रूपहै और अस्ति नास्ति नयकरि स्वचतुष्टय परचतुष्टय कों
क्रमसों सोही आत्मा अस्ति रूपहै जैसे सोही बाण स्वचतुष्टय परचतु-

ष्टय क्रम विवक्ष्याकरि अस्ति नास्तिरूप होहै अर अव्यक्त नयकरि
ही आत्मा येकही वार स्वचतुष्टय परचतुष्टयकरि अव्यक्तहै जैसे
बाण स्वपरचतुष्टय करि अव्यक्तव्य संधेहै और अस्ति अव्यक्तव्य नय
करि सोही आत्मा स्वचतुष्टय करि और येकही वार स्वपर चतुष्टय करि-
अस्तिरूप अवक्तव्य बाणके दृष्टांतकरि जानना और नास्ति अव्यक्त
व्य नयकरि सोई आत्मा परचतुष्टय करि और येकही वार
यकरि नास्तिरूप अव्यक्तव्य बाणके दृष्टांत करिजानना और अस्ति-
नास्ति अव्यक्तव्य नयकरि ये सोही आत्मा स्वचतुष्टय करि और परचतुष्ट
यकरि और येकही वार स्वपर चतुष्टयकरि अस्तिनास्ति रूप अव्यक्तव्य
बाणके दृष्टांत करिजानना सविकल्पनयकरि सोही आत्माभेदलीये
है जैसै येक पुरुष कुमार बालक जुवान वृद्ध भेदनिकरि
है और अविकल्पनयकरि सोही आत्मा अभेद है जैसै येक पुरुष पुरु

षत्व करि अभेदरूप है नामनय करि सोही आत्मा शब्द ब्रह्म करि नामले
करि कह्या जावै है स्थापना नयकरि सोही आत्मा पुद्गल का अवलंबन क
रि थापिये है जैसे मूर्तिक पदार्थ थापिये है द्रव्य नयकरि सोही आत्मा अ
तीत अनागत पर्याय करि कहिये है जैसे श्रेणिक महाराजा तीर्थंकरका
द्रव्यधारा है भावनयकरि सोही आत्मा जिस भाव परिणाममें है तिस परि
णामसे तन्मयी होहै जैसे पुरुषाधीन स्त्री विपरीति संभोगविषे प्रव-
र्त्ती तिस पर्याय रूप होहै सामान्य नयकरि सोही आत्मा अपने समस्त
पर्यायनिविषे व्यापी है जैसे हार सूत सर्व मुक्ताफलनिविषे व्यापी है वि
शेष नयकरि सोही आत्मा येक पर्याय करि कहिये है जैसे तिस हारकाये
क मुक्ताफल सब हारविषे अव्यापी है नित्य नयकरि सोही आत्मा ध्रुवरू
प है जैसे नट अनेक यद्यपि स्वांग धरै है तथापि सोही नट कहै अ्नि
करि सोही आत्मा अवस्थांतर करि अनवस्थित है जैसे सोही नट राम राव·

रणादिकके स्वांग करि ओरका ओर होहै सर्वगत नयकरि सकलपदार्थ
वर्तिहै जैसे षुली आंष समस्त घट पटादि विषै पदार्थ विषै प्रवर्तै है अ
र सर्वगत नयकरि आपही विषै प्रवर्ते है जैसे मुंद्या हुवा नेत्र आपही
विषै है सून्य नयकरि केवल येकही सोभायमान है जैसे सूना घर येक
होहै असून्य नयकरि अनेक करि मिल्या हुवा सोभै है जैसे अनेक लो॰
कनिकरि भरी नांव सोभै है ज्ञान ज्ञेयके अभेद कथनरूप नयकरि येक
है जैसे अनेक इंधनाकार परिणया हुवा अग्नि येक है ज्ञान ज्ञेयके भेद
करि कथनकरि अनेक है जैसे अनेक घट पटादि पदार्थनिके प्रतिबिंब॰
निकरि मार्तंड अनेकरूप होहै नियतिनयकरि अपने निश्चित स्वभाव॰
कौंलिये होहै जैसे पाणी अपणे सहजीक स्वभाव करि सीतलता लिये
होहै अनियतिनयकरि अनिश्चित स्वभाव होवे जैसे पाणी अग्नीके संबं
धसौं उष्ण होहै स्वभाव नयकरि काहू करि समारया नाही होना जैसे स्व॰

वकरि कांटाबी नाही घडे घडयासा तीषा होवैहै कालनयकरि र
के आधीन सिद्धत्वहै जैसै ग्रीष्म कालके अनुस्वार सहज डालका
पकैहै अकाल नयकरि कालके आधीन सिद्ध नाही जैसै कृतम घासकी
उपमा करि पालके आंब पकैहै पुरुषाकार नयकरि जतनसै सिद्ध होवै
है जैसै साहित उपजायवेके वास्ते जतन करैहै काष्टके मादल विषे यक
मक्षिका राषियेहै तिस मधुमक्षकाके शब्दसौं और सहतकी
आय आय मधुच्छता करैहै ऐसै जतन सौंभी सहतकी सिद्धि
तैसै जतनसौंभी सिद्धहै देवनयकरि यतन बिनाही साध्यकी सिद्धि-
होवै जैसै जतन कीयाथा सहतके वास्ते मादल विषे मधुमक्षकाका
और तिस मधुछता विषै देव संजोगतै माणिक पाइयेहै तैसै यतन-
बिनाभी सिद्धि होवै इश्वर नयकरि पराधीन हुवा भोगवैहै जैसै बाल
क धायके आधीनहुवा खानपान क्रिया करैहै गुणिनयकरि गु

ग्रहण करणे वालेहै जैसे उपाध्याय करि सिखायाहुवा कुमार गुण
ग्राही होवै अगुणि नयकरि केवल साक्षीभूतहै गुणग्राही नाही-
जैसे उपाध्याय करि सिखाइये जो है कुमार तिसकारषवाला पुरुषगु
णग्राही नाही होता कर्त्तानयकरि रागादि परिणाम तिनका कर्त्ता है
जैसे रंगरेज रंगका करणेवाला होवै अकर्त्तानयकरि रागादि परिणामी
का कर्त्ता नाही साक्षीभूतहै जैसे रंगरेज अनेक रंग करै है और कोहू न
मासगीर तमासा देषैहै कर्त्ता नाही होता भोक्ता नयकरि सुष दुषका
भोक्ता होवै जैसे हित अहित पथ्यकूं लेता रोगी सुष दुष कूं भोगवैहै
अभोक्ता नयकरि सुष दुषका भोक्ता नाही केवल साक्षी भूतहै जैसे
हित अहितका पथ्यका जो भोक्ताहै रोगी ताका तमासगीर धनवंत
र वैदका चाकर साक्षीभूतहै क्रियानयकरि क्रियाकी प्रधानता करि
सिद्धि होवै जैसे काहू अंधने महा दुखतेंकाहु पाषाणके थंबकूं पाय

अपना माथा फोडे तहां तिस अंधके मस्तग विषे ज्यो रुधिर विकार था सो दूर भया ताते ताके द्रष्टी हुई और तिसही जागे उनकूं निधान पाया तैसै क्रिया कष्टकर भी वस्तुकी प्राप्ती होवै ज्ञान नय करि विवेक हीका प्रधानता करि वस्तुकी सिद्धि होवै जैसै काहू रत्न परिक्षक पुरुषथा तिनने काहू अजाण दीन पुरुषके हात चिंतामणि रत्न देख्या तब तिस दीन पुरुषकूं बुलाय अपणे घरके कूणामें जायकरि येक चीणाकी मूठीके बदले चिंतामणि रत्न लीना जैसे क्रिया कष्ट नाही ज्ञान करि वस्तुकी सिद्धि होवै व्यवहार नय करि येह आत्माकूं बंध मोक्ष अवस्थाकी द्विविधा विषै प्रवर्तै है जैसे परमाणु सूं बंधे खूले है तैसे येह आत्मा बंध मोक्ष अवस्थाकौं पुद्गल सूं धरै है निश्चय नय करि परद्रव्यसौं बंध मोक्ष अवस्थाकी द्विविधाकूं नाही धरै है केवल अपणेही परिणामनिसौं बंध मोक्ष अवस्थाकौं धरै है जैसै येकला परमाणु बंध मोक्ष

अवस्थाकौं जोग अपणे स्निग्ध रुक्ष गुण परिणामकौं धरतासंतां
ध मोक्ष अवस्थाकौं धरैहै असद्भूत नय करि यह आत्मा औपाधिक
भेदस्वभावलियेहै जैसै येक मृत्तिका घट सरावा आदि अनेक
षहोहै सद्भूत नय करि निरुपाधि अभेदस्वभाव रूपहै जैसे भेद भाव
रहित केवल मृत्तिका होवै इत्यादि अनंतनयनिकरि वस्तुकी सिद्धि
होवै वस्तु अनेकप्रकार वचन विलास करि दिखाइयेहै जेता वचन
तेताही नयहै जेती नयहै तेताही मिथ्यावादहै श्लोक सएव·
मुक्तानयपक्षपातं स्वरूपगुप्ता निवसंति नित्यम् ॥ विकल्पजालच्युत
शांतचित्ता सएवसाक्षातदमृतंपिबंति १ येकस्यबद्ध·
त्रितिहौ द्वाव्यतिपक्षपातौ ॥ येतस्तवेदीच्युतपक्षपातस्तस्यास्तिनि·
त्यंखलुचित्चिदेव ॥२॥ इत्यादि॰ जातैं येक नय कौं सर्वथा मानिय·
तो मिथ्यावादहोय अरज्यो कथंचित मानिये तो जथार्थ अनेकांतरूप·

सर्वज्ञवचनहोय तातैं येकांतना निषेधहै येकही वस्तु अनेक नयकरि
साधियेहै येह आत्मा नयकरि और प्रमाणकरि जानियेहै जैसै येक
समुद्र जब जुदे जुदे नदीनके जलनि करि साधिये तब गंगाजमुनादि-
कके स्वेत नीलादि जलनिके भेदकरि येक येक स्वभावकों धरैहै तैसे
येह आत्मा नयनिकी अपेक्षा येक स्वरूपकों धरैहै अर जैसै सोही स
मुद्र अनेक नदीनिके जलनिकरि येक समुद्रहोहै भेदनाही अनेकां
तरूप येक वस्तुहै तैसे येह आत्मा प्रमाण विवक्षाकरि अनंत स्वभाव
मयि येक द्रव्यहै इसप्रकार येक अनेक स्वरूप नय प्रमाण करि साधि
येहै नयनिकरि येक स्वरूप दिखाइयेहै प्रमाण करि अनेक स्वरूपदि
षाइयेहै इस प्रकार स्यात् पदकी सोभा करि गर्भित नयनिके स्वरूप-
करि और अनेकांतरूप प्रमाण करि अनंत धर्म संयुक्तहै शब्दचि-
न्मात्र वस्तु ताको जे पुरुष अवधारैहै ते पुरुष साक्षात् आत्मस्वरूपके

अनुभवी होवे येह आत्मा द्रवका स्वरूप जानना अब तिस आत्मा·
की प्राप्तिका प्रकार दिषाइये है येह आत्मा अनादि कालतै लेकरि
लीक कर्मके निमित्ततैं मोह मदिराके पान करि गमन हुवा घूमहै समु
द्रकीसी नाही आपही विषै विकल्प तरंगनिकरि महा क्षोभित है क्र·
मकरि प्रवर्तैहै जो अनंत इंद्रिय ज्ञानके भेद तिनकरि सदाकाल पलट
वेकौं प्राप्त होवे येक रूप नाही अज्ञान भाव करि पररूप बाह्य पदार्थ
निविषै आत्म बुद्धी करि मैत्री भाव करै है आत्म विवेककी सिथिलता
करि सर्वथा बहिरमुख हुवा है बारबार पुद्गलीक कर्मके उपजावनहारे·
जो है राग द्वेष भाव तिनकी द्वैतता विषै प्रवर्तैहै ऐसे आत्माकूं
चिदानंद परमातमाकी प्राप्ती काहेसे होय कहांसे होय और येह
त्माजो अषंड ज्ञानके अभ्यासतै अनादि पुदगलीक कर्म करि उपजाया
जो था येह मिथ्या मोह ताकौं अपना घातक जान भेदविज्ञान करि

पसे जुदा करि केवल आत्म स्वरूपकी भावनाते निश्चल थिर होय तो आ
पने स्वरूप विषै निस्तरंग समुद्रकीसी नाई निःकंप हुवा तिष्टेहे येकही
बार तृप्त भयाजोहे अनंत ज्ञानकी सक्तिके भेद तिनकरि पलटता नाही
अपणी ज्ञानकी सक्तीनिकरि बाह्य पररूप ज्ञेयपदार्थनि विषै मैत्री-
भाव नाही करैहे निश्चल आत्मज्ञानकी विवेक करि अत्यंत स्वरूपसौ
सन्मुष हुवाहे पुदगलीक कर्म बंधके कारणजोहे राग द्वेष भाव तिनकी
द्विविधाते दूर रहहे ऐसाजो परमातमाका आराधक पुरुषहे सो भग
वंत आत्मा पूर्वही न अनुभयाथा अरज्ञानानंद स्वभावहे परमब्रह्म
हे ताकौ प्राप्त होवहे आपही साधकहे अवस्थाके भेदतै साध्य साध
क भेदहे येह समस्तही जोहे जगतजीव सोभी ज्ञानानंद स्वरूपजोहे
परमात्म ज्ञान तिसकू प्राप्त होहु आर आनंदरूपज्योहे अमृतजलति
सके प्रभावकरि परिपूर्ण वहेजोहे वह केवलज्ञान रूपणी नदी तिस

विषैज्यो आत्मतत्व मग्नहोइ रह्याहै ओरजो तत्व समस्तही
क देषवेकूं समर्थहै अरजो तत्वज्ञान कारि प्रधानहै अर ओतत्व अ
ष श्रेष्ठ महा रतनकीसीनाई अति शोभायमानहै अर वो तत्व लोका-
लोकसैं अलगहै जैसा लोकालोकहै तैसो वो तत्व नहीहै अरजैसो
तत्वहै तैसा लोक अलोक नाही सूर्ज अंधारा कासा अंतरहै
कके अरउसतत्वके अर वो तत्व लोकालोककूं देषवे जाणवेकूं समर्थ
अर लोकालोकउसतत्वकूं देषणे जाणणेकूं समर्थ नहीहै उस तत्व-
कूं श्याद्वाद रूप जिनेश्वरके मतकूं अंगिकार करिये जगत जन अंगिक
करिये जगलजन अंगिकार करो जाते परमानंद रूषकी प्राप्ति होय २
जैसे दीपकके ज्योतिके भीतर कालिमा कज्जलहै तैसैही केवल
ज्योति परमातमाके भीतर येह जगतजुगत जोग तूं मैं येह वह हूं हूं २००
धि निषेध बंध मोक्षादिकहै येक दीपगसैं हजार दीपग जोये परंतु

थ दीपज्योति तो जैसाको तैसो भिन्नहै सोहीहै कलस हांडा वास-
ण होताहै अर बिगड जाताहै परंतु माटी तो नहोवै अर नबिगडै स्व-
र्णका कडा मुंदडा हो जाताहै अर बिगड जाताहै परंतु स्वर्ण तो न
होवै अर नबिगडै खाबूमण गहूं चीणा मूंग मोठ होताहै अर षरच हो
जाताहै अर फेर वही खाबूमण गहूं चीणा मूंग मोठ जैसाका तैसा उत्पन्न
होताहै अर्थात् बीजका नास कदाचित् बी नाही समुद्र मैसै हजार
पाणीका भरि करिकै बाहीर नीकास दे तो समुद्र तो जैसाको तैसो है
हीहै अरउसी समुद्रमै हजार कलस पाणीका अन्यस्थानसै भ-
लाय समुद्रमै डार दे तोभी समुद्र जैसाको तैसो है सोहीहै अरस्त्री रंड
परस्तकूं प्राप्ति होवै अर फकत काजल टीकी नथ येह नही पहरै
अोर सर्व आभूषण पहरे रहै तो बी उसकूं रंडाही कहणा जोगहै मो-
ती समुद्रके पाणीमै होताहै अर उस मोतीकूं सो वरस लग बी पाणीमे-

पदक्यो राषै तौबी वो मोती गलता नही अर वो मोती हंसके मुषमे·
जाते प्रमाण गलजातोहै सूर्य है सो सूर्य कूं वृथाही दूंढताहै अर अं·
धाहै सो अंधारासें अलग होणेकी वृथाही इच्छा करतो है सास्त्रमे·
लिषतेहैके मुनी २२ वाईस परिस्या सहताहै १३ तेरा प्रकारको चारि
त्र पालताहै १० दस लक्षण धर्मपालताहै १२ भावनाहै १२ बारा
रको तप कर्ताहै इत्यादिक मुनी कर्ताहै तो इहा ऐसा विचार आताहै मु·
नीतो येक अर परिस्या २२ चारित्र १३ प्रकारको दस लक्षण धर्म वा येक
धर्मका दस लक्षण १२ बारा तप १२ भावना इत्यादि बहुत भूमि कुछ आ
रहे अर वाइस परिस्याकुछ आरहे वाइस परिस्याको अर मुनीको
उष्णतावत् तथा सूर्य प्रकाशवत मेलनहीं ऐसेंही तेरा प्रकार काचारित्र·
का अर मुनीका मेल अग्नीउष्णता वा सूर्य प्रकासवत मेलनाहीं वाऐसे
ही दसलक्षणधर्म बारातप बारा भावनाका अर मुनीका मेल अग्नीउष्ण·

तावत् सूर्यप्रकाशवत् मेल नाही। आकासमै सूर्य है ताको प्रतिबिंब घृ
ततैल की तप्त कडाहीमै अवटन है तोबी उस सूर्यका प्रतिबिंबको नास
होतो नाहीं कांचका महलमै स्वान अपणाही प्रतिबिंबकूं देषकरिकै भु
क्‌ भुक्‌ करिकै मरतोहै फटककी भीतमै हस्ती अपणी प्रतिछाया देष
करिकै आप उस भीतसे भड भेटलेकर आपका आप दांत तोडि करिकै
दुःखी हुवो वानर मृकट वड वृक्षके ऊपर रात्रीसमय वैठ्योथो वृक्षके न
चेयकसींह आयो चंद्रमाकी चांदणीमै उस वानरकी छाया सिंघकूं दी
षी देषकरिकै वोसिंघ उस छायाकूं सांचो वानरजाण करिकै गर्जना करि
कै उस वानरकी छायाकीपंजा के दीनो तव वृक्षके ऊपरि वैठोहुवो वानर
भयवानहोय नीचे आय पड्यो एकसिंघ कूपमै अपणी छाया
कै आप अपणा दिलमै जाणीके यो दूसरो सिंघहै तव गर्जना करि तो
कूवामैसैं अवाज सिंघ शब्द साहश आई तव वोसिंघ उछल करिकै कूप

मे गीर पड्यो· येक गऊचरावणे वालो गवाल के तुरत को जन्म्यो सिंघ को·
बच्चो हाल लगगयो तब वो गुवाल उस सिंघके बच्चाकूं ले आयो ल्याय क
रिकै बकरी बकराके सामील राष दीयो वोसिंघको बच्चो बकरीको दूधपी
व अर आपणो आपो भूल बकरा बकरीकूं अपणा संगाती जाण करि
कै रहताहै ललनीको स्वो अपणा पंजासे पकड वानरो चीणाकी मू·
ठी वांधीसो छोडतो नाही छद्रव्यहै ताका नसान होव नपांच होव
यहै अंधकारयुक्त येक मोटा स्थानमे दस वीस पचास मनुष होवे सो प·
रसपर शब्द वचन श्रवण करिके वोउसका निश्चय कर्ताहै २ अर शब्द·
श्रवण करिके देषणेजाणणेकी इच्छा कर्ताहै मेघ वादलमे सूर्यहै ता·
कूं कोई कालोवामेघ वादलसादृश्य मानताहै सो मिथ्या दृष्टहै ओरसू
र्जकूं आडा मेघ वादल आय जावे तब सूर्ज आपका सूर्जपणाकूं छोड·
करिके कह बिचारके मै तो सूर्ज नही मेघ वादल हूं ऐसो सूर्ज आपकूं स·

मजैतो वो सूर्जबी मिथ्यादृष्टीहीहै मार्गमे पंक्तीबंध वृक्षहै ताकी
बी पंक्ती बंधहै येक पुरस उस छाया पंक्तीके बराबर चल्योजावैहै तहां
पंल छाया जावैहै येक आवैहै तप्त लोहाके गोलामें अग्नी भीतर बा-
हिरहै परंतु अग्नी लोहा अलग अलगहै चंद्रमा बादलमे छुप रह्याहै
परंतु चंद्र और बादल अलग अलगहै ध्वजा पवनके संजोगसे स्वमे
वही उलजातीहै अर सुलजतीहै चूरण कहणेमात्र येकहै परंतु सूं
ठ मिरच पीपल हरडै आदि सर्व दरव अलग अलगहै येक चूंदडीमें
अनेक बुंदहै येक कोटमे अनेक कांगराहै येक समुद्रमे अनेक लह-
री कलोलहै येक सुवर्णमे अनेक आभूषणहै येक माटीमे अनेक
हांडा वासणहै येक पृथीमे अनेक मठ मकानहै तैसेही येक
तमाका केवलज्ञानमे अनेक जगत झलक रह्याहै कृष्णरंगकी गो ४
भलाइहो परंतु उसको दुग्ध मीठाही होनाहै लोहाके पिंजरामे

सं·दी हुवो पोपट राम राम कहता है केवल राम राम कहणेसे दृष्टां·
१०३ नही छूट्या तो ऐसा राम राम कहणेसैं जमका फंद कैसे टूटैगा येक
पुरुष पराई अस्त्री लंपटथो ताको आयो रूमो वो पुरुष
परस्त्री भोगणे लाग्यो तासमय येक प्रतिपक्षी सत्रु आयो आयक
रिके ताकै तरवारकी दोन्ही तासे उसकी बिचारी कोहान कटगयो ता·
को थिषरयो लोही अर उसी समय उसको वीर्य रवलित होगयो
छे जाग्यो तब वीर्यसैतो अधोवस्त्र लिप्त प्रत्यक्ष देख्यो अर रुधिरसें
वस्त्रादिक लिप्त नही देख्या येक बालक झूठा मट्टीका बलदसैं प्रीति-
करता है अर येक छसीकर्माको बालक साचा बलदसैं प्रीत कर्ता है प
रंतु झूठा साचासे प्रीत करणेवालो दोन्यूही दुषी है क्यूंके उसका बल
दाकूं कोई जोतै पकडे अन्यथा करै तब दोन्यूही दुःखी होता है येक १०३
किसकूं कीचमें रत्नजुहारातकी भरी वटलोई मिली तब

कूं बावडीमे धोवणेके लगयो धोता धोतावढलाइ बावडीमे गिरगइ
तब रोणे लाग्यो सफेद लकडीको कोयलो कालो हुवो अग्नीके संगती
करि जिससे अबवो कोयलो किसीही उपायसे सफेद होणे को नही प
रन्तु पीछाकी पीछी अग्नीकी संगती करैतो वो कोयलो सफेद होजावै
येक माटीका कलसमै जहांलग जलहै तहां लग उसका अनेक नामहै
अर कलस फुटजावैतो फेर नाम जलको अर कलसको कहाहै मयुर
नाचताहै श्रेष्ठ परंतु पिछाडी औंधो गांड उघाड करिके नाचताहै गुरुवि
ना ऐसेही क्रिया व्यर्थहै कच्चा आटासेवी पेट भरजाताहै परंतु उसी आ
टाकी रोटी बणाय करिके पकावै अर षायतो स्वाद लागतीहै तसबीर
से तसबीर उतर सकीहै वडका बीजमै अनेक वड अर अनेक वडमे
अनंतानंत बीज येक सन्निपात युक्त पुरुष अपणा घरमै सूताहै तोबी
कहै मै मेराघरमैजाऊ येक सेष सलीकी पागडी अपणा सिरकैऊपरसै

सं·दी· जमीके ऊपर गीर पडी तिसकूं वो सेष सली उठाय कहै येह येक पगडी- दृष्टा·
१०५ हमकूं पाईहै वांसरै वांस घृष्टहोय तब अग्नी उत्पन्न होतीहै सो उस वासकूं भस्म करिकै आपभी उपसम होजाताहै संख श्वेतहै ली पीली लाल मट्टी भक्षण कर्ताहै तोबी संख आप स्वेतको स्वेत रहताहै दोय वजाजकी दुकान सामीलथी तब कोई कारण पाय करिकेउन दोन्यू वजाजके परस्पर राग पडगई तब दोन्यू बजाज परस्पर भाग करणे लाग्या आधा आधा वस्त्र फाडकरिकै तब कोई सम्यक् ज्ञानी कहै तुम ऐसे परस्पर भाग करते हो तुम तुमारे सो रुपयाका वस्त्रका पचास रुपया उपजैगा वडी हाणी होवैगी तब वह दोन्यू हाणी नुकसान जा कारिके मीलही रहे पुन्यूका चंद्रमाके अर अमावास्याका सूर्जके भांतिसैं अंतर दीषताहै
१०४ येक साहुकार अपणा पुत्रकूं परदेसमै भेज्यो केताक दिवस पीछे वेराकी वहू बोलीके मैंतो रंडा होगई तब वो सेठ अप-

णापुत्रके नाव पत्र भेज्यो उसमै ऐसी लिषदीके हे बेटा तेरी वहू तो रंडा हो
गई तब वो सेठको पुत्र पत्र वांच करिके सोक करवा लाग्यो तब कोई पूंछी
तुम क्यौं सोक करते हो तब वो कही हमारी स्त्री रंडा भई तब सुण करिके
बोलै तुम तो प्रत्यक्ष जीवता मोजूद हे अर तेरी स्त्री रंडा केसे भई
ठको पुत्र बोल्यो तुम कही सो तो सत्य हे परंतु मेरा दादाजी की लिषी आई
कूं झूठी कैसी मानूं दोय स्वानुभवज्ञानी परस्पर वार्ता करणे लागे कहो जो
सूर्ज मरजावे तो फेर क्या होवे उत्तर चंद्रमा हे के नही प्रश्न
जावे तो फेर क्या होवे उत्तर चीराग दीपग हे के नही प्रश्न अर ज्यो चीरा
गदीपक मरजावे तो क्या होवे उत्तर शब्द वचन हे के नही प्रश्न अर ज्यो
शब्द वचन वी मरजावे तो क्या होवे उत्तर अटकल हे के नाहीं प्रश्न ठी
क हे मे समज लीयो इति दृष्टांत संपूर्ण स्पेद वस्त्र के ऊपर रंग श्रेष्ट लाग
हे कच्ची हांडी मे जल मूर्ष होय सो भरे दीपग मे तेल रुई की बत्ती श्रेष्ठ होय

तोप्रकास कर्ता सीघ्रजोति प्रकास मान करदेताहै येक येकांत वादी अ·
पणे शिष्यकूं बोल्योके सर्व ब्रह्मही ब्रह्महै तवतो शिष्य श्रवण करिके बा
जारमै गयोथो तहां हस्तीको मावथ हस्तीकूं लेकरिके आवैथो अर ह·
स्ती आरूढहुवो थको पुकार करतोथोके मेरा हस्ती दिवानु है अलग हो
जावो तब वा येकांत वादीको शिष्य अपणे दिलमै विचारीके याहस्ती·
ब्रह्महै अर मैबी ब्रह्महूं तब स्याद्वादि नुतकूं कहीं वो मावतक्या ब्रह्म न·
हीहै स्यात् क्षीरोदधि समुद्रमै कोई एकजहरकी बिंदु पटक देवै तो क्या·
समुद्र जहरमई होवैगो अर्थात् नहीहोवैगो १ उलटा कलसके
वजैतो जल पटको जल कलसके भीतरजाणैको नाही १ एकजोजन·
ओरस चोरस मकाननमै येक सरस्यूं पडीहै सो जाणै किदरकूं पडी है·
१ येक दरपणमै मयूरकी प्रतिछाया दीषतीहै रंगबीरंगकी सो निश्चय
मयूरसै भिन्न नही अर दर्पण दर्पणसै भिन्न नही १ येकधूली धोणेवाले

नारयाकूं धूलीमे पंचरत्न पंचलक्ष रुपीयाका मिलगीया तव कोई उसना
रयाकूं कह्या तूं अबतो धूलो धोवणा छोडदे तब वो नारयो बोल्यो छोडूं
मो कोंतो इस धूलीमे रतन मिल्याहै दीपकके उजालामे मन वांछित रत्न
मिलगयो अब दीपक राषातो क्या अर छोडोतो क्या १ अचेतन मूर्तिके
ऊपर पक्षी आय बैठतेहै डरतानहीहै १ किसी अस्त्रीको भरतार परदे
समे जायकरि मरगये अब वास्त्री उसीकी मूर्ति बणाय भर्तारवत आनं
दलीयो चाहैसो मिथ्याहै अथवा सोही अस्त्री परदेसमे मरयो भरतार
को नाममात्र स्मरण करैगी तोक्या उस अस्त्रीकूं प्रतक्ष भर्तारवत् आ
नंद होवैगा अर्थात् नही होवैगा १ सर्वनामको कहणे वालो ताको नाम
क्या १ सर्वको साक्षीदार ताको रंगरूप क्या १ येक मूर्ष जिसझाडका
डाहालाके ऊपर बैठ्याहै उसी डाहालाकूं काटताहै अपणे गिरणेकी तर
फसे उसकूं देष करिके ज्ञानीकूं ज्ञान हुवा १ येक कलस गंगाजल

तो प्रकास कर्ता सीघ्रजोनि प्रकास मान करदेताहै येक येकांत वादी अ:
कूं बोल्योके सर्व ब्रह्मही ब्रह्म है तबतो शिष्य श्रवण करिके
जारमै गयोथो तोहां हस्तीको मावथ हस्ती कूं लेकरिके आवैथो अर ह:
स्ती आरूढहुवो थको पुकार करतोथो के मेरा हस्ती दिवानु है अलग हो
जावो तब वो येकांत वादीको शिष्य अपणे दिलमे विचारीके योहस्ती:
ब्रह्म है अर मैंबी ब्रह्म हूं तब स्याद्वादि नुमकूं कहीं वो मावत क्या
हीहै स्यात् क्षीरोदधि समुद्रमे कोई एक जहरकी बिंदु पटक देवे तो क्या:
समुद्र जहरमई होवेगो अर्थात् नहीं होवेगो १ उलटा कलसके
वजेतो जल पटको जल कलसके भीतर जाणेको नाहीं १ एक जोजन
औरस चौरस मकाननमे येक सरस्यूं पडीहै सो जाणे किदर कूं पडी है:
१ येक दरपणमे मयूरकी प्रतिछाया दीषतीहै रंग वीरंगकी सो निश्चय
मयूरसे भिन्न नही अर दर्पण दर्पणसे भिन्न नहीं १ येक धूली धोणेवाले

नास्याकूं धूलीमै पंचरत्न पंचलक्ष रुपीयाका मिलगीया तब कोई उसना
स्याकूं कह्या तूं अबतो धूलीधोवरण छोडदे तब वो नास्यो बोल्यो छोडूं कैसो
मोकों तो इस धूलीमै रतन मिल्याहै दीपकके उजालामै मन वांछित रत्न
मिलगयो अब दीपक राषातो क्या अर छोडातो क्या १ अचेतन मूर्तिके
ऊपर पक्षी आय बैठतेहै डरता नहीहै १ किसी अस्त्रीको भरतार परदे-
समै जाय करि मरगये अब वा स्त्री उसीकी मूर्ति बणाय भर्तारवत आनं
दलीयो चाहै सो मिथ्याहै अथवा सोही अस्त्री परदेसमै मर्‍या भरतार
को नाममात्र स्मरण करैगी तो क्या उस अस्त्रीकूं प्रतक्ष भर्तारवत् आ
नंद होवैगा अर्थात् नही होवैगा १ सर्वनामको कहरणे वालो ताको नाम
क्या १ सर्वको साक्षीदार ताको रंगरूप क्या १ येक मूर्ष जिसझाडका-
डाहालाके ऊपर बैठ्योहै उसी डाहालाकूं काटतोहै अपणे गिरणेकी तर
फसे उस कूंदेष करिकै ज्ञानीकूं ज्ञान हुवा १ येक कलस गंगाजलको भर्‍यो

है और दूसरो कलस अष्टासे भर्यो है स्यात् वह दोन्यू कलस फूट जावे-
तो कहाजाता है फूट करिके २ चामचीडी बागल और उलूकइनकूं बिल-
कुल सूर्जकी खबर नाहीं येकादिन चामचीडी कूं ऐसी सुणवामें आई-
के सूर्ज उगैगो तब चामचीडी बागलके पास जायकरिके कहीके सूर्ज उ
गैगो तब बागल बोलीके सूर्ज तो कधी उग्यो नहीं भलाचलो आपणे
क उलूक है उनसे पूंछेगा ऐसा बिचार करिके चामचीडी और
ह दोन्यू उलूकके पासगया अर कहीके सूर्ज उगैगो ऐसी हम सुणी है
उलूक बोल्योके येक समयमें स्थान चूक करिके चार प्रहर बैठ्यो रह्योथो-
सोही मेरी पांष गरम होगई सोही स्यात् गरम गरम तातो तातो
तो होगा २ मानस सरोवरकी खबर कूपका मींडकाकूं-
उस मींडकाकूं मानस सरोवरकी साची बी कहे तो बी वो मींडको प्रमा-
णनहीं करता २ दोहा जातलाभकुलरूपतप बलविद्याअधि

कार ॥ येह आठू मद है बुरा मनिपीवो दुष कार ॥ १ ॥ जैसे सूर्ज से अंधा
रो अलग है तैसै येह आठ मद उस परमानमासे अलग है सम्यक् दर्शन
सम्यक् ज्ञान सम्यक् चारित्र येह कहणे मात्र तीन है निश्चय देषिये तो
एकसा ही है जैसे अग्नी उष्णता प्रकास येह कहणेका तीन नाम है निश्च
य देषिये तो येक ही है जिस अवस्था मै मुनि सूता है ता अवस्था मे जग
त जागतो है अर जिस अवस्था मै जगत जागतो है ता अवस्था मे मुनी सू
तो है सूर्ज कूं अंधकार की षबर नहीं अर अंधकार कूं सूर्ज की खबर ना
ही कवित्त लालवस्त्र पहरेसै देह तो न लाल होय॰ सतगुरु कहे भव्य
जीव रौ तो डो तुरत मोह की जेल॰ माटी को काज घट जैसे माटी ताके बाहि
र नाही॰ पूर्णमासी को चंद्रमा अर अमावस्या को सूर्ज ताके अंतर नहीं
॥ दक्षिणायन अर उत्तरायण की अर कृष्ण पक्ष शुक्ल पक्ष की अर ४
च्यार प्रहर रात्री की पक्ष छोड करिकै देषणा पुन्यू अमावस्या का सूर्ज चंद्र

के क्या अंतरहै दूजको चंद्रमा उग्योहै सो पूर्णगोल होवैगो फिकरन
ही करणा बालकका हातकी मुष्टीमें अमोलष रतनहै अरवो बालकउ
स रतनकूं श्रेष्ठजाण करि छोडताबी नहीहै मूठी दृढ बांधकरि राषीहै
परंतुवो बालक उस रतनकूं बालभावसें श्रेष्ठजाननाहै सम्यक्
वसें नही जाणताहै ज्ञानवर्णादि द्रव्यकर्म अर रागादिक भावकर्म
र सरीरादिक नोकर्म तासे वो परमातमा अलगहै जैसे सूर्जसें अं
रो अलगहै तैसे उस परमातमासें भावकर्म द्रव्यकर्म नोकर्म आदि स
र्वकर्म अलगहै जो अनंतज्ञानादिकरूप निजभाव ताकूं कबही
अर काम क्रोधादिक रूप परभाव तिनकूं कदाचित् कदेहू नग्रहै जैसे
सूर्ज आपका गुण प्रकास किरणादिक नछोडे अर परज्यो अंधकारा
दिक ताकूं कदाचित् कदेही नग्रहण करै तैसेही वो परमात्मा परकूंग्र
हण नकरै अर आपकूं आपका ज्ञानादिगुणकूं छोडै नही वो परमा

१०७

त्मा परम पवित्रहै मै तूं येह वह सोहं हूं तथा हूं हू इत्यादि शब्दाके वच
नाके आदि अंत मध्यहै सो परमात्माहै वो शुधहै अर येह मै तूं येह वह
सोहं हूं हू है सो असुधहै जैसे सूर्जके सामने सनमुष अंधकार नही तै
से इसकेवल ज्ञानरूपी परमात्माके सन्मुष येह मै तूं येह वह सोहं हूं हूं
हूं येह है सो नही जिस काल सूर्जका अर अंधाराका मेल होवेगा उसी
काल परमात्माका अरइन मै तूं येह वह सोहं हुं हुं हुं का मेल होवेगा
परमात्मा केवल ज्ञानीहै अर येह अज्ञानीहै ज्ञान अज्ञानका मेल हू
वाबी नही अर होवैगाबीनही अरहैबीनही ऐसो केवल ज्ञानीमे हूंठी
कहै जैसो अन षावै ताकी तैसीही अडकार आवै सूर्ज अंधकारकीइ
च्छावी वृथाही करतोहै अर सूर्ज सूर्जकी बी इच्छा वृथाही करतोहै
हजारू मण गहू चीणा षरच होजाताहै अर फेर हजारूलाषू मण पैदा
होजाताहै नबीजको नास नफलको नास येकजातके लाल रतनाकोदे

र दूरसै येकसो पुंज अग्नीकोसो दीषतोहै येक परंतु वहरतन राशिका
रतन न्यारान्याराहै वहां तही अमृत कोसमुद्र भर्‍योहै सर्वसमुद्रकोज
ल कीसीसे पीयो नही जावे आपणी आपणी तृषा प्रमाण जलपीय-
कारिसंतुष्टरहो॥ ॥चौपाई॥ ॥धर्मदासक्षुल्लक मोनाम॥र
च्याज्ञान अनुभवकोधाम॥ मनमानीसोकहीबषाण॥ पूरणकारिसम
जोजिरुजाण॥१॥ ॥इतिश्री क्षुल्लकब्रह्मचारीधर्मदासरचित
दृष्टांतसंग्रहसंपूर्ण॥ ॥श्रीरस्तु॥ ॥श्रीअरिहंताणंजयंति॥

अथदृष्टांतचित्रमा०



यो पुरस नीमका झाडकी बाथ भरी करिकै षडो है अर पुकारतो है के मेरे कूं छुडावो·



येक दोय तीन चार पांच छह सात आठ नवग्रे आपणाय
रसें दस आयेथे अवनवहीरह्गये गणतीकरणेवाली
पुरस आप रूणि णतोनाहीं
पोपुरस गिण
ती करतो है
ऐसे आपणी मूरवंतासै नदी है जिसका किनारापे दस पुरुष वी भ्रममे भरमरहा है.



बन्नर कुंभमे मूठीबाधि सो छोडतानाहीं जाणताहै के कोई मोकूं पकड लिया॰

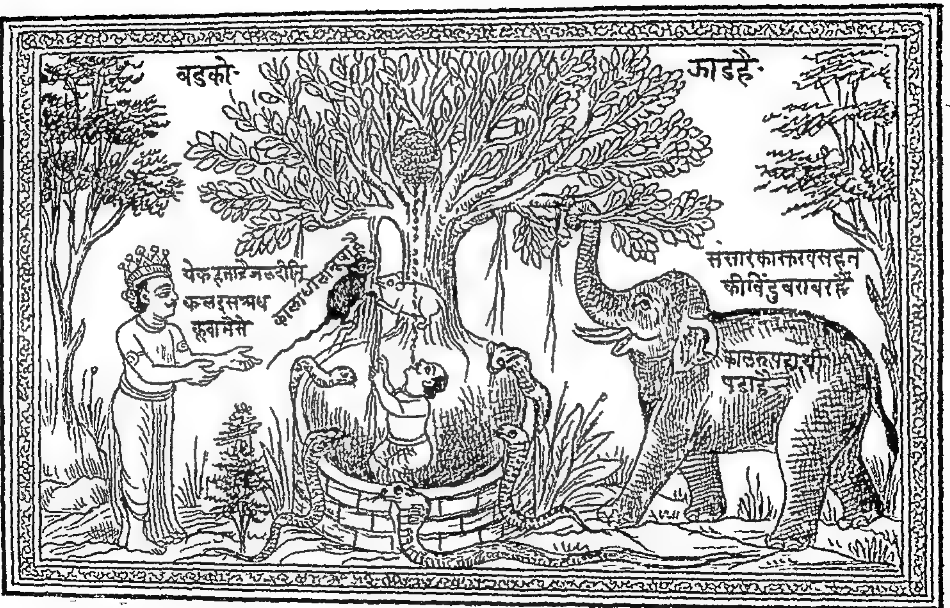

गर्भवतीस्त्रीकीपुत्री आपणी मातासें बूजतीहै हे मात तेरापेट मोटाकैसें है॰ अब वास्त्रीपुत्रीकूं जथा
वतकह देवेतोबी निश्चय उस्कूं होवेनाही। समयपायनिश्चयहोवेगी अथवा नाहीबोहोवे॰



वन्नर कुंभमे मूठीबांधिसो छोडतानाहींजाणताहै के कोई मोकूं पकड लिया:



गर्भवतीस्त्रीकीपुत्रीअपणीमातासेबूजतीहैहेमाततेरोपेटमोटोकैसेहै अबवास्त्रीपुत्रीकूंजथा
वत्कहदेवैतोबीनिश्चयउस्कूंहोवैनाहीसमयपायनिश्चयहोवैगीअथवानाहीवोहोवै॰


वडको
झाडहै




आमपाणेकापरिणामछउऊहीकाहै परन्तुये छओ मूलसे झाडकूकाटता है येकमोटाडालाकाटताहै येकछोयडाडाला काटताहै ये ह कच्चापक्का सर्वन्याम्रतोडताहै येकपकातोडतो है येकजमीकऊपर पडेहुयेहो उठायपातोहै उत्तरो त्तरहै



इसके कंठमें तो मोतीकी मालाहै बहुरि हेराकनाहै भंडारमें



यो पुरुष वृहत मंदिर में अवाज ऐसी करता है के तूंही उसकी प्रती
अवाज ऐसी आती है के तूंही इह्या समजणा चाहिये



स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्‌ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु को यथार्थ स्वरूपानुभव समज करिके-
षट् जन्मांधवत येहै जैन, शिव, विष्णु, बौद्धादिक षट्‌मत वाले परस्पर विवाद
विरोध करते हैं.

नमदिगंबरपरमहंस

कामीपुरुष

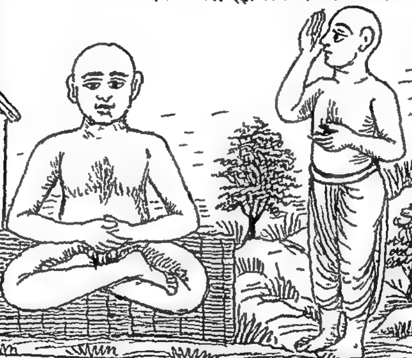
मृतक वेश्याहै

स्वान

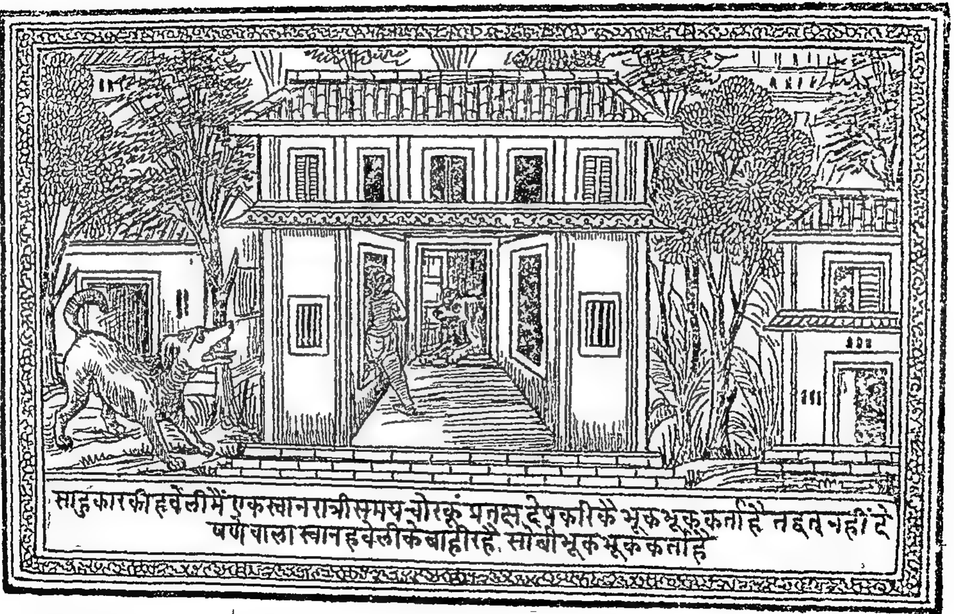
कामी विचार कर्ता है के याजीवती होती तो मै इसकूं भोगलेतो· परमहंस विचारतो है के जप तप शील बीना य
शाहीमरगई स्वान विचार करतो है के येह देहासे अलग होजावे तो मै इस वेश्याका मृतक कलेवर खाऊ



सिंघ आपकी छाया कूपमें देषकरिके आपही आपणा सरूप भूलिकरिके
आपही कूपमें पड के दुषअनुभव भोग मरताहै



कबिरामोक्षकीसैनराषीजैनकोप्रतिमामे॰



साहुकारकी हवेलीमें एकस्वान रात्रीसमय चोरकूं प्रतक्ष देषकरीके भूकभूक कर्ता हे तहत नहीं दे
पणे वाला स्वान हवेलीके बाहीरहे. सोबी भूकभूक कर्ता हे



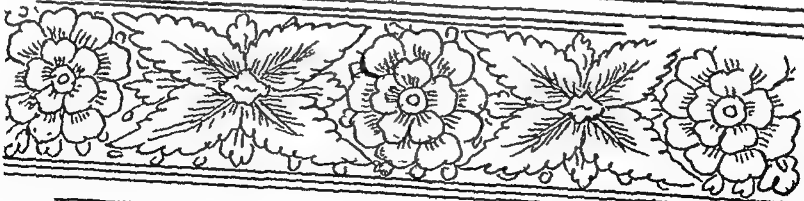
येक पुरुष अमावास्याकी मध्यरात्री का अंधारामे चंद्रमाकू
हेरताहे ढूंढताहे स्यात् चंद्रमाकी चानणी मे ढूंढतो
चंद्रसरू होवोजावेगा॰

इतिदृष्टांतचित्र समाप्त ॥

ॐ ततसत् परब्रह्मपरमात्मनेनमः॥ ॥ अथआकिंचनभावना लिख्यते॥ ॥दोहा॥ ॥ मेरामुजसैंअलगनही सोपरमात्मादेव॥ ताकूंवंदूभावसे निसदिनकरतासेव॥ १॥ मेरामुजसैंअलगनहि सोस्वरूपहैमोय॥ धर्मदासक्षुल्लककहे अंतरबाहिरजोय॥ २ ज्योंअपणानिजरूपहै जाननदेषनज्ञान॥ इसबिनओरअनेकहै सोमैनहीसुजाण॥ ३॥ अन्यद्रव्यमेरानही मैंमेराहीसार॥ धर्मदासक्षुल्लककहे सोअनुभवसिरदार॥ ४॥ ॥वार्तिक॥ ॥जो मेरो ज्ञानदर्शनमयस्वरूपाविना अन्यकिंचित् मात्रबी हमारानहीमैं कोई ओर द्रव्यको नही मेरा कोई अन्य द्रव्यनही ज्यो मेरेसें अलग है उससे मैंबी अलगहूं ऐसा अनुभवकूं आकिंचन कहतेहे सोही अनुभव मोकूंहे मैं आत्माहूं सोही मेरेकूं मे समजताहूं हो आत्मन् अपणा आत्माकूं देहसैं अलग ज्ञानमई ओर द्रव्यकी ओपमारहित-

अर स्पर्श रस गंध वर्ण रहित जाणु देह है सो मैं नही अर देह के भीतर
बाहिर आकासादिक है सो भी मैं नही देह तो अचेतन जड है
स मल मूत्र सें बणी है वा तन मन सें बणी है मैं इस देह सें अवल म-
थ मही सें ऐसो अलग हूं जैसें अंधारा सें सूर्ज अलग है तैसें अर यो
ब्राह्मणपणू क्षत्री वैश्य शूद्रादिक जात कूल देह का है अर स्त्री
पुरुष नपूंसकादि लिंग देही का है मेरा नही मोकूं देह ही जाणता है
मानता है सो बहिर आत्मा मिथ्यादृष्टी है अर येह गोर पणो सांवला
पणो राजापणो रंकपणो स्वामीपणो सेवकपणो पंडितपणो मूर्ख
पणो गुरुपणो चेलापणो इत्यादि रचना देह ही की है मेरी नही मैं त
ज्ञाता हूं नाम और जन्म मरणादिक देह का धर्म है जेता नाम नं
तीन काल वा लोकालोक मैं है सो मेरा नही अर तीन लोक तीन काल
वा लोकालोक है सो मेरे सें अलग ऐसा है जैसें सूर्ज सें अंधारो अल

गहै तैसे औरमैं जैनमतवाले वैष्णव मतवाले शिव मत वाले आदी- कोई मतवालेको चेलो गुरु नहीहूं पर कर्ता कर्म क्रिया संपादान अ- पादान अधिकरणसे अलगहूं ॥ ॥दोहा॥ ॥येह वना भावेस्करत संभाल॥ धर्मदास साचौलिषै मुक्त होय ततकाल॥ ॥१॥ अपणो आयो देषकै होय आपको आप॥ होयनिचंताति स्योरहै किसकाकरणाजाप॥२॥ ॥इति आकिंचन भावना समाप्त॥ ॥



# अथआकिंचनभावनाप्रारंभः

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ ॥ अथ भेदज्ञान लिख्यते ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
प्रथमहि भेदज्ञान जो भावै ॥ सो ही शिवसुंदरि पद पावै ॥ तातै भेदज्ञा
ऊ ॥ परमातम पद निश्चय पाऊ ॥ १ ॥ कहत धर्मदास अब बो
लै ॥ देषवचन कामैं नित षोलै ॥ वांचो पढो भाव मन ल्याई ॥ तातै मि
लै मोक्ष ठकुराई ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भेदज्ञान हो ज्ञान है बाकी
बुरो अज्ञान ॥ धर्मदास साचो लिषै भेमराज तुम मान ॥ ३ ॥ अर्थात्
निश्चय करि एक द्रव्यका दूसरा द्रव्य कछु संबंधि नाही है जाते द्रव्य है
सो भिन्न प्रदेस रूप है ताते एक सताकी अप्रासी है द्रव्य द्रव्य की सता
न्यारी न्यारी है बहुरि सतायेक नहोते अन्य द्रव्यके अन्य द्रव्य करि आ
धार आधेय संबंध भी नाही है ताते द्रव्यके अपने स्वरूपही विषे प्रति
ष्ठारूप आधार आधेय संबंध तिष्ठै है तिस कारण करि ज्ञान आधेय
सो तो जाण पणारूप अपणा स्वरूप आधारता विषे प्रतिष्ठित है जा

ते जानणे पणा है सो ज्ञानतें अभिन्न भाव है भिन्न प्रदेसरूप नाहीं
है तातें जानन क्रियारूप ज्ञान है सो ज्ञानही विषै है बहुरि क्रोधादिक
है ते क्रोधरूप क्रिया क्रोधपणा स्वरूप तिनहीं विषै प्रतिष्ठित है जातैं
क्रोधपणारूप क्रिया क्रोधादिकतें अपृथक् भूत है अभिन्न प्रदेश
है तातें क्रोधरूप क्रिया क्रोधादि विषैही होय है बहुरि क्रोधादिकवि
षै अथवा कर्मनो कर्म विषै ज्ञान नाहीं है जातैं ज्ञानके अर क्रोधादि
कके अर कर्मनो कर्मके परस्पर स्वरूपका अत्यंत विपरीत पणा है ति
नका स्वरूप एक होय नाहीं तातें परमार्थरूप आधार आधेय संबं
धका शून्य पणा है बहुरि जैसे ज्ञानका जानन क्रिया रूप जाणपणा
रूप है तैसें क्रोधरूप क्रियापणा स्वरूप नाहीं है बहुरि जैसे क्रोधा
दिकका क्रोधपणा आदिक क्रियापणा स्वरूप है तैसें जानन क्रि
या रूप स्वरूप नाहीं है कोईही प्रकार करि ज्ञानकूं क्रोधादि क्रिया

रूप परिणाम स्वरूप स्याप्या नजायहै तातै जानन क्रियाके अर क्रो धरूप क्रियाके स्वभावका भेद करि प्रगट प्रतिभासमान पणा है ब- हुरि स्वभावके भेदतैहि वस्तुका भेदहै यह नियमहै तातै ज्ञानके- अर अज्ञानस्वरूप क्रोधादिकके आधार आधेय भावनाहीहै इ- हां दृष्टांत करि विशेष कहै है जैसै आकास अरु द्रव्य येकहीहै ताही आपणी बुद्धि विषै स्थापि अर अवार आधेय भाव कल्पिये तब आ काश शिवाय अन्य द्रव्य तिनकातो अधिकार रूप आरोपणका नि रोध. भया याहीतै बुद्धिके भिन्न आधारकी अपेक्षा तो नहीरही अ रजब भिन्न आधारकी अपेक्षा नाही रही तब बुद्धिमे यही ठहरी के जो आकासहै सो येकहीहै सो येक आकासही विषै प्रतिष्ठित- है आकाशका आधार अन्यद्रव्य नाही आप आपहीके आधारहै ऐसै भावना करणेवाले के अन्यका अन्यके आधार आधेय भावना

ही प्रति भासै है ऐसैही जब एकही ज्ञानकूं आपनी बुद्धि विषैस्या
आधार आधेय भाव करिये तब अवशेष अन्य द्रव्यनिका अ
धिरोपकरणेका निरोध भया यातै बुद्धिके भिन्न आधारकी अपे
क्षा नाही रहैहै अर भिन्न आधारकी अपेक्षाही बुद्धिमे नरही त-
ब एकज्ञानही ज्ञानविषे प्रतिष्ठित ठहर्‌या ऐसे भावना करणे वाले
के अन्यका अन्यके आधार आधेय भावनाही प्रति भासहै तातै ज्ञा
नहीहै सोतो ज्ञानही विषैहै अर क्रोधादिकहीहै ते क्रोधादिक
हीहै ऐसै ज्ञानके अर क्रोधादिकके अर कर्मनो कर्मके
है सो भले प्रकार सिद्ध भया ॥ ॥भावार्थ॥ ॥उपयोग है सो तो
चेतनाका परिणमन ज्ञानस्वरूपहै अर क्रोधादिक भावकर्म ज्ञाना
वर्ण आदि द्रव कर्म सरीर आदिकनो कर्म येसर्वही पुद्गल द्रव्य
परिणामहै ते जडहै इनके अर ज्ञानके प्रदेश भेदहै तातै अत्यंत-

भेदहै तातैं उपयोगविषैतो क्रोधादिक तथा कर्मनो कर्म नाहीहै बहु-
रि क्रोधादिक कर्मनो कर्मविषै उपयोग नाहीहै ऐसैं इनके परमार्थ
रूप आधार आधेयभाव नाहीहै अपना अपना आधार आधेयभा
व आपआपविषैहै ऐसैं इनके परमार्थसे परस्पर अत्यंत भेद
सै भेदजाणै सोही भेद विज्ञानहै सो भलेप्रकार सिद्ध होयहै ॥ ॥
दोहा॥ ॥ परमातमअरजगतके बडोभेदरूणसार॥ १
ओरुलिषे वांचकरोनिरधार॥ १॥ जैसेसूरजतमविषे नहीनहै
णबीर॥ तैसैहीतमकेविषै सूर्जनहीरधीर॥ २॥ प्रकास सूर्ययकहै
जडचेतननहियेक॥ धर्मदाससाचीलिषे मनमैधारिविवेक॥ ३॥ स्प
र्श ८ रस ५ बर्ण २ गंध २ आत्मानाही जानै येह स्पर्शादिक पुद्गल
अचेतन जडहै वास्तै आत्माके अर अचेतन पुद्गलके भेदहै ओर
बंध सूक्ष्मस्थूल संस्थान भेद तम छाया आतप उद्योत येह

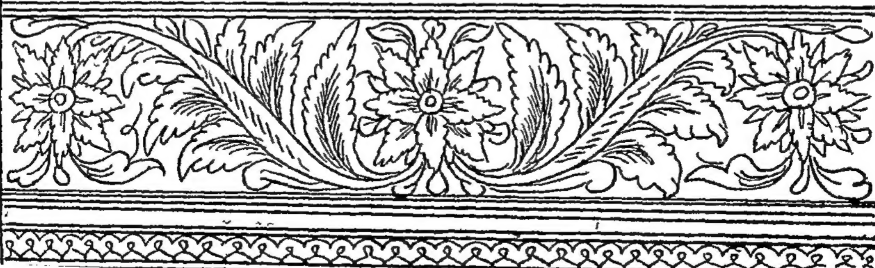
नाहीजाते येहशब्द बंधादिक पुद्गलकी पर्याय है वास्ते आत्माके
अर शब्द बंधादिकके भेदहै तन मन धन वचन येह आत्मानाही तन
ता मनता बचनता जडताजडसे मेल॥ लघुता गुरुता गमनता येहअ
जीवकाषेल॥ ॥अर्थात्॥ ॥ आत्मा अर अजीव नही वास्ते आत्मा
के अर इन तन मनादिकके भेदहै भावार्थ जैसे सूर्जके प्रकासके अ
र अमावस्याकी मध्यरात्रीका अंधाराके अत्यंत भेदहै तैसेही आत्मा
अर अनात्माका भेदहै तन मन धन वचन कुछ ओरहै अर आत्मा कुछ
ओरहै मन बुद्धि चित्त अहंकार अंतःकरण कुछ ओरहै अर आत्मा कु
छ ओरहै तूं मैंयेह वह हूंहूं सोहं येह कुछ ओर है अर आत्मा कुछ
रहै जोग जुगत जगत लोक अलोक कुछ ओरहै अर आत्मा कुछ ओर
है बंध मोक्ष पाप पुन्य कुछ ओरहै अर आत्मा कुछ ओरहै जैन बैष्नु बौ
ध नैय्यायिक मिमांसादिक बेदांती कुछ ओरहै अर आत्माकुछ ओर-

है तेरा पंथ मेरा पंथ उसका पंथ इसका पंथ बीस पंथ गुमान पंथ नानक
पंथ दादू पंथ कबीर पंथ इत्यादि पंथ येह सर्व येक प्रथ्वीके उपर है सो
पृथ्वी कुछ ओर है अर आत्मा कुछ ओर है जैन मत वाले वैस्नु मत वा-
ले शिव मतवाले वेदांत मत वाले तेरा पंथ मतवाले बीस पंथ मत वाले
गुमान पंथ मत वाले येह सर्व मत वाले जिस मदकूं पीकर मत वाले भ
ये है सो मद कुछ ओर है अर आत्मा कुछ ओर है ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
भेदज्ञानसै भ्रमगयो नही रही कुछ आस ॥ धर्मदास क्षुल्लक लिषे
अबतोड मोहकी पास ॥१॥ जैसे सूर्यके प्रकाशमे दीपकको प्रकास प्र
सिद्ध है तैसे स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञान भयि स्वभाव सूर्य का प्रकाशमे येह
सम्यक् ज्ञान दीपका नाम की पुस्तग प्रसिद्ध भले भावसे शूएं प्रसूत
हो चुकी है १ जैसे अंध भवनमे रतन गिर्‍यो है सो रतन बांछक पुरुष
दीपक हस्तमे ले करिके तिस अंध भवनमे रतनार्थ जावे वहुरि रतन

हीकूं खोजे तो ता पुरुष कूं निश्चयही रतन लाभ होवै तैसेही येह
भरमांधकार मयि भवन जगत संसार है तामे तासै अनन्मयि रतन-
त्रय मयि अमोलख रतन गिरयोहै ताकूं कोहू धन्य पुरुष ताकोइच्छ
क पुरुष इस सम्यक्ज्ञान दीपका नामकी पुस्तक कूं ग्रहण करिके
इस भ्रमांधकार नाम संसार भवनमे तिस स्वभाव सम्यक्ज्ञान मा
अर रतनत्रयमयि रतनकूं खोजैगो ताकूं निश्चय आपका आपमे·
आपमयि स्वभाव सम्यक्ज्ञानानुभवकी परमावगाढता अचलहो वै·
गी २ कोहू इस सम्यक्ज्ञान दीपका नामकी पुस्तगसे बहुरि
सुंदर अक्षर शब्द पत्र चित्रादिकसे आपका आपमे आपमयि स्वभा·
व सम्यक्ज्ञानहै ताकूं सूर्य प्रकाशवत् येक तन्मयि समजैगो मानैगो·
कहैगो ताकूंतो इस सम्यक्ज्ञान दीपका नामकी पुस्तग पढणे बान्चणे
से स्वभाव सम्यक्ज्ञानानुभवकी परमावगाढताकी अचलता नही

वैगी।१ हां जैसै द्वारमै होकरिकै किसी कूं सूर्य दर्शनका लाभ होताहै
तैसैही किसी मुमुक्षु कूं इस सम्यक् ज्ञान दीपका नामकी पुस्तक के द्वा
निश्चय स्वस्वभाव स्वसम्यक् ज्ञान मयि सूर्यका दर्शण लाभ होवैगा
१ येह सम्यक ज्ञान दीपिका नामकी पुस्तक हम वणाईहै इसमे मू-
ल हेतु मेरा येह हैके स्वयं ज्ञानमयि जीव जिस स्वभावसे तन्मायि हैउ
सी स्वभावकी स्वभावना जीवसे तन्मयि अचल होऊ येही हेतु अंतः
करणमै धारण करिकै येह पुस्तक वणाईहै ५०० पांचसे पुस्तकछा
पके द्वारा प्रसिद्ध होणेकी सहायताके अर्थ रुपिया १०० येकसौ
तो जिल्हा अलाहाबाद मुकाम आरा ठिकाणो मरवन लालजीकी कोठी
मे वाबू बिमल दासजी की विधवा हमारी चेली द्रोपती देवीने दिया
है अर विशेष खरचकी सहायताके अर्थ जिस जिसकूं मेरा वचनोप
देस द्वारा स्वसम्यक् ज्ञानानुभव होणे जोग होजुके ते स्वभाव सम्यक्

त्तानानुभवमे तन्मयि सदाकाल चिरंजीवरहो ॥ ॥ श्लोक॥ ॥
श्रीसिद्धसेनमुनिपादपयोजभक्त्या देवेंद्रकीर्तिगुरुवाक्यसुधारसे
न॥ जानामनिर्विबुधमंडलमंडनेच्छोः श्रीधर्मदासमहतो
श्रद्धा ॥१॥ ॥ इतिश्रीक्षुल्लकब्रह्मचारी धर्मदासरचित सम्यक्
त्तानदीपिकासंपूर्णम् ॥ ॥ श्रीअर्हंताणंनमः ॥ ॥ ॥



## अथब्रह्मरूपीसंवत्सर

अयन २ ऋतु ६ मास १२ पक्ष २४

छप्पै॥ ॥ दोयनयनषट्कर्णभुजारविसंख्याजाणूं॥ पांषातत्वप्रमाणस्याम

वार ७ तिथि १५ नक्षत्र २८ योग २८

अरुश्वेतवषाणूं॥ सातसीस दशपंचदशनदोपंक्तीसोहै॥ नखशिखपंचकईशाक

सर्व वर्षकादिन ३६०

करण ११

रणशिवसंख्यादोहै॥ पंषपंषप्रतिपंचदशअंबरषट्अनलाचरण॥ श्रीधर ताचो

देखियेब्रह्मरूपअशरणशरण॥२॥

कुंडलियो॥ ॥ जा कीनिर्मलबुद्धिहै ताकूंसबअनुकूल॥ भूतभविष्यविचारि

येवर्तमानकोमूल॥ वर्तमानकोमूलभूलमेंकबहुनभूलै॥ पढसबशास्त्रपुराणग्रंथा

लीभ्रममेंझूलै॥ कहनेवछभरामब्रह्महैसाचोसाखी॥ विद्यासूंसबहोनअगमबुधनिर्मलजाकी २

यहपुस्तक पंडित श्रीधर शिवलालजीके ज्ञानसागर छापारवानामे कल्लुक ब्रह्मचारीधर्मदास

जीने छपाया· मुंबई· संवत १९४६, शके १८११ मितीमाघशुक्ल १५ भोमवार·

इति सम्यक्ज्ञानदीपिका समाप्त.